जैन सिद्धान्त प्रवेश रत्नमाला
(प्रथम भाग)

प्रस्तावना

सन् १९६९ श्रावण मास में प्रथम बार, पं० कैलाश चन्द्र जी बुलन्दशहर वालों की शुभ प्रेरणा से हमको अध्यात्म सत् पुरुष श्री कांजी स्वामी के दर्शन हुए।

जगत के जीव दुःख से छुटने के लिए और सुख प्राप्त करने के लिये सतत् प्रयत्नशील हैं। परन्तु मिथ्यात्व के कारण जगत के जीवो के समस्त उपाय मिथ्या है। सुखी होने का उपाय एक मात्र अपने शुद्ध स्वरूप की पहिचान उसका नाम सम्यग्-दर्शन है। ऐसे सम्यग्दर्शन का उपदेश ही श्री कांजी स्वामीके प्रवचनों का सार है। हमें लगता है भव्य जीवों के लिए इस युग में श्री काजी स्वामी के उपकार करोड़ों जबानों से कहे नही जा सकते हैं।

सोनगढ़ में श्री खेमचन्द भाई तथा श्री राम जी भाई से जो कुछ हमने सीखा पढ़ा है उसके अनुसार श्री कैलाश चन्द्र जी द्वारा गुन्थित प्रश्नोत्तर का हमने बारम्बार मनन किया तो हमें ऐसा लगा कि हमारे जैसे तुच्छ बुद्धि जीवों की बहुलता है।अपना हित करने में निमित्त रूप से प्रश्नोत्तर के रूप में जैन सिद्धान्त प्रवेश रत्नमाला प्रथम भाग बहुत ही उपयोगी ग्रन्थ होगा। हमने पंडित कैलाश चन्द्र जी से इस ग्रन्थ को छपा देने की इच्छा व्यक्त की। उनकी अनुमति पाकर, मुमुक्षओं को सद्मार्ग पर चल कर अपना आत्महित करने का बल मिले ऐसी भावना से यह पुस्तक आपके हाथ में है।

इस रत्नमाला में मुमुक्षुओं के अध्ययन के लिए अत्यन्त उपयोगी ऐसे द्रव्य, गुण, पर्याय, छह सामान्य गुण और चार अभाव लिए गये हैं। इसके अभ्यास से अवश्य ही पर मे कर्ता–भोक्ता को खोटी बुद्धि का अभाव होकर जीवों को धर्म की प्राप्ति का अवकाश है। ऐसी भावना से ओतप्रोत होकर हम आत्मार्थियों से निवेदन करते हैं कि इस पुस्तक का अभ्यास कर अपने हितमार्ग पर आरूढ़ होवें।

विनीत
मुमुक्षुमन्डल
श्री दिगम्बर जैन मन्दिर
सरनीमल हाऊस, देहरादून।

कृपया शुद्धि ठीक करके पढ़े

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१	१	पहिला	पहला
३	३	?	और सम्यग्दर्शनादि किसे कहते हैं ?
३	६	।	इन सब में एकत्व का ज्ञान अगृहीत मिथ्याज्ञान है ।
३	२१	।	- [ऐसा मानकर अपने आत्मा का आश्रय ले तो स्वय की पहिचान हो ।
७	२१	कू	×
१४	१८	सामन्य	सामान्य
१६	१६	३४	२४
१८	७	कुज	कुछ
२०	१७	ठहरनें	अवगाहन
२२	११	कार्मण	कार्माण
२८	५	कार्मण	कार्माण
३०	सबसे उपर		प्र० ५३ अज्ञानी हल्का भारी को जानकर रागद्वेष कैसे करता है ?
३०	१	प्र० ५३	उत्तर
३३	२३	कौन	कौन है ?
३५	३	धम	धर्म
३५	४	धर्म अधर्म	धर्म आकाश
३७	३	अधर्म	धर्म
३७	६	द्रय	द्रव्य
४२	१	अलाकाश	अलोकाकाश
४४	११	लोककाश	लोकाकाश
५१	३	अत्तर	अन्तर
५४	३	अनंतनंत	अनन्तानन्त
५४	१३	वृष्टि	वृद्धि
५४	१८	एकमत्र	एकमात्र
५५	१	उपशम	औपशमिक

कृपया शुद्धि ठीक करके पढ़े

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
५५	१७	है ?	और कैसा करने से श्रावकपना आता है ?
५६	१७	द्रव्यी	द्रव्य
६०	१३	४६	४८
६७	११	सम्पूण	सम्पूर्ण
८१	२२	समनजाति	समानजातीय
१०१	७	मिलने	मिटाने
१०४	१०	नर्तमान	वर्तमान
११२	१६	से	×
११८	६	द्रव्यत्व	द्रव्यत्वगुण
१२०	१०	? रहती -	इसका
१२०	१०	कारण ।	कारण ?
१३०	१	द्यदमस्थ	छदमस्थ
१३२	२२	ज्ञन	ज्ञान
१४३	१८	निजनन्द	निजानन्द
१४४	१	स	से
१५२	२१	बपमाणु	परमाणु
१५५	११	अईसकीम	आईसक्रीम
१७१	४	सम्य	सम्यक्
१७१	१२	सम्यज्ञान	सम्यग्ज्ञान
१७१	१६	कार्मण	औदारिक
१७४	१५	आदरिक	औदारिक
१९२	१	समन	समान

जन सिद्धान्त प्रवेश रत्नमाला प्रथम भाग

मुख्य विषय

॥ श्री वीतरागाय नमः ॥

जैन सिद्धांत प्रवेश रत्नमाला

णमो अरहंताणं, णमो सिद्धाणं,
णमो आइरियाणं, णमो उवज्झायाणं,
णमो लोए सव्व साहूणं ॥

आत्मा ज्ञानं स्वयं ज्ञानं, ज्ञानादन्यत्करोति किम् ।
परभावस्य कर्तात्मा, मोहोऽयं व्यवहारिणाम् ॥

गुरु गोविन्द दोनों खड़े, काके लागू पांय ।
बलिहारी गुरु कहान की, भगवन दियो बताय ॥

पाठ पहिला

प्र० १. तुम कौन हो ?

उ० मैं ज्ञान दर्शन चारित्र आदि अनन्त गुणों का अभेद पिण्ड आत्मा हूँ

प्र० २. तुम कौन नहीं हो ?

उ० अत्यन्त भिन्न पदार्थ, आंख, नाक, शरीर, मन, वाणी, आठ कर्म शुभाशुभ विकार मैं नहीं हूं ।

प्र० ३. तुम कब से हो ?

उ० मैं तो जन्म मरण रहित अनादि अनन्त जीव हूं ।

प्र० ४. जन्म मरण तो होता है, क्या यह बात असत्य है ?

उ० शरीर का संयोग वियोग होता है, मेरा नही ।

प्र० ५. तुम दुःखी क्यों हो ?

उ० ज्ञान दर्शनादि अभेद स्वयं को भूलकर, मोहरूपी शराब पीने के कारण अनादिकाल से एक एक समय करके, अपनी मूर्खता से दुःखी हो रहा हूं ।

प्र० ६. अपनी मूर्खता क्या है ?

उ० मिथ्यात्व ।

प्र० ७. मिथ्यात्व क्या है ?

उ० मिथ्यात्व जुआ, मांस आदि सप्त व्यसनों से भी बड़ा पाप है ।

प्र० ८. मिथ्यात्व सप्त व्यसनों से भी बड़ा पाप है यह कहां आया है ?

उ० मोक्षमार्ग प्रकाशक पृष्ठ १९१ में लिखा है "जिन धर्म में तो यह आम्नाय है कि पहले बड़ा पाप छुड़ाकर फिर छोटा पाप छुड़ाया है, इसलिए इस मिथ्यात्व को सप्त व्यसनादिक से भी बड़ा पाप जानकर पहिले छुड़ाया है । इसलिए जो पाप के फल से डरते हैं, अपने आत्मा को दुःख समुद्र में डुबाना नहीं चाहते, वे जीव इस मिथ्यात्व को अवश्य छोड़ें । सर्व प्रकार के मिथ्यात्व भाव को छोड़कर सम्यग्दृष्टि होना योग्य है, क्योंकि संसार का मूल मिथ्यात्व है और मोक्ष का मूल सम्यकत्व है ।

प्र० ९. मिथ्यात्व कितने प्रकार का है ?

उ० दो प्रकार का है । (१) अगृहीत मिथ्या दर्शन ज्ञान चारित्र जो अनादिकाल से एक एक समय करके चला आ रहा है । (२) गृहीत मिथ्यादर्शन

ज्ञान चारित्र जो मनुष्य जन्म पाने पर कुदेव, कुगुरु, कुधर्म से समय समय पर ग्रहण करता है।

प्र० १०. अगृहीत मिथ्यादर्शन ज्ञानचारित्र किसे कहते है ?

उ० ज्ञान दर्शन चारित्र आदि अनंत गुणों के अभेद पिण्ड मेरी आत्मा के अलावा बाकी अनंत आत्माएं जिसमें २४ तीर्थंकर, देव, गुरू, स्त्री, पुत्रादि द्रव्यकर्म सोना, चाँदी, मकान, दुकान, शरीर मन वाणी, धर्म, अधर्म, आकाश और लोक प्रमाण असंख्यात काल द्रव्यों में चारों गतियों के शरीर व भावों में, ज्ञेय से ज्ञान होता है और शुभाशुभ विकारी भावों में एकत्व को बुद्धि अगृहीत मिथ्यादर्शन है। इन सबमें एकत्व रूप आचरण अगृहीत मिथ्या चारित्र है।

इन सबमें भिन्नत्व की श्रद्धा सम्यग्दर्शन है। भिन्नत्व का ज्ञान सम्यग्ज्ञान है और भिन्नत्व का आचरण सम्यक चारित्र है।

प्र० ११. तुमने आज तक क्या किया ?

उ० पर पदार्थों को अपना मानकर मात्र मोह राग द्वेष किया।

प्र० १२. अब क्या करूं ?

उ० ज्ञान दर्शन चारित्र आदि अनंत गुणों का पिण्ड जो स्वयं है उसकी पहिचान कर।

प्र० १३. अपनी पहिचान मैं कैसे करूं ?

उ० मिथ्यादृष्टि की मर्यादा विकारी भावों तक है। ज्ञानियों की मर्यादा शुद्ध भावों तक है। परन्तु पर पदार्थों में ज्ञानी अज्ञानी कुछ भी नहीं कर सकता है।

प्र० १४. संसार और मोक्ष क्या है ?

उ० (१) आत्मा ज्ञाता दृष्टा के उपयोग को जब 'पर' पदार्थ को

ओर लक्ष्य करके पर में दृढ़ कर लेता है 'यह मैं' इसका नाम संसार है ।
(२) आत्मा ज्ञाता दृष्टा के उपयोग को जब स्व की ओर लक्ष्य करके स्व में दृढ़ कर लेता है 'यह मैं' इसका नाम मोक्ष है ।

प्र० १५. संसार का अभाव और मोक्ष की प्राप्ति के लिए क्या करें ?

उ० अपनी आत्मा के आश्रय के बिना संसार का अभाव और मोक्ष की प्राप्ति नही हो सकती है । इसलिए अपने स्वभाव का आश्रय लें ।

प्र० १६. जिसको कुछ भी पता नहीं है, वह क्या करे, तो संसार का अभाव और मोक्ष की प्राप्ति का अवकाश हो ।

उ० (१) विश्व (२) द्रव्य (३) गुण (४) पर्याय (५) अस्तित्व आदि ६ सामान्य गुण और चार अभाव का पता चले तो कल्याण का अवकाश है । इसलिये इसमें क्रम से सबको प्रश्नोत्तर के रूप में लिखा जाता है । इन सबको जानकर, श्रद्धान कर, स्थिरता करें तो धर्म की शुरूआत वृद्धि और क्रम से पूर्णता होकर मोक्ष का नाथ बन जावे ।

—o—

पाठ दूसरा

विश्व

प्र० १. विश्व किसे कहते हैं ?

उ० छह द्रव्यों के समूह को विश्व कहते हैं।

प्र० २. विश्व के पर्यायवाची शब्द क्या क्या हैं ?

उ० जगत, लोक, दुनिया, ब्रह्माण्ड, संसार, वर्ल्ड

प्र० ३. विश्व में कितने द्रव्य हैं ?

उ० छह द्रव्य हैं।

प्र० ४. हमें तो विश्व में बहुत से द्रव्य दिखते हैं आप छह ही क्यों कहते हो ?

उ० जाति अपेक्षा छह द्रव्य हैं। संख्या अपेक्षा अनंतानंत हैं।

प्र० ५. जाति अपेक्षा छह द्रव्य कौन २ से है ?

उ० (१) जीव (२) पुद्गल (३) धर्म (४) अधर्म (५) आकाश (६) काल

प्र० ६. जीव कितने हैं और कहाँ २ पर रहते हैं ?

उ० जीव द्रव्य अनंत हैं और सम्पूर्ण लोकाकाश में भरे हुए हैं।

प्र ७. पुद्गल द्रव्य कितने हैं और कहां २ पर रहते हैं ?

उ० जीव द्रव्य से अनंत गुणा अधिक पुद्गल द्रव्य हैं और वे सम्पूर्ण लोकाकाश में भरे पड़े हैं।

प्र० ८. धर्म अधर्म कितने कितने हैं और कहाँ २ पर रहते हैं ?

उ० धर्म और अधर्म द्रव्य एक एक हैं और सम्पूर्ण लोकाकाश में व्याप्त हैं।

प्र० ६. आकाश द्रव्य कितने हैं और कहां पर रहते हैं ?

उ० आकाश द्रव्य एक है, लोकाकाश और अलोकाकाश में व्याप्त है।

प्र० १०. काल द्रव्य कितने हैं और कहाँ पर रहते हैं ?

उ० लोक प्रमाण असंख्यात काल द्रव्य हैं और वह लोकाकाश के एक–२ प्रदेश पर रत्नों की भाँति जड़े हुये हैं।

प्र० ११. विश्व में छह जातियों के द्रव्य हैं इसको जानने से हमें क्या लाभ है।

उ० हम केवली भगवान के लघुनंदन बन जाते हैं।

प्र० १३. विश्व में छह जातियों के द्रव्य हैं, इसको जानने से हम केवली भगवान के लघुनंदन कैसे बन जाते हैं ?

उ० जैसे हमारी तिजोरी में छह रुपये हैं, हमारे ज्ञान में भो छह रुपए हैं और हमारो कापी में भी छह रुपया लिखा है। जब तीनो स्थान बराबर ही हो तो हिसाब ठीक है, उसी प्रकार केवलो भगवान को दिव्यध्वनि में छह द्रव्य आये, शास्त्रों में भी छह द्रव्य आये, और हमारे ज्ञान में भी छह द्रव्य आये। इस प्रकार जितना केवली भगवान जानते हैं उतना ही हमने जाना, इस अपेक्षा हम केवलो के सच्चे लघुनंदन बन गये।

प्र० १४. जितना केवली भगवान जानते हैं उतना ही हम जानते हैं, तो उनके और हमारे जानने में क्या फर्क रहा ?

उ० जानने में कोई अन्तर नहीं; मात्र प्रत्यक्ष परोक्ष का ही भेद है। ऐसा समयसार जी गा० १४३ की टीका भावार्थ में तथा रहस्यपूर्ण, चिट्ठो

में भी आया है।

प्र० १५. जब केवली के ज्ञान में सब द्रव्यों के सर्व गुण पर्याय ज्ञान में आते हैं और वैसा ही होता है वैसा ही हो रहा है, वैसा ही होता रहेगा, इसको जानने से हमें क्या लाभ है ?

उ० (१) अनादि से जो पर मैं कर्ता भोक्ता की बुद्धि थी उसका अभाव हो जाता है।

(२) मिथ्यात्व का अभाव होकर सम्यग्दर्शनादि की प्राप्ति कर मोक्ष की ओर गमन।

प्र० १६. केवली भगवान सब द्रव्यों का भूत भविष्य वर्तमान को एक समय में युगपत जानते हैं, कहां २ पर आया है ?

उ० चारों अनुयोगों क शास्त्रों में आया है।

(१) सर्व द्रव्यपर्यायेषु केवलस्य (मोक्ष शास्त्र अध्याय १ सूत्र २९)

(२) प्रवचनसार गा० ३७, ३८, ४७, ४८, २०० में आया है।

(३) धवला पुस्तक १३ पृष्ठ ३४६ से ३५३ तक।

(४) छहढाला में—'सकल द्रव्य के गुण अनन्त, परजाय अनन्ता, जानै एकै काल प्रगट केवलि भगवन्ता'।

(५) रत्नकरण्ड श्रावकाचार में श्लोक १३७ के भावार्थ में लिखा है 'जिस जीव के, जिस देश में, जिस काल में, जिस विधान करके जन्म मरण का लाभ—अलाभ, सुख—दुःख होना जिनेन्द्र भगवान दिव्य ज्ञान कर जाना है, तिस जीव के तिस देश में, तिस काल में, तिस विधान करके जन्म मरण लाभ नियमतै होय है ताहि दूर करने कूं कू कोऊ इन्द्रअहमिन्द्र जिनेन्द्र समर्थ नाही है। ऐसे समस्त द्रव्यनि

को समस्त पर्यायनिकूं जानै है श्रद्धान करे है सो सम्यग्दृष्टि दार्शनिक श्रावक प्रथम पद धारक जानना ।

प्र० १६. फिर जब केवली के ज्ञान में आया है वैसा ही प्रत्येक द्रव्य का स्वंतत्र परिणमन हो रहा है तब यह अज्ञानी जीव क्यों नहीं मानता ?

उ० अज्ञानी जीव को चारों गतियों में घूमकर निगोद में जाना अच्छा लगता है इसलिए नहीं मानता है ।

प्र० १७. विश्व को जानने से तीसरा लाभ क्या रहा ?

उ० जैसे हमारी जेब में छह रुपए हैं इसके बदले कोई यह कहे कि यह तो एक रुपया है, तो आप क्या कहेंगे ? यह झूठा है। उसी प्रकार विश्व में एक मात्र भगवान आत्मा है और कुछ नहीं ऐसी मान्यता वाला एक मत है और हमने छह द्रव्य जाने, तो वह झूठा है यह तीसरा लाभ रहा ।

प्र० १८. विश्व को जानने से चौथा लाभ क्या रहा ?

उ० जैसे हमारी जेब में छह रुपए हैं उसके बदले कोई पांच कहे, तो आप क्या कहेंगे ? यह झूठा है। उसी प्रकार हमने छह द्रव्य जाने; इसके बदले एक मत ऐसा है कि वह काल द्रव्य को छोड़कर पाँच ही द्रव्य हैं ऐसा मानता है तो हमें पता चला यह भी झूठा है यह चौथा लाभ रहा ।

प्र० १९. एक मात्र जीव द्रव्य को कौन मानता है ?

उ० वेदान्त मत ।

प्र० २०. पांच द्रव्य को कौन मानता है ?

उ० श्वेताम्बर ।

प्र० २१. विश्व को जानने से पाँचवा क्या लाभ रहा ?

उ० जैसे हमारे पास छह रुपए हैं उसे कोई कम कहे या ज्यादा कहे

तो हमें पता चल जाता है यह सब झूठे हैं; उसी प्रकार हमने विश्व में छह जाति के द्रव्य जाने, कोई कम ज्यादा कहता है वह झूठा है। एक मात्र हम ही सच्चे हैं ऐसा ज्ञान विश्व को जानने से हो जाता है।

प्र० २२. छह द्रव्यों के समूह को विश्व कहा है क्या वे आपस में मिले हुए हैं?

उ० प्रत्येक द्रव्य पृथक २ रहकर अपना २ कार्य करता है वे आपस में मिले हुए नहीं है।

प्र० २३. प्रत्येक द्रव्य अलग २ अपना २ कार्य करता है पूजा में कहीं आया है ?

उ० 'जड़ चेतन की सब परिणति प्रभु, अपने २ में होती है।
अनुकूल कहें, प्रतिकूल कहें, यही झूठो मन की वृत्ति है।
(देव गुरु शास्त्र की पूजा से)

प्र० २४. प्रत्येक द्रव्य अपना २ कार्य करता है क्या श्रीसमयसार जी में आया है ?

उ० श्री समयसार गा० ३ में आया है— "लोक में सर्वत्र जो कुछ जितने पदार्थ हैं वे सब निश्चय से एकत्व निश्चय को प्राप्त होने से ही सुन्दरता को प्राप्त होते हैं।.........वे सब पदार्थ अपने द्रव्य में अन्तर्मग्न रहने वाले अपने अनन्त धर्मों के चक्र को चुम्बन करते हैं—स्पर्श करते हैं, तथापि वे परस्पर एक दूसरे को स्पर्श नहीं करते। अत्यन्त निकट एक क्षेत्रा-वगाह रूप से तिष्ठ रहे हैं, तथापि वे सदा काल अपने स्वरूप से च्युत नहीं होते। पर रूप परिणमन न करने से अपनी अनन्त व्यक्ति नष्ट नहीं होती। इसलिए जो टंकोत्कीर्ण ती भाँति स्थिर रहते हैं और समस्त विरुद्ध कार्य तथा अविरुद्ध कार्य दोनों की हेतुता से वे विश्व का सदा उपकार करते हैं अर्थात् टिकाये रखते हैं।

प्र० २५. प्रत्येक द्रव्य अपना २ ही स्वतन्त्र कार्य करता है ऐसा आचार्य-कल्प पं० टोडरमल जी ने भी कहीं कहा है ?

उ० मोक्षमार्ग प्रकाशक पृष्ठ ५२ में लिखा है "अनादिनिधन वस्तुएं भिन्न २ अपनी मर्यादा सहित परिणमित होती हैं कोई किसी के आधीन नहीं है कोई किसी के परिणमित कराने से परिणमित नहीं होती और परिणमाने का भाव मिथ्यादर्शन है।"

प्र० २६. प्रत्येक द्रव्य स्वतन्त्र रूप से परिणमन करता है, कोई किसी के परिणमित कराने से परिणमित नहीं होता और परिणमाने का भाव मिथ्यादर्शन है तो शास्त्रों में आता है (१) कर्म चक्कर कटाता है, (२) ज्ञानावर्णी ज्ञान को रोकता है, (३) अघातियाँ कर्म अरहंत भगवान को मोक्ष में नहीं जाने देते, (४) आँख कान नाक से ज्ञान होता है, (५) गुरु से ज्ञान होता है आदि ऐसा कथन शास्त्रों में क्यों आता है ?

उ० वास्तव में यथार्थ बात कहने में नहीं आ सकती है इसलिए जितना ऐसा व्यवहार का कथन है वह 'घी के घड़े' के समान जानना। और उसका अर्थ 'ऐसा है नहीं, निमित्तादि की अपेक्षा उपचार किया है' ऐसा जानना।

प्र० २७. छह द्रव्यों के समूह को विश्व कहते हैं इन छः द्रव्यों में कैसा सम्बन्ध है ?

उ० एक क्षेत्रावगाही सम्बन्ध है।

प्र० २८. सम्बन्ध कितने प्रकार का है ?

उ० तीन प्रकार का है। (१) एकक्षेत्रावगाही सम्बन्ध (२) अनित्य तादात्म्य संबंध और (३) नित्य तादात्म्य संबंध।

प्र० २९. एकक्षेत्रावगाही संबंध किसका किसके साथ है ?

उ० (१) छह द्रव्यों का एक क्षेत्रावगाही संबंध है।
(२) शरीर और आठ कर्मों का एक क्षेत्रावगाही संबंध है।

प्र० ३०. स्त्री पुत्र, धन, दुकान, मकान, सोना, चाँदी का इन तीनों संबंधों में से कौन सा संबंध है ?

उ० स्त्री पुत्र आदि का तो किसो भी प्रकार का संबंध नहीं है। जैसे वृक्ष पर पक्षी आकर बैठ जाते हैं कोई एक घन्टे में कोई दो घन्टे में उड़ जाता है; उसी प्रकार स्त्री पुत्र मकान आदि का संबंध है अर्थात् किसी भी प्रकार का संबंध नहीं है।

प्र० ३१. जब स्त्री पुत्र आदि का किसो भो प्रकार का संबंध नही है तो यह मूर्ख जोव क्यों पागल हो रहा है ?

उ० अपने आपका पता न होने से, पर पदार्थों में इसके साथ किसी भी प्रकार का संबंध न होने से, वह अपनी मूर्खता से झूठा संबंध मानकर पागल बन रहा है।

प्र० ३२. यह पागलपन कैसे मिटे ?

उ० विश्व में छह जाति के द्रव्य हैं। एक एक द्रव्य में दूसरे द्रव्य का कर्त्ता भोक्ता आदि किसी भी प्रकार का संबंध नहीं है प्रत्येक द्रव्य क्रमबद्ध, क्रमनियमित कायम रहता हुआ स्वयं बदलता रहता है। मैं उनमें कुछ भी हेर फेर नहीं कर सकता हूं ऐसा जानकर अपने त्रिकाली भगवान का आश्रय ले तो पागलपन मिटे।

प्र० ३३. जो अपनी मूर्खता है उसका आत्मा के साथ कैसा संबंध है ?

उ० शुभाशुभ विकारी भावों के साथ आत्मा का अनित्य तादात्म्य संबंध है।

प्र० ३४. जो जीव दयादान पूजा अणुव्रत महाव्रत आदि जो अनित्य-

तादात्म्य संबंध है इनसे मोक्षमार्ग माने तो क्या होगा ?

उ० जैसे करेला कड़वा ऊपर से नीम चढ़ा; उसी प्रकार दिगम्बर धर्म धारण करने पर इन विकारी भावों से मोक्षमार्ग माने तो मिथ्यात्वादि की पुष्टि होकर निगोद में चला जावेगा। और शुभ भावों को पुण्यबन्ध का कारण माने तो उसका अभाव करके मोक्षमार्ग में प्रवेश कर सकता है।

प्र० ३५. जिसका आत्मा से कभी भी अभाव ना हो, ऐसा कोई सम्बन्ध है?

उ० आत्मा और ज्ञान दर्शन चारित्र आदि अनंत गुणों का आत्मा के साथ नित्यतादात्म्य संबंध है ऐसा जानकर अभेद अपनी आत्मा का आश्रय ले तो सम्यग्दर्शनादि की प्राप्ति होती है।

प्र० ३६. तीनों प्रकार के संबध को जानने से क्या लाभ है ?

उ० (१) जो अत्यन्त भिन्न पदार्थ है उनसे मेरा किसी प्रकार का संबंध नहीं।

(२) शरीर और कर्म का एक क्षेत्रावगाही संबंध है मेरा इसके साथ अत्यंताभाव है।

(३) शुभाशुभ विकारी भावों के साथ अनित्य तादात्म्य सम्बन्ध है इनके आश्रय से जीव को दु:ख होता है ऐसा जानकर

(४) नित्यतादात्म्य सम्बन्ध जो आत्मा का अपने गुणों के साथ है उसका आश्रय ले तो मोक्षमार्ग की प्राप्ति होकर मोक्ष की प्राप्ति हो।

प्र० ३७. छह द्रव्यों के समूह को एक नाम से क्या कहते हैं ?

उ० विश्व।

प्र० ३८. विश्व में छह द्रव्य हैं यह कथन कैसा है ?

उ० व्यवहारनय का कथन है।

प्र० ३९. विश्व में छह द्रव्य हैं इसका निश्चय कथन क्या है ?

उ० प्रत्येक द्रव्य अपने अपने क्षेत्र में है अर्थात् अपने २ द्रव्य क्षेत्र काल भाव में है यह निश्चयनय का कथन है।

प्र० ४०. छह द्रव्यों के समूह को विश्व कहते हैं ऐसा कौन जानता है ?

उ० ज्ञानी जानते हैं अज्ञानी नहीं।

प्र० ४१. विश्व को जानने वालों को किस किस नाम से कहा जाता है ?

उ० (१) जिन (२) जिनवर (३) जिनवर वृषभ।

प्र० ४२. क्या द्रव्यलिंगी मुनि छह द्रव्यों को नहीं जानता ?

उ० नही जानता है। देखो कलश टीका पहिला कलश।

प्र० ४३. छह द्रव्यों के समूह को क्या कहते हैं ?

उ० विश्व।

प्र० ४४. विश्व में कितने द्रव्य हैं ?

उ० जाति अपेक्षा छह द्रव्य हैं। (१) जीव (२) पुद्गल (३) धर्म (४) अधर्म (५) आकाश (६) काल।

—o—

पाठ ३

जीव

प्र० १. जीव किसे कहते हैं ?

उ० जिसमें चेतना अर्थात् ज्ञान-दर्शन रूप शक्ति हो उसे जीव कहते हैं?

प्र० २. चैतन्य किसका लक्षण है ?

उ० जीव द्रव्य का।

प्र० ३. चैतन्य से क्या तात्पर्य है ?

उ० चैतन्य से ज्ञान दर्शन गुण का ग्रहण होता है।

प्र० ४. क्या चैतन्य ही आत्मा का लक्षण है, उसके बाकी गुणों का क्या हुआ ?

उ० चैतन्य गुण जानने देखने का कार्य करता है और गुण जानने देखने का कार्य नहीं करते हैं और चैतन्य कहते ही उसके बाकी सब गुण साथ में आ जाते हैं ऐसा पात्र जीव जानता है।

प्र० ५. श्री समयसार जी में आत्मा को 'ज्ञान' ही क्यों कहा है ?

उ० 'ज्ञान' कहते ही आत्मा का ग्रहण हो जाता है इसलिए आत्मा को ज्ञान कहा है। ज्ञान कहते ही और गुण भी साथ में आ जाते हैं।

प्र० ६. जीव द्रव्य में सामान्य गुण कितने हैं और कौन २ से ?

उ० अस्तित्व, वस्तुत्व आदि अनेक सामान्य गुण है।

प्र० ७. जीव द्रव्य में विशेष गुण कितने हैं और कौन से ?

उ० जीव द्रव्य में चैतन्य (ज्ञान-दर्शन) श्रद्धा, चारित्र, सुख, क्रियावती शक्ति इत्यादि अनेक विशेष गुण हैं।

प्र० ८. जब जीव द्रव्य में सामान्य और विशेष गुण अनेक हैं तो सबके नाम क्यों नहीं बताये ?

उ० हमारा प्रयोजन मोक्षमार्ग की सिद्धि करना है। सो जिन सामान्य विशेष गुणों का श्रद्धान करने से मोक्ष हो, और जिनका श्रद्धान किये बिना मोक्ष ना हो उन्हीं का यहां हमने वर्णन किया है।

प्र० ९: जीव कितने हैं ?

उ० अनन्त हैं।

प्र० १०. जीव अनन्त हैं कब माना ?

उ० मैं एक जीव हूं दूसरे भी पृथक २ अनन्त जीव हैं। प्रत्येक जीव अपने गुण पर्यायों सहित अपने अपने द्रव्य क्षेत्र-काल भाव में ही वर्त रहा है वर्तेगा और वर्तता रहा है। अनन्त जीवों के द्रव्य गुण पर्याय पृथक पृथक ज्ञान में आवे तब जीव अनन्त है ऐसा माना।

प्र० ११. जीव अनन्त हैं ऐसा मानने वाले को क्या २ प्रश्न नहीं उठेगा।

उ० (१) मैं दूसरे जीवों का भला कर दूं (२) दूसरे जीव मेरा भला कर दें। (३) भगवान देव गुरू मेरा भला करदें, कोई दुश्मन मेरा बुरा करदे आदि प्रश्न नहीं उठ सकते हैं क्योंकि जीव अनन्त है और प्रत्येक जीव का स्वचतुष्टय पृथक पृथक है।

प्र० १२. जीव अनन्त हैं इसके जानने से दूसरा लाभ क्या रहा ?

उ० जैसे वेदान्ती मानता है एक आत्मा है। और हमने जाना जीव अनन्त है एक मात्र आत्मा कहने वाला झूठा है ऐसा पता चल गया।

प्र० १३ मेरा लक्षण ज्ञान दर्शनादि अनन्त गुण स्वरूप है इसके जानने से क्या लाभ ?

उ० मैं आत्मा (१) शरीर आँख नाक कान आदि; (२) आठ कर्मों रूप (३) विकार रूप (४) परद्रव्यों रूप नही हूं ऐसा पता चल गया।

प्र० १४ मैं आत्मा शरीर, कान, आठकर्म, पर द्रव्यों रूप, और विकार रूप नही हूं ऐसा जानने से क्या लाभ रहा ?

उ० अनादिकाल से जीव को मैं शरीर आंख नाक और शरीर को हिला डुला सकता हूं कर्म मुझे सुखी दुखी करते हैं। अशुभ भाव बुरा शुभ भाव अच्छा है ऐसी खोटो मान्यता का अभाव हो जाता है क्योंकि जब मैं इन रूप नही हूं तो इनमें करने धरने की बुद्धि का अभाव हो जाता है।

प्र० १५ जो जीव ऐसा कहता है कि हमें तो उपयोग लक्षण वाला जीव दिखाई नहीं देता है हमें तो शरीर आदि रूप ही दिखाई देता है उससे आचार्य भगवान ने क्या कहा है ?

उ० समयसार गा. ३४ में कहा है कि "नित्य उपयोग लक्षण वाला जीव द्रव्य कभी शरीर आँख नाक मन वाणी कर्म विकार रूप होता हुआ देखने में नही आता और नित्य जड़ लक्षण वाला शरीर आदि पुद्गल द्रव्य कभी जीव द्रव्य रूप होता हुआ देखने में नहीं आता, क्योंकि उपयोग और जड़त्व के एकरूप होने में प्रकाश और अन्धकार की भांति विरोध है। जड़ चेतन कभी भी एक नही हो सकते। वे सर्वथा भिन्न ही हैं। इसलिए हे भव्य तू सब प्रकार से प्रसन्न हो। अपना चित्त उज्ज्वल करके सावधान हो और स्वद्रव्य को ही "यह मेरा है" ऐसा अनुभव कर।

प्र० १६ 'जीव का लक्षण उपयोग है' कहाँ आया है।

उ० समस्त शास्त्रों में आया है।

(१) उपयोगो लक्षणम् (तत्वार्थ सूत्र अध्याय दूसरा सूत्र ८)

(२) समयसार गा० २४

(३) छः ढाला में "चेतन को है उपयोग रूप"

प्र० १७ जीव के कितने प्रदेश हैं ?

उ० असंख्यात प्रदेश हैं।

प्र० १८ संकोच विस्तार किसमें होता है ?

उ० जीव के प्रदेश संकोच और विस्तार को प्राप्त होते है इसीलिए लोक के असंख्यातवे भाग से लेकर समस्त लोक के अवगाह रूप से है।

प्र० १९ जीव के प्रदेश असंख्यात हैं तो और किसी द्रव्य के भी असंख्यात प्रदेश हैं ?

उ० धर्म द्रव्य, अधर्म द्रव्य एक जीव और लोकाकाश के असंख्यात प्रदेश है।

प्र० २० जीव तथा धर्म अधर्म के असंख्यात प्रदेशों में कुछ अंतर है ?

उ० धर्म अधर्म समस्त लोकाकाश में व्याप्त है जबकि जीव के प्रदेश संकोच विस्तार को प्राप्त होते हैं। इस प्रकार अवगाह में अन्तर है ?

प्र० २१ जीव में क्रियावती शक्ति है और उसका काम क्या है ?

उ० जीव में क्रियावती शक्ति नाम का गुण है उस क्रियावती शक्ति का गतिरूप और स्थिति रूप दो प्रकार का परिणमन है।

प्र० २२ जीव का लक्षण शरीर कहें तो क्या दोष आता है ?

उ० असंभव दोष आता है।

प्र० २३ जीव का लक्षण भावकर्म कहें तो क्या दोष आता है ?
उ० (१) अध्यात्म की अपेक्षा असम्भव दोष आता है ।
(२) आगम की अपेक्षा अव्याप्ति दोष आता है क्योंकि दसवे गुण स्थान तक भावकर्म है बाद के जीवों में नही है ।

प्र० २४ जीव का लक्षण मति श्रुत ज्ञानी कहे तो कुछ दोष आता है ?
उ० अव्याप्ति दोष आता है ।

प्र० २५ जीव का लक्षण केवल ज्ञान कहें तो कुज दोष नहीं आता ?
उ० अव्याप्ति दोष आता है ।

प्र० २६ जीव का लक्षण कान नाक से ज्ञान करना कहें तो क्या दोष आता है ?
उ० असम्भव दोष आता है ।

प्र० २७ जीव का लक्षण श्रेणी मांडना कहे तो क्या दोष आता है ?
उ० अव्याप्ति दोष आता है ।

प्र० २८ जीव का लक्षण इन्द्रियाँ और मन कहें तो क्या दोष आता है ?
उ० असम्भव दोष आता है ।

प्र० २९ जीव का लक्षण अरूपी कहें तो क्या दोष आता है ?
उ० अतिव्याप्ति दोष आता है ।

प्र० ३० जीव का लक्षण बाहरी तपस्या और नग्न रहना है ना ?
उ० असम्भव दोष आता है ।

प्र० ३१ जीव का लक्षण क्रियावती शक्तिवाला कहें तो ठीक है ना ?
उ० अतिव्याप्ति दोष आता है ।

प्र० ३२ जीव का लक्षण पर का भला बुरा करना, सत्य बोलना, देश का

उपकार करना, बाल बच्चों का और स्त्री का पालन पोषण करना, रुपया कमाना कहें तो ठीक है ना ?

उ० असम्भव दोष आता है।

प्र० ३३ आत्मा का लक्षण दयादान पूजा अणुव्रत महाव्रतादि कहें तो ?

उ० अव्याप्ति दोष आता है।

प्र० ३४ आत्मा का लक्षण सम्यग्दर्शन कहें तो क्या दोष आता है ?

उ० अव्याप्ति दोष आता है।

प्र० ३५ सच्चे लक्षण की क्या पहिचान है ?

उ० जो लक्ष्य में तो सर्वत्र पाया जावे और अलक्ष्य में किसी भी स्थान पर ना हो वही सच्चे लक्षण की पहिचान है।

प्र० ३६ आत्मा का लक्षण 'चैतन्य' कहें तो क्या दोष आता है ?

उ० कोई भी दोष नहीं आता क्योंकि निगोद से लगाकर सिद्ध दशा तक सब जीवों में निरन्तर पाया जाता है, अनात्मा में नहीं पाया जाता इसलिए चैतन्य लक्षण आत्मा है इसमें कोई भी दोष नहीं आता है।

प्र० ३७ तुम्हारी सत्ता कितनी है ?

उ० मेरा आत्मा गुण और पर्याय मेरी सत्ता है।

प्र० ३८ मेरी सत्ता मेरा आत्म गुण पर्याय है इसको जानने से क्या लाभ है ?

उ० (१) शरीर की सत्ता (२) आठ कर्मों की सत्ता (३) विकारी भावों की सत्ता मेरी सत्ता नहीं है ऐसा जानकर अपनी सत्ता पर दृष्टि देवे तो धर्म की शुरुआत वृद्धि होकर पूर्णता होवे।

प्र० ३९ असंख्यात प्रदेशी वह आत्मा, कोई दोष आता है ?

उ० अतिव्याप्ति दोष आता है ।

प्र० ४० तेरा पर से होता है, तेरा तेरे से नहीं, क्या दोष आता है ?

उ० असंभव दोष आता है ।

प्र० ४१ लोक व्यापक सो आत्मा, क्या दोष आता है ?

उ० अतिव्याप्ति दोष आता है । अव्याप्ति दोष भी आता है ।

प्र० ४२ लोक में रहे सो आत्मा क्या दोष आता है ?

उ० अतिव्याप्ति दोष आता है ।

प्र० ४३ नित्य सो आत्मा क्या दोष आता है ?

उ० अतिव्याप्ति दोष आता है ।

प्र० ४४ गमन करे सो जीव क्या दोष आता है ?

उ० अतिव्याप्ति दोष आता है ।

प्र० ४५. जीव के गमन में कौन निमित्त है ?

उ० धर्म द्रव्य ।

प्र० ४६. जीव के स्थिर होने में कौन निमित्त है ?

उ० अधर्म द्रव्य ।

प्र० ४७. जीव के ठहरने में (अवकाश दान) कौन निमित्त है ?

उ० लोकाकाश ।

प्र० ४८. जीव के परिणमन में कौन निमित्त है ?

उ० काल ।

प्र० ४९. जो कानून जीव पर लागु हो वह सब द्रव्यों पर भी लागू हो उनके नाम बताओ ?

उ० (१) द्रव्य का लक्षण अस्तित्व है सब द्रव्यों पर लागू होता है।

(२) त्रिकाल कायम रहकर प्रत्येक समय में पुरानी अवस्था का व्यय और नई अवस्था का उत्पन्न करना। सब द्रव्यों पर लागू होता है।

(३) द्रव्य अपने गुण अवस्था वाला है, सब द्रव्यों पर लागू होता है।

(४) द्रव्य के निजभाव का नाश नहीं होता इसलिए नित्य है और परिणमन करता है इसलिए अनित्य है। यह भी सब द्रव्यों पर लागू होता है।

प्र० ५०. जीव का लक्षण अणुव्रत पालना, क्या दोष आता है ?

उ० अव्याप्ति दोष आता है।

प्र० ५१. जीव का लक्षण सामान्य विशेष गुणवाला कहें तो ?

उ० अतिव्याप्ति दोष आता है।

प्र० ५२. जीव का लक्षण उत्पादव्यय ध्रुव वाला कहें तो ?

उ० अतिव्याप्ति दोष आता है।

प्र० ५३. छः ढाला में जीव का लक्षण क्या कहा है ?

उ० जीव का लक्षण ज्ञाता दृष्टा है, आँख, नाक, शरीर मूर्तिक नहीं है चैतन्यरुपो उसकी मूर्ति है, उपमारहित है, पुद्गल आकाश धर्म अधर्म काल से जीव का कुछ भी संबंध नही है ऐसा बताया है।

प्र० ५४. अपना लक्षण चैतन्य माने तो क्या होगा ?

उ० चैतन्य लक्षण वाला मैं हूं ऐसा मानते ही सम्यग्दर्शनादि की प्राप्ति होती है सुख का पता चल जाता है।

पाठ ४

पुद्गल द्रव्य

प्र० १. पुद्गल किसे कहते हैं ?

उ० जिसमें स्पर्श, रस, गन्ध, वर्ण पाया जाये उसे पुद्गल कहते हैं।

प्र० २. पुद्गल के कितने भेद हैं ?

उ० दो भेद हैं। (१) परमाणु और (२) स्कध

प्र० ३. परमाणु किसे कहते हैं ?

उ० जिसका दूसरा विभाग नहीं हो सकता ऐसे सबसे छोटे पुद्गल को परमाणु कहते हैं।

प्र० ४. स्कंध किसे कहते हैं।

उ० दो या दो से अधिक परमाणुओं के बन्ध को स्कंध कहते हैं।

प्र० ५. स्कंध के कितने भेद हैं ?

उ० आहार वर्गणा, तैजस वर्गणा, भाषा वर्गणा, मनोवर्गणा, कार्मण वर्गणा इत्यादि २२ भेद हैं।

प्र० ६. बंध किसे कहते हैं।

उ० जिस सम्बन्ध विशेष से अनेक वस्तुओं में एकपने का ज्ञान होता है उस संबंध विशेष को बंध कहते हैं।

प्र० ७. बंध की परिभाषा में क्या २ बात आई ?

उ० (१) अनेक वस्तु होनी चाहिएं। (२) एक देखने में आवे। (३) परन्तु ज्ञान में सच्ची बात ध्यान में हो, तब बंध का सच्चा ज्ञान होता है।

प्र० ८. स्पर्श क्या है ?

उ० पुद्गल द्रव्य का विशेष गुण है।

प्र० ९. स्पर्श की कितनी पर्याय हैं ?

उ० हल्का, भारी, ठण्डा, गर्म, रूखा, चिकना, कड़ा, नरम आठ हैं।

प्र० १०. रस क्या है और रस की कितनी पर्याय हैं ?

उ० रस पुद्गल द्रव्य का विशेष गुण है और खट्टा; मीठा, कड़ुवा, चरपरा, कषायला रस की ५ पर्यायें हैं।

प्र० ११. गंध क्या है और उसकी कितनी पर्याय हैं ?

उ० गंध पुद्गल द्रव्य का विशेष गुण है। इसकी सुगन्ध और दुर्गन्ध २ पर्यायें हैं।

प्र० १२. वर्ण क्या है और उसकी कितनी पर्यायें हैं ?

उ० वर्ण पुद्गल द्रव्य का विशेष गुण है और इसकी काला, पीला, नीला, लाल, सफेद ५ पर्यायें हैं।

प्र० १३. पुद्गल की २० पर्यायें के जानने से क्या लाभ है ?

उ० अनादिकाल से अज्ञानी एक एक समय करके पुद्गल की जो बीस पर्यायें हैं इन्हें अपनी मानकर पागल हो रहा है उसके पागलपन मिटाने के लिए २० पर्यायों का मालिक पुद्गल है, जीव नहीं। अर्थात् हे आत्मा! तेरा इनसे किसी भी प्रकार सम्बन्ध नहीं है। ऐसा जानकर अपनी ओर दृष्टि करे तो पुद्गल की बीस पर्यायों का ज्ञान सच्चा है।

प्र० १४. पुद्गल से जीव का सम्बन्ध नहीं है यह कहाँ आया है ?

उ० पूज्यपाद भगवान ने इष्टोपदेश की ५० वीं गाथा में कहा है कि

"जीव जुदा, पुद्गल जुदा, यही तत्व का सार।
अन्य कछु व्याख्यान जो, सब याही का विस्तार।

प्र० १५. पुद्गलास्तिकाय का शाब्दिक अर्थ क्या है ?

उ० (१) पुद=जुड़ना, (२) गल=बिछुड़ना, विखरना (३) अस्ति=होना, (४) काय=समूह अर्थात् इकट्ठा होना।

प्र० १६. पुद्गल द्रव्य का पूरा नाम क्या है ?

उ० पुद्गलास्तिकाय।

प्र० १७. पुद् अर्थात् जुड़ना से क्या तात्पर्य है ?

उ० (१) जैसे चार सौ पन्नो की किताब मैंने जोड़ दी, इसमें किताब जुड़ी पुद् के कारण, मानी मैंने जोड़ी तो उसने पुद्गलास्तिकाय के 'पुद्' को उड़ा दिया। (२) मैंने रुपया कमाया, कमाया गया 'पुद्' के कारण, माना मैंने कमाया, तो पुद्गलास्तिकाय के 'पुद्' को नहीं माना।

प्र० १८. 'पुद्' को कब माना।

उ० (१) मैंने झाड़ू दी, (२) मैंने दाने इकट्ठे कर दिये (३) मैंने कमीज के टुकड़ों को जोड़ दिया आदि कथनों में झाड़ू आना, दाना इकट्ठा करना, टुकड़ों को जोड़ना आदि 'पुद्' से हुआ मेरे से नहीं, तब 'पुद्' को माना।

प्र० १९. 'गल' अर्थात बिखरना से क्या तात्पर्य है ?

उ० जैसे बच्चे के हाथ में काँच का गिलास था, उसमें दूध था-वह गिर गया, अज्ञानी को क्या लगता है, कि बच्चे ने सावधानी नहीं रक्खी

इसलिए दूध मिट्टी में मिल गया (बिखर गया) परन्तु दूध जो बिखरा वह पुद्गलास्तिकाय के 'गल' के कारण। ऐसा न मानकर बच्चे की असावधानी ढूंढे तो उसने 'गल' को नहीं माना।

प्र० २०. 'गल' को कब माना।

उ० जैसे मैंने लड्डू के दो टुकड़े कर दिए, मैंने कलम के दो टुकड़े कर दिए, मैंने सावधानी न रक्खी तो दूध निकल गया आदि कथनों में लड्डू और कलम के टुकड़े करना, दूध निकलना—वह 'गल' के कारण निकला, मेरे कारण नहीं, ऐसा ज्ञान वर्ते तो पुद्गलास्तिकाय के 'गल' को माना।

प्र० २१. 'अस्ति' अर्थात् होना से क्या तात्पर्य है ?

उ० जैसे (१) मैं हूँ तो शरीर है। (२) मैं हूँ तो शरीर का कार्य होता है। (३) ज्ञान है तो आंख है आदि में अज्ञानी ऐसा मानता है कि शरीर है शरीर का कार्य है, आंख है यह सब आत्मा के कारण है तो उसने पुद्गलास्तिकाय का 'अस्ति' पना नहीं माना।

प्र० २२. 'अस्ति को कब माना ?

उ० शरीर, आंख, कान, मन वाणी आदि के पुद्गलास्तिकाय के अस्ति-पने के कारण हैं मेरे कारण नहीं। तब 'अस्ति' को माना।

प्र० २३. काय अर्थात् समूह इकट्ठा होना से क्या तात्पर्य है ?

उ० जैसे लड़की की शादी में हलवाई बून्दी बना देता है और भाई जाते है तो बून्दी के लड्डू बनाकर रख देते हैं। वास्तव में वह पुद्गलास्तिकाय के 'काय' के कारण बने। अज्ञानी मानता है मैंने बनाये तो उसने 'काय' को नहीं माना।

प्र० २४. 'काय' को कब माना ?

उ० (१) दस दवाई मिलाकर मैंने चूर्ण बनाया, (२) घी चीनी से मैंने हलवा बनाया आदि कथनों में चूर्ण, हलवा पुद्गलास्तिकाय के 'काय' के कारण बना, मेरे कारण नहीं, तब पुद्गलास्तिकाय के 'काय' को माना।

प्र० २५. पुद्गलास्तिकाय से क्या समझना चाहिए ?
उ० (१) पुद् (२) गल (३) अस्ति (४) काय, यह सब पुद्गल का स्वभाव है इनसे मेरा किसी भी प्रकार का संबंध नही है। लेकिन अज्ञानी पुद्गल का कार्य पुद्गल से न मानकर पुद्गलास्तिकाय को उड़ाता है हम ऐसी गलती न करे। पुद्गल का कार्य पुद्गल से ही जाने तो मिथ्यात्व का अभाव होकर धर्म की प्राप्ति हो।

प्र० २६. पुद्गल द्रव्य कितने हैं ?
उ० पुद्गल द्रव्य अनंतानंत हैं।

प्र० २७. पुद्गल द्रव्य अनन्तानन्त हैं, कब माना ?
उ० एक २ परमाणु अनन्त गुण और पर्यायों का पिण्ड है। एक परमाणु का द्रव्य क्षेत्र काल भाव दूसरे परमाणु से पृथक है। जैसे एक किताब है, घड़ी है, लड्डू है, यह स्कंध हैं इनमें एक २ परमाणु अपने अपने अनन्त गुणों पर्यायों सहित वर्तता है ऐसा ज्ञान होवे और जब एक परमाणु दूसरे परमाणु में कुछ नहीं करता तो मेरे में करने धरने का प्रश्न ही नही तब पुद्गल द्रव्य अनन्तानन्त हैं तब माना।

प्र० २८. पुद्गल द्रव्य कितने प्रदेशी हैं ?
उ० प्रत्येक पुद्गल एक प्रदेशी है।

प्र० २९. पुद्गल द्रव्य रूपी है या अरूपी है ?
उ० पुद्गल द्रव्य रूपी है अरूपी नहीं है क्योंकि जिसमें स्पर्श रस गंध

वर्ण पाया जावे वह रूपी है।

प्र० ३०. पुद्गलों में बंध क्यों होता है ?

उ० पुद्गल के स्पर्श रस गंध वर्णादि विशेष गुणों में से स्पर्श गुण की दो अंश ही अधिक हो वहाँ स्निग्ध का स्निग्ध के साथ, रुक्ष का रुक्ष के साथ, तथा स्निग्ध रुक्ष का परस्पर बंध होता है और जिसमें अधिक गुण हों उस रूप से समस्त स्कंध हो जाता है। इस प्रकार पुद्गलों के बंध की बात है। पुद्गल के बन्ध में जीव से किसी भी प्रकार का कर्ता-कर्म भोक्ता-भोग्य संबंध नहीं है। तब उसने पुद्गल के बन्ध को जाना।

प्र० ३१. पुद्गलों का बन्ध कब नहीं होता है ?

उ० जिस पुद्गल की स्निग्धता या रुक्षता जघन्य रूप से हो वह बंध के योग्य नहीं है। (२) एक समान गुणवाले पुद्गलों का बंध नहीं होता है

प्र० ३२. तुम परमाणु हो या स्कंध ?

उ० परमाणु और स्कंध पुद्गल के भेद हैं मैं तो जीव द्रव्य हूं।

प्र० ३३. शरीरों के कितने भेद हैं ?

उ० पांच हैं। १. औदारिक २. वैक्रियक ३. आहारक ४. तैजस और ५ कार्माण।

प्र० ३३. औदारिक शरीर का कर्ता कौन है, और कौन नही ?

उ० औदारिक शरीर का कर्ता आहार वर्गणा है, जीव नहीं।

प्र० ३५. वैक्रियक शरीर का कर्ता कौन है, और कौन नहीं ?

उ० वैक्रियक शरीर का कर्ता आहार वर्गणा है, और देव नारकी नहीं।

प्र० ३६. आहारक शरीर का कर्ता आहारक ऋद्धिधारी मुनि है ना ?

उ० आहारक शरीर का कर्ता आहार वर्गणा है, मुनि नहीं ?

प्र० ३७. तैजस शरीर का कर्ता कौन है और कौन नहीं ?

उ० तैजस शरीर का कर्ता तैजस वर्गणा है, जीव और दूसरी वर्गणा नहीं ।

प्र० ३८. ज्ञानावर्णी दर्शनावर्णी आदि कर्मों का कर्ता कौन है, कौन नहीं ?

उ० ज्ञानावर्णी आदि आठ कर्मों का कर्ता कार्मण वर्गणा है, जीव और बाकी वर्गणा नहीं है ।

प्र० ३९. आपके कितने शरीर हैं ?

उ० मैं तो आत्मा हूं मेरे कोई भी शरीर नहीं है ।

प्र० ४०. देव नारकियों के कितने २ शरीर है ?

उ० देव नारकी भी आत्मा हैं उसके कोई भी शरीर नही है ।

प्र० ४१. भाषा तो जीव बोलता है ना ?

उ० भाषा का कर्ता भाषा वर्गणा है, जीव नहीं है ।

प्र० ४२. रोटी बनाने और रोटी खाने का कर्ता आत्मा है ना ?

उ० रोटी बनाने और खाने का कर्ता आहार वर्गणा है, आत्मा नहीं है

प्र० ४३. मोहनीय कर्म का क्षय किस जीव ने किया ?

उ० मोहनीय कर्म के क्षय का कर्ता कार्मण वर्गणा है कोई भी जीव नहीं ।

प्र० ४४. किताब उठाने धरने का कर्ता जीव है ना ?

उ० किताब उठाने और धरने का कर्त्ता आहार वर्गणा है जीव और दूसरी वर्गणा नहीं है ।

प्र० ४५. सुबह उठना, टट्टी जाना, नहाना, कपड़े पहिनना, उतरना बिस्तर बिछाना, इकट्ठा करना, दुकान को सजाना, सोने का हार बनाना

रथ बनाना आदि कार्यों का कर्ता कौन है और कौन नहीं है ?

उ० इन सब कार्यों का कर्ता एक मात्र आहार वर्गणा है कोई जीव और दूसरी वर्गणा नहीं है ।

प्र० ४६ गेहूं का आटा बाई ने पीसा है ना ?

उ० गेहूं का आटा आहार वर्गणा ने किया है । बाई और चक्की ने नहीं ।

प्र० ४७. दिव्य ध्वनि का कर्ता कौन २ से भगवान हैं ?

उ० दिव्यध्वनि का कर्ता भाषावर्गणा है कोई भगवान और कोई दूसरी वर्गणा नहीं है ।

प्र० ४८. मन का कर्ता संज्ञी जीव है या असंज्ञी ?

उ० मन का कर्ता मनोवर्गणा है कोई जीव और कोई दूसरी वर्गणा नही ।

प्र० ४९. पुद्गल के सामान्य गुण कौन कौन से हैं और कितने हैं ?

उ० अस्तित्व वस्तुत्व आदि पुद्गल के गुण अनेक हैं ।

प्र० ५०. पुद्गल की पर्यायों के नाम बताओ ?

उ० (१) शब्द (२) बन्ध (३) सूक्ष्म (४) स्थूल (५) आकार (३)खंड (७) अन्धकार (८) छाया (९) उद्योत (१०) आताप, यह सब पुद्गल की पर्यायें हैं इनका कर्ता पुद्गल ही है जीव नहीं है ।

प्र० ५१. तुम हल्के हो या भारी ?

उ० मैं तो आत्मा हूं हल्का भारी तो स्पर्श गुण की पर्याय है ।

प्र० ५१. अज्ञानी हल्का भारी को जानकर क्या करता है ?

उ० राग द्वेष

प्र० ५३. अपने आप का पता न होने से अज्ञानी स्पर्श गुण की हल्के भारी पर्याय को ही, (१) मैं हल्का हूं तो द्वेष करता है, और भारी होने के लिए पिस्ता, बादाम आदि खाता है तो राग करता है। (२) यदि अपने आपको भारी मानता है चला नहीं जाता है तो द्वेष करता है हल्का होने पर राग करता है।

प्र० ५०. इस हल्का भारी में जो रागद्वेष होता है इसका अभाव कैसे हो ?
उ० मैं आत्मा, हल्का भारी स्पर्श रहित अस्पर्श स्वभावी हूं ऐसा जाने माने तो रागद्वेष का अभाव हो।

प्र० ५४. ठण्डा गरम क्या है ?
उ० ठंडा गरम पुद्गल द्रव्य के स्पर्श गुण की पर्याय है ?

प्र० ५५. अज्ञानी जीव ठंडा गरम को जानकर रागद्वेष कैसे करता है ?
उ० (१) मुझे ठण्डी का बुखार है, मुझे गर्मी का बुखार है ऐसा जानकर द्वेष करता है।
(२) किसी को हैजा हो जावे और बुखार हो जावे तो राग करता है।

प्र० ५७. ठंडा गर्म संबंधी रागद्वेष का अभाव कैसे हो ?
उ० मैं आत्मा, ठंडा गर्म स्पर्श गुण रहित अस्पर्श स्वभावी भगवान आत्मा हूं ऐसा जाने माने तो रागद्वेष का अभाव हो।

प्र० ५८. रूखा, चिकना, कड़ा, नर्म क्या है ?
उ० पुद्गल की स्पर्श गुण की पर्याय है।

प्र० ५९. अज्ञानी जीव रूखा, चिकना, कड़ा, नर्म को जानकर रागद्वेष कैसे करता है ?

उ० मेरा बदन रूखा, कड़ा है ऐसा जानकर द्वेष करता है और चिकना नर्म से राग करता है।

प्र० ६०. रूखा; चिकना, कड़ा, नर्म संबंधी रागद्वेष का अभाव कैसे हो ?
उ० मैं आत्मा रूखा, चिकना, कड़ा नर्म स्पर्श गुण रहित अस्पर्श स्वभावी भगवान आत्मा हूं ऐसा जाने माने तो रागद्वेष का अभाव हो।

प्र० ६१. खट्टा, मीठा, कड़ुवा, कषायला, चरपरा क्या है ?

उ० पुद्गल द्रव्य के रस गुण की पर्यायें है।

प्र० ६२. अज्ञानी खट्टा, मीठा, कड़ुवा, चरपरा, कषायले को जानकर क्या करता है ?

उ० रागद्वेष करता है।

प्र० ६३. अज्ञानी खट्टा, मीठा, कड़ुवा, चरपरा, कषायला को जानकर रागद्वेष कैसे करता है ?

उ० मुझे नीम्बू खट्टा अच्छा लगता है, पेड़ा मीठा लगता है, नीम के पत्ते कड़ुवे लगते हैं, आदि में जिसमें रुचि हो राग करता है और जिसमें अरुचि हो द्वेष करता है।

प्र० ६४. रस की पर्याय से रागद्वेष का अभाव कैसे हो ?
उ० मैं आत्मा, खट्टा, मीठा, कड़ुवा, चरपरा, कषायला रस गुण की पर्यायों से रहित अरस स्वभावी भगवान हूं ऐसा अनुभव ज्ञान करे तो रागद्वेष का अभाव हो।

प्र० ६५. सुगन्ध और दुर्गन्ध गंध गुण की पर्यायों से अज्ञानी रागद्वेष कैसे करता है ?
उ० (१) विष्टा आदि में द्वेष करता है (२) फूल आदि सुगंधी में राग करता है।

प्र० ६६. सुगंध दुर्गन्ध आदि में रागद्वेष का अभाव कैसे हो ?

उ० मैं आत्मा अगन्ध स्वभावी हूं मेरा सुगंन्ध दुर्गन्ध गुण से तथा पुद्गलों से किसी भी प्रकार का सम्बन्ध नहीं है ऐसा जाने माने तो रागद्वेष का अभाव हो।

प्र० ६७. काला, पीला, नीला, लाल, सफेद क्या है ?

उ० पुद्गल के वर्ण की गुण पर्यायें हैं।

प्र० ६८. काला पीला आदि वर्ण गुण की पर्यायों को जानकर अज्ञानी राग द्वेष कैसे करता है ?

उ० मैं काला हूं तो द्वेष करता है गोरा होने में राग करता है। मुझे गोरी घरवाली चाहिये काली नहीं चाहिए आदि भावों में पागल बना रहता है।

प्र० ६९. काला गोरा रूप रागद्वेष का अभाव कैसे हो ?

उ० मैं आत्मा अरूप स्वभावी भगवान हूं काला गोरा आदि पुद्गलों के वर्ण गुण की पर्यायों से मेरा संबंध नहीं है ऐसा जाने माने तो राग-द्वेष का अभाव हो।

प्र० ७०. पुद्गल जड़ है या नहीं ?

उ० पुद्गल जड़ है।

प्र० ७१. यदि हम पुद्गल का लक्षण जड़ कहे तो ठीक है ना ?

उ० पुद्गल का लक्षण जड़ मानने से अतिव्याप्ति दोष आता है।

प्र० ७२. पुद्गल का लक्षण क्षेत्र क्षेत्रान्तर अर्थात् गति स्थिति रूप है ना?

उ० अतिव्याप्ति दोष आता है।

प्र० ७३. पुद्गल का लक्षण एक प्रदेशी है, ठीक है ना ?

उ० अतिव्याप्ति दोष आता है।

प्र० ७४. कोई पुद्गल का लक्षण चेतन कहे तो क्या दोष है ?

उ० असम्भव दोष आता है ।

प्र० ७५ पुद्गल का लक्षण गति हेतुत्व गुण कहें तो क्या दोष आता है ?

उ० असम्भव दोष आता है ।

प्र० ७६. जिसमें स्पर्श हो बाकी गन्ध रस वर्ण ना हो ऐसे पुद्गल का नाम बताओ ।

उ० जहाँ स्पर्श होगा वहां नियम से गन्ध वर्ण रस होगा ही इसलिए जिसमें स्पर्श हो बाकी गन्धादि न हो ऐसा पुद्गल होता ही नहीं ।

प्र० ७७. पुद्गल की शुद्ध दशा का क्या नाम है ?

उ० परमाणु ।

प्र० ७८. पुद्गल की अशुद्ध दशा का क्या नाम है ?

उ० स्कंध ।

प्र० ७९. जो पुद्गल में पाये जावें वह ही बातें दूसरे द्रव्यों में पाई जावें वह क्या है ?

उ० (१) द्रव्य का लक्षण अस्तित्व है । वह पुद्गल में भी पाया जाता है बाकी द्रव्यों में भी (२) पुद्गल त्रिकाल कायम रहकर पुरानी अवस्था का व्यय और नई अवस्था का उत्पाद करता है, बाकी द्रव्यों में भी ऐसा होता है । (३) पुद्गल अपनी गुण अवस्था वाला है । बाकी द्रव्य भी हैं । (४) पुद्गल का नाश नहीं होता इसलिए नित्य है, और परिणमन करता है इसलिए अनित्य है । यह बात भी सब द्रव्यों पर लागू होती है ।

प्र० ८०. सबसे ज्यादा संख्या में कौन द्रव्य है ?

उ० पुद्गल ।

प्र० ८१. पुद्गल चलता है या नहीं, यदि चलता है तो इसमें निमित्त कौन

उ० (१) पुद्गल में क्रियावती शक्ति होने से वह चलता है।
(२) पुद्गल के चलने में निमित्त है धर्म द्रव्य।

प्र० ८२. पुद्गल के ठहरने में निमित्त कौन है ?

उ० अधर्म द्रव्य '

प्र० ८३. पुद्गल को अवकाश देने में कौन निमित्त है ?

उ० आकाश द्रव्य।

प्र० ८४. पुद्गल के परिणमन में कौन निमित्त है ?

उ० काल द्रव्य।

प्र० ८५. पुद्गल के कार्यों को अपना माने वह कौन है ?

उ० *मिथ्यादृष्टि, पापी, जिनमत से बाहर है।*

प्र० ८६. बंध की विशेषता क्या २ है ?

उ० (१) एक प्रदेश में अनेक रहते हैं।
(२) लोकाकाश के एक प्रदेश में सब परमाणु और सूक्ष्म स्कंध समा सकते है।
(३) एक महा स्कंध लोक प्रमाण असंख्यात लोकाकाश के प्रदेशों को रोकता है।

प्र० ८७. रूपी कौन है और रूपी कौन नही है ?

उ० पुद्गल द्रव्य रूपी है बाकी द्रव्य रूपी नही है, अरूपी हैं।

प्र० ८८. पुण्य पाप का फल जीव का कार्य है ना ?

उ० पुण्य पाप फल मांही, हरख बिलखौ मत भाई।
यह पुद्गल परजाय, उपजि विनसै थिर नाई।
लाख बात की बात यही, निश्चय उर लावो।
तोरि सकल जग दंद-फंद, नित आतम ध्याओ।

पाठ ५

धर्म द्रव्य और अधर्म द्रव्य

प्र० १. धम द्रव्य किसे कहते हैं ?

उ० जो स्वयं गमन करते हुए जीव और पुद्गलों को गमन करने में निमित्त हो उसे धर्म द्रव्य कहते है। जैसे गमन करती हुई मछली को गमन करने मे पानी।

प्र० २. अधर्म द्रव्य किसे कहते है ?

उ० स्वय गति पूर्वक स्थिति रूप परिणमे ऐसे जीव और पुद्गलों को ठहरने मे जो निमित्त हो उसे अधर्म द्रव्य कहते हैं। जैसे पथिक को ठहरने के लिए वृक्ष की छाया।

प्र० ३. अधर्म द्रव्य की परिभाषा में 'गतिपूर्वक स्थिति करे' उसे अधर्म द्रव्य निमित्त है, यदि 'गतिपूर्वक' शब्द निकाल दें तो क्या हानि होगी।

उ० यदि हम 'गतिपूर्वक' शब्द निकाल दें तो सदैव स्थिर रहने वाले धर्म अधर्म काल और स्वयं अधर्म द्रव्य को भी स्थिति में अधर्म द्रव्य के निमित्तपने का प्रसंग उपस्थित होवेगा, सो गलत है।

प्र० ४. धर्म अर्थात् पुण्य और अधर्म अर्थात् पाप, ऐसा है ना ?

उ० पुण्य पाप से यहां मतलब नहीं है यहाँ पर तो धर्म और अधर्म द्रव्य नाम के स्वतन्त्र द्रव्य हैं उनसे तात्पर्य है।

प्र० ५. धर्म द्रव्य ही जीव पुद्गलों को चलाता है ना ?

उ० बिल्कुल नहीं। जीव पुद्गल अपनी २ क्रियावती शक्ति के गमन

रूप परिणमन के कारण चलते हैं धर्म द्रव्य के कारण नहीं। धर्म द्रव्य तो निमित्त मात्र है।

प्र० ६. अधर्म द्रव्य जीव और पुद्‌गलों को ठहराता है ना ?

उ० बिलकुल नहीं। जीव पुद्‌गल अपनी २ क्रियावती शक्ति के स्थिर रूप परिणमन के कारण ठहरते हैं अधर्म द्रव्य के कारण नहीं। अधर्म द्रव्य तो निमित्त मात्र है।

प्र० ७. चलने और स्थिर होने की शक्ति कितने द्रव्यों में है ?

उ० मात्र पुद्‌गल और जीव में ही है और द्रव्यों मे नहीं है।

प्र० ८. क्रियावती शक्ति किसे कहते हैं ?

उ० जीव और पुद्‌गल में अपनी २ क्रियावती शक्ति नाम का गुण है वह नित्य है, उसकी अपनी २ योग्यता से कभी गति रूप कभी स्थिर रूप पर्याय होती है।

प्र० ९. क्रियावती शक्ति गुण की कितने प्रकार की पर्याय होती हैं ?

उ० दो प्रकार की होती है—गमन रूप और स्थिति रूप।

प्र० १०. जब जीव और पुद्‌गलों में स्वयं चलने और स्थिर होने की शक्ति है तब शास्त्रों में धर्म अधर्म द्रव्य का वर्णन क्यों किया।

उ० (१) उपादान निज गुण जहाँ, तहां निमित्त पर होय।
भेदज्ञान प्रवाण विधि, बिरला बूझै कोय॥

(२) प्रवचनसार गा० ९५ में भी लिखा है कि "जिसके पूर्व अवस्था प्राप्त की है ऐसा (उपादान) द्रव्य भी जो कि उचित बहिरंग साधनों के सान्निध्य (निकटता, हाजरी) के सद्‌भाव में अनेक प्रकार की बहुत सी अवस्थाएं करता है।"

प्र ११. हम बम्बई से देहली आये, तो इसमे शरीर तो अपनी क्रियावती शक्ति से आया लेकिन मेरा भाव निमित्त तो है ना ?

उ० उसने अधर्म द्रव्य को उड़ा दिया।

प्र० १२. हम ध्यान करने बैठे तो शरीर तो अपनी क्रियावती शक्ति के कारण स्थिर हुआ परन्तु मैं निमित्त तो हूं ना ?

उ० उसने अधर्म द्रव्य को उड़ा दिया।

प्र० ११. 'उपकार' शब्द का क्या अर्थ है ?

उ० उपकार, निमित्त, सहायक आदि पर्यायवाची शब्द हैं।

प्र० १४. धर्म द्रय अधर्म द्रव्य हमको दिखाई नहीं देते हैं इसलिए हम नही मानते हैं ?

उ० अरे भाई, तुम्हारे पड़दादा, दादा वर्तमान में तुम्हें दिखाई नहीं देते, वह थे या नही ? तो कहता है वह तो थे। सर्वज्ञ भगवान के ज्ञान में प्रत्यक्ष आये हैं और अनुमानादि से यह हैं ऐसा पात्र जीव भी जानता है इसलिए हमें दिखाई नहीं देते इसलिए हम नही मानते, यह गलत है।

प्र० १५. धर्म अधर्म द्रव्य को अमूर्त स्वभावी क्यों कहा ?

उ० स्पर्श रस गंध वर्ण ना होने से अमूर्त स्वभावी कहा है।

प्र० १६. धर्म द्रव्य का क्षेत्र कितना बड़ा है ?

उ० लोकव्यापक असंख्यात प्रदेशी है।

प्र० १७. धर्म अधर्म द्रव्य के कितने २ हिस्से हो सकते हैं ?

उ० जो द्रव्य है वह अखंड होता है उसके हिस्से नही हो सकते इस लिए धर्म अधर्म द्रव्य के हिस्से नहीं हो सकते हैं।

प्र० १८. क्या धर्म अधर्म द्रव्य में भी उत्पाद व्यय ध्रौव्यपना होता है ?

उ० होता है, क्योंकि द्रव्य का लक्षण सत् है और जो सत् होता है

उसमें उत्पाद व्यय ध्रौव्यपना होता ही है।

प्र० १६. क्या धर्म द्रव्य गमन करता है ?

उ० नही करता क्योंकि इसमें कियावती शक्ति नही है और अनादि अनन्त स्थिर है।

प्र० २०. धर्म द्रव्य स्वयं गमन नही करता परन्तु जीव पुद्गलों को तो गमन कराता है ना ?

उ० बिलकुल नही, क्योंकि जो स्वय गमन नही करता वह दूसरों को गमन कैसे करा सकता है ? कभी नही।

प्र० २१. अधर्म द्रव्य जीव पुद्गलों को ठहराता है ना ?

उ० बिल्कुल नही। परन्तु जीव पुद्गल स्वय अपनी क्रियावती शक्ति के गमन रूप से स्थिर होते है तब उसे निमित्त कहा जाता है।

प्र० २२. अधर्म द्रव्य चलकर स्थिर हुआ है ना ?

उ० बिल्कुल नही, अधर्म द्रव्य तो अनादि अनन्त स्थिर ही है।

प्र० २३. धर्म द्रव्य की पहिचान क्या है ?

उ० गति हेतुत्व इत्यादि।

प्र० २४. अधर्म द्रव्य की पहिचान क्या है ?

उ० स्थिति हेतुत्व इत्यादि।

प्र० २५. धर्म और अधर्म द्रव्य में क्या अन्तर है ?

उ० (१) दोनों स्वतंत्र द्रव्य हैं। (२) धर्म द्रव्य गति में निमित्त है और अधर्म द्रव्य स्थिति में निमित्त है।

प्र० २६. लोक अलोक का विभाग किससे होता है ?

उ० धर्म अधर्म द्रव्यों से।

प्र० २७. धर्म अधर्म द्रव्य का लक्षण जड़ कहें तो क्या दोष आता है ?
उ० अतिव्याप्ति ।

प्र० २८. धर्म अधर्म द्रव्य को चेतन कहें तो क्या दोष आता है ?
उ० असभव ।

प्र० २६. धर्म अधर्म द्रव्य का लक्षण बहुप्रदेशी कहें तो ?
उ० अतिव्याप्ति दोष आता है ।

प्र० ३०. धर्म अधर्म की विशेपता क्या है ?
उ० (१) नित्य है, (२) अवस्थित है, (३) अरूपी है, (४) हलन चलन रहित है ।

प्र० २१. धर्म अधर्म द्रव्य का लक्षण नित्य अवस्थित अरूपी और हलन चलन रहित कहें तो ठीक है ना ?
उ० अतिव्याप्ति दोष आता है ।

प्र० ३२. धर्म द्रव्य को चलाने में कौन निमित्त है ?
उ० धर्म द्रव्य चलता ही नहीं तब निमित्त कौन है, यह प्रश्न झूठा है ।

प्र० ३३. धर्म अधर्म द्रव्य को ठहराने में कौन निमित्त है ?
उ० यह तो अनादि अनन्त ठहरे हुए ही हैं इसलिए ठहराने में कौन निमित्त है, यह प्रश्न अविवेकपूर्ण है ।

प्र० ३४. धर्म अधर्म को जगह देने में कौन निमित्त है ?
उ० आकाश द्रव्य ।

प्र० ३५. धर्म अधर्म द्रव्य के परिणमाने में कौन निमित्त है ?
उ० कालद्रव्य ।

प्र० ३६. सिद्ध जीव लोक के आगे क्यों नहीं जाते, तो कहा है "धर्म द्रव्य

के अभाव होने से" आप कहते हैं एक द्रव्य दूसरे द्रव्य में कुछ करता ही नही तो क्या तत्वार्थ सूत्र में गलत लिखा है ?

उ० (१) जो जीव धर्म द्रव्य को मानते ही नहीं उसकी अपेक्षा कथन किया है।

(१) यह व्यवहार कथन है।

प्र० ३७. तो फिर सिद्ध जीव अलोक में क्यों नहीं जाते ?

उ० सिद्ध जीव लोक का द्रव्य है इसलिए अलोक में नहीं जाता।

प्र० ३८. धर्म अधर्म द्रव्य को जानने से क्या लाभ है ?

उ० (१) शास्त्रों के पढ़ने से पहिले अज्ञानी ऐसा मानता था कि मैं शरीर को चलाता हूं या शरीर मुझे चलाता है। ठहराता है।

(३) शास्त्र पढ़कर अज्ञानी ने निकाला धर्म द्रव्य चलाता है और अधर्म द्रव्य ठहराता है। सच्चा ज्ञान होने पर इस खोटी बुद्धि का अभाव हो जाता है।

(३) मैं आत्मा हूं धर्म अधर्म द्रव्य से मेरा किसी भी प्रकार का संबंध नहीं है ऐसा जानकर अपने में स्थिर होवे तो धर्म अधर्म को जाना।

—०—

पाठ ६

आकाश द्रव्य

प्र० १. आकाश द्रव्य किसे कहते हैं ?

उ० जो जीवादिक पांचों द्रव्यों को रहने के लिए स्थान देता है उसे आकाश द्रव्य कहते है। आकाश द्रव्य सर्व व्यापक है, सर्वत्र है।

प्र० २. आकाश द्रव्य जगह देता है यह कथन कैसा है ?

उ० व्यवहार कथन है, ऐसा है नही, निमित्तादि की अपेक्षा कथन किया है।

प्र० ३. आकाश के कितने भेद है ?

उ० आकाश एक ही अखंड द्रव्य है।

प्र० ४. लोकाकाश और अलोकाकाश यह दो भेद क्यों किये ?

उ० जितने हिस्से में जीव पुद्गल धर्म अधर्म और काल रहते है उसे लोकाकाश कहते है बाकी लोकाकाश से अमर्यादित अलोकाकाश है।

प्र० ५. लोकाकाश बड़ा है या अलोकाकाश ?

उ० लोकाकाश से अमर्यादित बड़ा अलोकाकाश है।

प्र० ६. लोकाकाश अलोकाकाश के द्रव्य क्षेत्र काल भाव में क्या अन्तर है ?

उ० दोनों का द्रव्य क्षेत्रकाल भाव एक ही है क्योंकि एक द्रव्य है।

प्र० ७. लोकाकाश और अलोकाकाश के रंग में क्या अन्तर है ?

उ० आकाश द्रव्य अरूपी है लोकाकाश और अलोकाकाश में रंग होता ही नहीं क्योंकि रंग तो पुद्गल का विशेष गुण है।

प्र० ८. अलोकाश में कितने द्रव्य हैं ?

उ० एकमात्र आकाश ही शुद्ध द्रव्य है और नहीं।

प्र० ९. आकाश द्रव्य के कितने प्रदेश हैं ?

उ० आकाश द्रव्य अनंत प्रदेशी है।

प्र० १०. अलोकाकाश में परिणमन होता है या नही ? यदि होता है तो उसके परिणमन में कौन निमित्त है ?

उ० अलोकाकाश में परिणमन होता है, उसके परिणमन में काल द्रव्य निमित्त है।

प्र० ११. जब अलोकाकाश में काल द्रव्य है ही नही, तब वह निमित्त होता है यह बात कहां से आई ?

उ० लोकाकाश में विद्यमान कालाणु निमित्त है।

प्र० १२. लोकाकाश के प्रदेशों में एक ही प्रकार के दो द्रव्य कभी भी साथ नही रहते उस द्रव्य का क्या नाम है ?

उ० काल द्रव्य है क्योंकि कालद्रव्य लोकाकाश के एक २ प्रदेश पर रत्नों की राशि के समान अनादि अनन्त स्थिर है।

प्र० १३. कोई आदमी कहना है देखो हमने तुम्हे जगह दी, नही तो तुम गाड़ी से रह जाते, क्या यह बात ठीक है ?

उ० बिल्कुल गलत है। जैसे एक आदमी फर्स्ट क्लास के डिब्बे मे बैठा है. एक आदमी आया, बाबू जी जरा सी जगह मुझे भी दे दो। उसने कहा चल-चल। थोड़ो देर मे बारिस आ गई और गाड़ी ने सीटी दे दी, तब उस आदमी ने हाथ जोड़कर कहा, बाबू जी बहुत जरूरी काम है जरा सी जगह दे दो। उसने कहा अच्छा आओ बैठ जाओ, देखो हमने तुम्हें जगह दी है ना, देखो ऐसी मान्यता वाले ने आकाश द्रव्य को उड़ा दिया क्योंकि जगह देने में निमित्त आकाश द्रव्य है।

प्र० १४. आकाश द्रव्य की पहिचान क्या है ?

उ० अवगाहन हेतुत्व इत्यादि ।

प्र० १५. आकाश द्रव्य का द्रव्य क्षत्र काल भाव क्या है ?

उ० (१) आकाश नाम का द्रव्य है ।

(२) अनन्त प्रदेशी आकाश का क्षेत्र है ।

(३) उसका परिणमन वह काल है ।

(४) उसके अनन्त गुण वह उसका भाव है ।

प्र० १६. आकाश द्रव्य को मूर्तिक कहें तो क्या दोष आता है ?

उ० असंभव दोष आता है ।

प्र० १७. आकाश का लक्षण अमूर्तिक कहें तो ठीक है ना ?

उ० अतिव्याप्ति दोष आता है ।

प्र० १८. आकाश को जगह देने में कौन निमित्त है ?

उ० स्वयं ही स्वयं को निमित्त है ।

प्र० १९. आकाश को चलने में कौन निमित्त है ?

उ० आकाश चलता ही नहीं, तब कौन निमित्त, यह गलत है ।

प्र० २०. आकाश के ठहरने में तो अधर्म द्रव्य निमित्त है ना ?

उ० बिल्कुल नही । क्योंकि जो चलकर स्थिर हो ऐसे जीव और पुद्गल को ही अधर्म द्रव्य ठहरने में निमित्त है । जो अनादि अनन्त स्थिर है उसमें निमित्त कौन, यह गलत है क्योंकि उपादान हो तब निमित्त होता है ।

प्र० २१. आकाश के परिणमन में कौन निमित्त है ?

उ० काल द्रव्य ।

प्र० २२. प्रदेश किसे कहते हैं ?

उ० आकाश के सबसे छोटे भाग को प्रदेश कहते हैं ।

प्र० २३. आकाश द्रव्य को चेतन कहें तो क्या दोष आता है ?
उ० असम्भव दोष आता है।

प्र० २४. आकाश की विशेषता क्या है ?
उ० (१) नित्य (२) अवस्थित (३) अरूपी (४) हलन-चलन रहित (५) अनंत प्रदेशी।

प्र० २५. आकाश को किसने बनाया है ?
उ० आकाश अनादि अनंत है जो अनादि अनंत है उसे किसने बनाया यह प्रश्न मूर्खता भरा है।

प्र० २६. लोकाकाश के असंख्यात प्रदेश है, उसमें (लोकाकाश में) अनंत जीव, जीव से अनन्त गुणा पुद्गल द्रव्य, एक एक धर्म अधर्म द्रव्य और असख्य काल द्रव्य रहते हैं। तब अल्प प्रमाण वाले लोककाश मे इतने अनन्त द्रव्य कैसे रह सकते हैं ?

उ० (१) जैसे एक दीपक के प्रकाश में अनंत दीपकों का प्रकाश समा जाता है।
(२) गूढ रस से भरा हुआ शीशे के बर्तन में बहुत सा सोना रह सकता है;
(३) दूध से भरे हुए घड़े में उतने ही प्रमाण में राख और सुईयां समा जाती हैं,—उसी प्रकार लोकाकाश के विशिष्ट अवकाश दान शक्ति से अनन्त द्रव्य भी लोकाकाश में समा जाते हैं इस में कोई बाधा नहीं आती है।

प्र० २७. लोकाकाश का लक्षण असंख्यात प्रदेशी कहें तो क्या दोष आता है।
उ० अतिव्याप्ति दोष आता है।

प्र० २८. आकाश का लक्षण हलन चलन रहित कहें तो क्या दोष आता है ?

उ० अतिव्याप्ति दोष आता है ,

प्र० २९. आकाश द्रव्य को जानने का क्या लाभ है ?

उ० आकाश नाम का एक स्वतंत्र द्रव्य है । आकाश से मेरा किसी भी प्रकार का संबंध नही है ऐसा जानकर अपनी ओर सन्मुख होकर धर्म की प्राप्ति होना यह आकाश को जानने का लाभ है ।

पाठ ७

काल द्रव्य

प्र० १. काल द्रव्य किसे कहते है ?

उ० अपनी अपनी अवस्था रूप से स्वयं परिणमते हुए जीवादिक द्रव्यों के परिणमन में जो निमित्त हो, उसे काल द्रव्य कहते हैं। जैसे कुम्हार के चाक के घूमने के लिए लोहे की कीली।

प्र० २. काल द्रव्य सब द्रव्यों को परिणमाता है ना ?

उ० बिल्कुल नहीं। सब द्रव्य अपनी २ अवस्थारूप से बदलते है तब उसमें निमित्त काल द्रव्य है।

प्र० ३. जब सब द्रव्य अपनी २ अवस्थारूप से स्वयं परिणमते हैं तब काल द्रव्य निमित्त है उसे बताने की क्या आवश्यकता थी ?

उ० जहाँ उपादान होता है वहाँ निमित्त होता ही है ऐसा वस्तु का स्वभाव हैं ऐसा ज्ञान कराने के लिए निमित्त को बतलाने की आवश्यकता है।

प्र० ४. काल द्रव्य को समझाने के लिए कीली का दृष्टांत क्यों दिया है?

उ० लोकाकाश के एक २ प्रदेश पर एक २ काल द्रव्य अनादि अनंत स्थिर है इसलिए कीलो का दृष्टांत दिया है।

प्र० ५. कालद्रव्य के कितने प्रदेश है ?

उ० एक प्रदेशी है बहुप्रदेशी नही है।

प्र० ६. कई शास्त्रों में काल द्रव्य को 'अप्रदेशी' क्यों कहा है ?

उ० एक गिनती में न आने से काल द्रव्य को अप्रदेशी कहा है।

प्र० ७. कालद्रव्य का लक्षण सत् कहें तो क्या दोष आता है ?

उ० अतिव्याप्ति दोष आता है।

प्र० ८. काल द्रव्य में उत्पाद व्यय ध्रौव्यपना है या नहीं ?

उ० अवश्य ही है क्योकि प्रत्येक द्रव्य में उत्पाद व्यय ध्रौव्यपना होता है और काल द्रव्य भी है।

प्र० ९. काल द्रव्य के कितने भेद हैं ?

उ० (१) निश्चयकाल (२) व्यवहारकाल, दो भेद हैं।

प्र० १०. निश्चयकाल किसे कहते हैं ?

उ० काल द्रव्य को निश्चयकाल कहते हैं।

प्र० ११. व्यवहार काल किसे कहते हैं ?

उ० समय, पल, घड़ी, दिन महीना, वर्ष आदि को व्यवहार काल कहते है।

प्र० १२. काल द्रव्य अस्तिकाय क्यों नहीं है ?

उ० बहुप्रदेशी ना होने से अस्तिकाय नही है। काल द्रव्य की अस्ति है कायपना नही है।

प्र० १३. एक काल द्रव्य तथा दूसरे काल द्रव्य का क्षेत्र काल भाव एक ही है ना ?

उ० बिल्कुल नही। सब काल द्रव्यो का द्रव्य क्षेत्रकाल भाव पृथक पृथक है।

प्र० १४. काल द्रव्य की विशेषता क्या २ है ?

उ० (१) प्रत्येक काल द्रव्य एक प्रदेशी है (२) अरूपी है, (३) अस्ति है, काय नही है, (४) नित्य (५) अवस्थित है।

प्र० १५. कालद्रव्य को स्थान देने में कौन निमित्त है ?

उ० आकाश द्रव्य ।

प्र० १६. काल द्रव्य किसको निमित्त है ?

उ० स्वयं परिणमते हुए सब द्रव्यों को निमित्त है ।

प्र० १७. लोकाकाश के एक प्रदेश में रहने वाले अनंत द्रव्यों के परिणमन में कौन निमित्त है ?

उ० वहां का काल द्रव्य ही निमित्त है ।

प्र० १८. काल द्रव्य को चलने और ठहरने में कौन निमित्त है ?

उ० काल द्रव्य अनादि अनंत स्थिर हैं वह चले या चल कर ठहरे ऐसा उनमें होता ही नहीं है ।

प्र० १९. पंचम काल में मुक्ति नहीं होती, ऐसा क्यों कहा है ?

उ० (१) पंचम काल में दृष्टि-मुक्ति होती है और मोह-मुक्त, विदेह-मुक्त, जीवन-मुक्त मुक्ति पंचम काल में उत्पन्न होने वाला इतना तीव्र पुरुषार्थ नहीं कर सकेगा इस लिए पचम काल में मुक्ति नही होती है ।

(२) जम्बू कुमार आदि पंचम काल में ही मोक्ष गये है और विदेह क्षेत्र के मुनि के कोई पूर्व भव का बैरी देव उठा लावे वह मुक्ति प्राप्त कर लेता है ।

प्र० २०. काल द्रव्य को जानने का क्या लाभ है ?

उ० काल स्वतंत्र द्रव्य है इससे मेरा संबंध नहीं है ऐसा जानकर अपना आश्रय ले तो काल द्रव्य को जाना ।

—०—

पाठ ८

द्रव्य

प्र० १. द्रव्य किसे कहते हैं ?

उ० गुणों के समूह को द्रव्य कहते हैं।

प्र० २. गुणों का समूह कौन है ?

उ० प्रत्येक द्रव्य गुणों का समूह है।

प्र० ३. द्रव्य अर्थात् रुपया, सोना, चान्दी है ना ?

उ० बिलकुल नहीं, क्योंकि रुपया, सोना, चान्दी तो अनंत अनंत पुद्गलों का समूह है उनमें एक एक परमाणु वह गुणों का समूह है।

प्र० ४. द्रव्य के पर्यायवाची शब्द क्या क्या हैं ?

उ० वस्तु, पदार्थ, चीज, Things, सत् सब द्रव्य के पर्यायवाची है।

प्र० ५. क्या सोना, चाँदी, रुपया गुणों का समूह नहीं हैं ?

उ० सोना, चान्दी, रुपया एक स्कंध रूप पर्याय है इनमें अनंत २ परमाणु हैं और एक एक परमाणु गुणों का पिटारा है। इस अपेक्षा अनंत द्रव्य के गुणों के समूह को सोना चान्दी रुपया को द्रव्य कह सकते हैं।

प्र० ६. प्रत्येक द्रव्य गुणों का समूह है इसमें "प्रत्येक द्रव्य" से क्या तात्पर्य है ?

उ० अनन्त जीव, जीव से अनन्त गुणा पुद्गल द्रव्य, धर्म अधर्म, आकाश, एकेक और लोक प्रमाण असंख्यात काल द्रव्यों से हमारा मतलब 'प्रत्येक द्रव्य' से है—यह सब द्रव्य गुणों के समूह हैं।

प्र० ७. क्या मेरी आत्मा भी गुणों का समूह है ?

उ० हां तुम्हारी आत्मा भी गुणों का समूह है ।

प्र० ८. सिद्ध भगवान की आत्मा भी गुणों का समूह है ?

उ० हाँ, सिद्ध भगवान की आत्मा भी गुणों समूह है ।

प्र० ९. फिर सिद्ध भगवान और हमारी आत्मा के गुणों में क्या फर्क रहा ?

उ० बिल्कुल फरक नही है जितने गुण सिद्ध भगवान में हैं उतने ही गुण हमारी आत्मा में हैं ।

प्र० १० क्या प्रत्येक परमाणु भी गुणों का समूह है ?

उ० हां, एक एक परमाणु गुणों का समूह है ।

प्र० ११. धर्म अधर्म आकाश और असंख्यात काल द्रव्य भी गुणों का समूह हैं ?

उ० हाँ यह सब गुणों के समूह हैं ।

प्र० १२. क्या प्रत्येक द्रव्य में गुण समान ही है ?

उ० कोई भी द्रव्य हो उसमें समान ही गुण है कम ज्यादा नहीं हैं ।

प्र० १३. एक द्रव्य गुणों का समूह है तो एकेक मे कितने गुण हैं ?

उ० (१) जीव अनत है । (२) जीव से अनंत गुणा पुद्गल द्रव्य हैं । (३) पुद्गल द्रव्य से अनंत गुणा अधिक तीन काल के समय है । (४) तीन काल के समयों से अनंत गुणा अधिक आकाश द्रव्य के प्रदेश हैं । (५) आकाश द्रव्य के प्रदेशों से अनंत गुणा अधिक एक द्रव्य में गुण है ।

प्र० १४. आकाश द्रव्य के प्रदेशों से अनंत गुणा अधिक गुण, क्या प्रत्येक प्रत्येक द्रव्य में हैं ?

उ० हां प्रत्येक प्रत्येक द्रव्य में आकाश द्रव्य के प्रदेशों से अनन्त गुणा अधिक गुण प्रत्येक द्रव्य में हैं ।

प्र० १५. जब सिद्ध भगवान में और हमारे गुणों में कुछ भी अन्तर नहीं है तो उनके और हमारे गुणों में क्या फरक रहा ?

उ० गुणों की अपेक्षा कोई अन्तर नहीं है।

प्र० १६. हमारे में और सिद्ध भगवान में गुणों में अन्तर नहीं है तो अन्तर किसमें है ?

उ० मात्र पर्याय में अन्तर है द्रव्य गुण में अन्तर नहीं है।

प्र० १७. हम सिद्ध बनने के लिए पर्याय के अन्तर को कैसे दूर करें ?

उ० जैसा सिद्ध पर्याय में बनने से पहले सिद्ध भगवान ने किया वैसा करें तो पर्याय का अन्तर दूर होकर हम भी पर्याय में सिद्ध बन सकते हैं।

प्र० १८. सिद्ध बनने से पूर्व सिद्ध की आत्मा ने विकारी पर्याय को कैसे दूर किया ?

उ० मैं अनन्त गुणों का अभेद पिण्ड हूं, पर राग विकार का पिण्ड नहीं हूँ ऐसा जानकर आपने अभेद पिण्ड का आश्रय लिया तो वह सिद्ध बन गये और विकार का अभाव हो गया।

प्र० १९. अब हम सिद्ध बनने के लिए क्या करें ?

उ० अपने अनन्त गुणों के पिण्ड का आश्रय लेना चाहिए।

प्र० २०. गुणों के समूह को द्रव्य कहते हैं जरा दृष्टांत देकर समझाइये ?

उ० जैसे यहां पर छह आदमी बैठे हैं प्रत्येक के पास अटूट २ धन है किसी के पास भी कम या ज्यादा नहीं है क्योंकि किसी के पास कम होवे, तो दूसरे से मांगना पड़े, और ज्यादा होवे तो दूसरे को देने की बात आवे। उसी प्रकार विश्व में जाति अपेक्षा छह द्रव्य हैं प्रत्येक के पास अनन्त अनन्त गुणों का पिटारा है किसी पर भी कम ज्यादा गुण नहीं है।

प्र० २१. प्रत्येक के पास अनन्त गुणों का पिटारा है किसी पर भी कम ज्यादा गुण नहीं हैं इसको जानने से क्या लाभ है ?

उ० हम अपने अनन्त गुणों के पिटारे की ओर दृष्टि करें तो जीवन में सुख शान्ति की प्राप्ति होवे।

प्र० २२. गुणों के समूह को द्रव्य कहते हैं इसको जानने से क्या लाभ है?

उ० जैसे एक गुफा में छह मुनि बैठे है (१) एक ध्यान में लीन है। (२) दूसरा स्वाध्याय में रत है। (३) तीसरा आहार के निमित्त जा रहा है। (४) चौथा पाठ कर रहा है। (५) पांचवां सामायिक कर रहा है। (६) छठे को सिंह खा रहा है। तो वहाँ पर एक को दूसरे से किसी प्रकार का सम्बन्ध नहीं है, उसी प्रकार लोकाकाश रूपी गुफा में प्रत्येक द्रव्य अपने अपने द्रव्य में अन्तर्मग्न रहने वाले अपने अपने अनन्त धर्मों के चक्र को चुम्बन करते हैं, स्पर्श करते हैं तथापि एक दूसरे को स्पर्श नहीं करते हैं। ऐसा जानकर अपने गुणों के समूह की ओर सन्मुख होवे तो सम्यदर्शन ज्ञान चारित्र की प्राप्ति होवे, तो गुणों के समूह को द्रव्य कहते हैं समझ में आया कहलावेगा अन्यथा तोते के समान रटन्त कार्यकारी नहीं है।

प्र० २३. जब सब द्रव्यों के पास अनंत अनन्त गुण है तब यह जीव पर की ओर क्यों देखता है?

उ० (१) जिनेन्द्र भगवान की आज्ञा का विश्वास ना होने से और चारों गतियों में घूमकर निगोद में जाना अच्छा लगता है इसलिए पर और विकार की ओर देखता है।

प्र० २४. जिनेन्द्र भगवान की आज्ञा का विश्वास करने के लिए और चारों गतियों से छूटने के लिए क्या करना?

उ० अपने अनन्त गुणों के पिण्ड का आश्रय श्रद्धान ज्ञान रमणता करनी चाहिये। ऐसा करने से संवर निर्जरा को प्राप्ति होकर निर्वाण की प्राप्ति होती है।

प्र० २५. भूतकाल में जितने आज तक मोक्ष गये हैं वह किस उपाय से मोक्ष गये हैं ?

उ० एक मात्र गुणों के समूह अपने अभेद पिण्ड के आश्रय से ही मोक्ष गये हैं।

प्र० २६. विदेह से जो जीव आजकल मोक्ष जा रहे हैं वह किस उपाय से?

उ० एक मात्र गुणों के समूह अपने अभेद पिण्ड के आश्रय से ही मोक्ष जा रहे हैं।

प्र० २७. भविष्य में जो मोक्ष जावेंगे, वह किस उपाय से ?

उ० वह भी एक मात्र गुणों के समूह अपने अभेद पिण्ड के आश्रय से ही मोक्ष जावेंगें।

प्र० २८' तो क्या तीनों काल में मोक्ष का उपाय एक ही है ?

उ० भूत भविष्य वर्तमान में मोक्ष का उपाय एक ही है दूसरा नहीं।

प्र० २९. तीनों कालों में मोक्ष का उपाय एक ही है ऐसा कहीं शास्त्रों में आया है ?

उ० (१) प्रवचनसार गा० ८२, १९९, २४२ में।
(२) परमात्म प्रकाश अध्याय दूसरा गा० १११, १३३।
(३) धवल भाग १३वां, पृष्ठ २८४, २८३ पर।
(४) तत्वार्थ सूत्र पहिले अध्याय का पहिला सूत्र।
(५) नियमसार गा० ९० कलश १२१ तथा गा० ३ तथा गा० की टीका।
(६) समयसार गा० १५६।
(६) छहढाला में तीसरी ढाल पहिला दोहा
(८) रत्नकरण्ड श्रावकाचार गा० २, ३,

आदि सब अनुयोगों में मोक्ष का उपाय एक ही है।

प्र० ३०. कैसा करने से जीव कभी मुक्त नहीं होगा ?

उ० (१) अपनी आत्मा के अलावा अनन्त आत्माओं का, अनन्तनंत पुद्गलों का धर्म अधर्म आकाश और लोक प्रमाण असंख्यात काल द्रव्यों का आश्रय लेने से कभी भी मुक्त नहीं होगा इसलिए हटाओ दृष्टि, पर द्रव्य के आस्तित्व से।

(२) हिंसादि अशुभभावों और दयादानपू,जा,यात्रा अणुव्रत, महाव्रत व्यवहार रत्नत्रयादि के आश्रय से कभी भी मुक्त नहीं होगा, इसलिए हटाओ दृष्टि विकारी पर्याय के अस्तित्व से।

(३) अपूर्ण पूर्ण शुद्ध पर्याय एक समय की होती है इसलिए हटावो दृष्टि अपूर्ण पूर्ण शुद्ध पर्याय के अस्तित्व से।

(४) एकमात्र अनन्त गुणों के पिण्ड ज्ञायक भगवान पर ही दृष्टि देने से धर्म की शुरूआत वृद्धि और पूर्णता होती है इसलिए एकमात्र त्रिकाली ज्ञायक स्वभाव के अस्तित्व पर दृष्टि लगावो तो कल्याण होगा।

प्र० ३१. सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्र श्रेणी अरहंत सिद्ध दशा के लिए किसका आश्रय करें ?

उ० एकमत्र अपने अनंत गुणों के अभेद पिण्ड पर दृष्टि देने से ही सम्यग्दर्शनादि श्रेणी अरहंत और सिद्ध दशा की प्राप्ति होती है।

प्र० ३२. जब मैं अनंत गुणों का अभेद पिण्ड ज्ञायक भगवान हूँ, ऐसा दृष्टि में लेले ही धर्म की शुरूआत, वृद्धि और क्रमशः पूर्णता होती है तो भगवान के दर्शन करो, पूजा करो, यात्रा करो, शास्त्र पढ़ो, अणुव्रत महाव्रत व्यवहार रत्नत्रयादि पालों का उपदेश क्यों है ?

उ० (१) प्रथम निर्विकल्प दशा शुद्धोपयोग की दशा में उपशम सम्यक्त्व की प्राप्ति होती है तथा चौथे गुणस्थान में देव गुरु शास्त्र की भक्ति आदि का विकल्प हेय बुद्धि से आता है। वैसे पांचवे गुणस्थान में अणुव्रतादि का,छठे गुणस्थान में महाव्रतादि का विकल्प हेय बुद्धि से आता है।

(२) मोक्ष नहीं हुआ, परन्तु मोक्षमार्ग हुआ है तो वहां चारित्र गुण की पर्याय में दो अंश हो जाते हैं, शुद्धि अंश और अशुद्धि अंश। तो अशुद्धि का ज्ञान कराकर स्वभाव का आश्रय पूर्ण करके उसका अभाव करे इसलिए भूमिका-नुसार यात्रा अणुव्रतादि विकल्प होता है तो बोलने की भाषा में पालन करो—ऐसा कहा जाता है।

प्र० ३३. कैसा करने से सम्यग्दर्शन होता है, और कैसा करने से सम्यग्दर्शन नहीं होता ?

उ० मैं अनन्त गुणों का अभेद पिण्ड हूँ ऐसा अभेद का आश्रय करने से सम्यग्दर्शन की प्राप्ति होती है और देव गुरु शास्त्र का दर्शन मोहनीय के क्षयादि की ओर दृष्टि करने से सम्यग्दर्शन नहीं होता है।

प्र० ३४. कैसा करने से श्रावकपना नही आता है ?

उ० सम्यग्दर्शन के बाद अनन्त गुणों के अभेद पिण्ड का आश्रय बढ़ाने से शुद्धोपयोग दशा में श्रावकपना आता है और अणुव्रतादि बाहरी क्रियाओं और शुभभावों से कभी भी श्रावकपना नहीं आता है।

प्र० ३५. कैसा करने से मुनिपना श्रेणीपना आता है और कैसा करने से श्रेणीपना नहीं आता है ?

उ० सम्यग्दर्शनादि होने बाद चौथे या पांचवें गुणस्थान में अपने गुणों

के अभेद पिण्ड का विशेष आश्रय होने से शुद्धोपयोग दशा में मुनिपना आता है श्रेणीपना आता है और २८ मूलगुणादि बाहरी क्रियाओं या विकारी भावों से कभी भी मुनिपना श्रेणीपना नहीं आता है।

प्र० ३४. तो मिथ्यादृष्टि पूजा पाठ यात्रा आदि ना करे, क्योंकि आप कहते हो सम्यग्दर्शन के बिना पूजा पाठ यात्रा आदि पर व्यवहार का आरोप भी नहीं आता है ?

उ० (१) पहिले गुणस्थान में जिज्ञासु जीवों को शास्त्राभ्यास, अध्ययन मनन, ज्ञानी पुरुषों का धर्मोपदेश श्रवण, निरन्तर उनका समागम, देव-दर्शन, पूजा भक्ति आदि शुभ भाव होते हैं किन्तु उनके व्रत तप आदि सच्चे नहीं होते हैं ?

(२) व्रत दान पूजा आदि करने वाले ज्ञानी हैं या अज्ञानी, यह जानना आवश्यक है। यदि अज्ञानी हैं तो उनके व्रत दान आदि होते नहीं, इसलिए उन्हें छोड़ने और करने ना करने का प्रश्न ही नहीं होता है। और यदि ज्ञानी हैं तो छद्मस्थ दशा में व्रत का त्याग करके अशुभ में जावे, ऐसा मानना न्याय विरुद्ध है। परन्तु ऐसा हो सकता है क्रमशः शुभ भाव को दूर करके शुद्ध भाव की वृद्धि करे, सो ठीक ही है।

प्र० ३७. मैं अनन्त गुणों का अभेद पिण्ड ज्ञायक भगवान हूँ, जबतक ऐसा अनुभव ना हो तो क्या करना ?

उ० जैसे हमने देहली जाना है और किसी वजह से देहली जाना न बने तो क्या हम देहली जाने के बजाय बम्बई चले जावेंगे ? कभी नहीं, परन्तु देहली जाने का प्रयत्न करेंगे; उसी प्रकार मुझे अनन्त गुणों के अभेद पिण्ड का अनुभव करना है यदि वह ना हो तो, मैं क्या करूँ ? अरे भाई !

उसे अनुभव का प्रयत्न करना। और यदि उसके बदले बाहरी क्रियाओं विकारी भावों में लग जावे तो आत्मा का अनुभव नहीं होगा बल्कि चारों गतियों में घूमता हुआ निगोद चला जावेगा।

प्र० ३७. क्या आत्मा का अनुभव हुवे बिना पूजा यात्रा अणुव्रतादि कुछ भी कार्यकारी नहीं है ?

उ० आत्मा का अनुभव हुवे बिना अरण्यरोदन है, कुछ भी कार्यकारी नहीं है बल्कि अनर्थकारी है। छहढाला में कहा है :—

(१) मुनिव्रत धार अनंत बार ग्रीवक उपजायो,।
पै निज आतम ज्ञान बिना सुख लेश न पायो।

(२) समयसारजी में १५४ गाथा में नपुंसक कहा है।

(३) मोक्षमार्ग प्रकाशक में मिथ्यादृष्टि पापी असंयमी कहा है।

(४) प्रवचनसार २७१ में संसार का नेता कहा है।

(५) रत्नकरण्ड श्रावकाचार में नीच कहा है।

प्र० ३८. विश्व में अज्ञानी को कितने द्रव्य दिखते हैं ?

उ० एक भी नहीं दिखता। (समयसार कलश पहला देखो)

प्र० ३९. भगवान ने द्रव्य का स्वरूप पहिले क्यों बताया ?

उ० अनादिकाल से चैतन्य आत्मा अपना द्रव्य है उसके संबंध में भूल है इसलिए द्रव्य को पहिले बताया है।

प्र० ४०. अज्ञानी लोग द्रव्य किसे कहते हैं ?

उ० रुपया, सोना, चान्दी को द्रव्य कहते हैं।

प्र० ४१. भगवान ने द्रव्य किसे बताया ?

उ० गुणों के समूह को द्रव्य कहा है।

प्र० ४२. आप गुणों के समूह को ही द्रव्य कहते हो, परन्तु भगवान ने
(१) गुण पर्ययवत् द्रव्यम् । (मोक्षशास्त्र अध्याय ५ सूत्र ३८)
(२) गुण पर्यय समुदायो द्रव्यम् (पचाध्यायी भाग १ गा ७२)
(३) गुण समुदायो द्रव्यम् । (पंचाध्यायी भाग १ गा० ७३)
(४) तथा समगुण पर्यायो द्रव्यम् (,,)
(५) द्रव्यत्वयोगाद द्रव्यम् । द्रव्य की परिभाषा कही है वह क्यों ?

उ० इनमें से किसी एक को जब मुख्य करके कहा जाता है तब शेष लक्षण भी उसमें गर्भित रूप से आ ही जाते हैं इसलिए आचार्यों ने दूसरे प्रकार से द्रव्य का लक्षण कहा है। भाव सबका एक ही है–ऐसा जानना।

प्र० ४३. अन्य मिथ्यादृष्टि लोग अपनी महिमा किस किस से मानते है ?
उ० (१) मैं पुत्र वाला (२) मैं स्त्री वाला (३) मैं रुपया पैसा वाला (४) मैं सुन्दर रूप वाला (५) मैं क्षमावाला (६) मैं महाव्रती (७) मैं अणुव्रती (८) मैं ऐलक क्षुल्लक मुनि हूँ (९) मैंने स्त्री पुत्रादि का त्याग किया है आदि अप्रयोजनभूत बातों में अपनी महिमा मानते हैं। मैं अनन्त गुणों का अभेद पिण्ड भगवान हूँ इससे अपनी महिमा नहीं मानते हैं।

प्र० ४४. भगवान ने आत्मा की महिमा किससे बताई है ?
उ० गुणों के समूह से आत्मा की, महिमा बताई है, पर और विकारी भावों से नहीं।

प्र० ४५. भगवान नें गुणों के अभेद पिण्ड को अनुभव करने से ही आत्मा की महिमा क्यों बताई ?
उ० गुणों के अभेद पिण्ड को अनुभव करने से मिथ्यात्व का अभाव

और धर्म की शुरुआत वृद्धि और पूर्णता होती है इसलिए इसकी महिमा बताई है। और पर और विकार की महिमा करने से निगोद की प्राप्ति होती है।

प्र० ४६. 'गुणों का समूह' वह द्रव्य है सो द्रव्य में गुण किस प्रकार रहते हैं ?

उ० जैसे चीनी में मिठास, अग्नि में उष्णता, सोने में पीलापन है, उसी प्रकार द्रव्य में गुण हैं।

प्र० ४७. भगवान ने द्रव्य से गुणों का कैसा संबंध बताया है ?

उ० नित्य तादात्म्य संबंध बताया है।

प्र० ४८. जैसे घड़े में बेर है उसी प्रकार द्रव्य में गुण है ना ?

उ० बिल्कुल नहीं।

(१) जैसे घड़े में बेर डाले गये हैं और निकाले जा सकते हैं, उस प्रकार द्रव्य में गुण डाले गये हैं और निकाले जा सकते हैं—ऐसा नहीं है।

(२) बेर घड़े के सम्पूर्ण भाग में नहीं है जबकि गुण द्रव्य के सम्पूर्ण भाग में होता है।

(३) बेर घड़े के सम्पूर्ण अवस्थाओं में नहीं है जबकि गुण द्रव्यी की सम्पूर्ण अवस्थाओं में रहता है।

(४) घड़ा फूट जावे तो बेर निकल जावेंगें जबकि द्रव्य में से गुण कभी निकलते नहीं, बिखरते नहीं हैं।

प्र० ४९. (१) जैसे एक थैली में सौ रुपया के पैसा भरकर मुंह बंद कर दिया वैसे ही द्रव्य में गुण है ना ?

(२) एक थैली में नमक मिर्च हल्दी आदि भरकर उसका मुंह

बन्द कर दिया वैसे ही द्रव्य में गुण हैं ना ?

(३) जैसे एक बोरे में गेहूँ भर दिया वैसे ही द्रव्य मे गुण है ना?

(४) जैसे एक थैले में चावल भरकर उसका मुंह बन्द कर दिया वैसे ही द्रव्य में गुण हैं ना ?

(५) एक किताब में ५०० पन्ने हैं उसी प्रकार द्रव्य में गुण है ना

(६) जैसे एक कमरे मे अनेक चीजें भरी हैं वैसे ही द्रव्य गुण हैं ना ?

(७) जैसे कमरे में सरसों भर दी उसी प्रकार द्रव्य में गुण हैं ना ?

(५) जैसे इस कमरे में अनन्त जीव अनान्तनन्त पुद्गल और कालाणु भरे हैं उसी प्रकार द्रव्य मे गुण हे ना ?

(६) जैसे थैली में जेवर भरे हैं उसी प्रकार द्रव्य में गुण हैं ना ?

उ० इन सबका उत्तर प्रश्न ४६ के अनुसार जबानी दो।

प्र० ५०. नित्य तादात्म्य संबंध को कब माना ?

उ० जब सम्यग्यदर्शनादि की प्राप्ति करे तब माना।

प्र० ५१. नित्य तादात्म्य संबंध को कर्ता-कर्म अधिकार समयसार में किस नाम से कहा है ? और उसका फल क्या बताया ?

उ० तादात्म्य सिद्ध संबंध बताया है उसका फल सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्र की प्राप्ति कहा है।

प्र० ५२. विकारी भावों को कर्ताकर्म में किस नाम से कहा है और उसका फल क्या बताया है ?

उ० विकारी भावों के संबंध को संयोग सिद्ध संबंध नाम बताया है उसका फल मिथ्यादर्शनादि की प्राप्ति कहा है ?

प्र० ५३. क्या शुभ भावों से निगोद की प्राप्ति होती है ?

उ० नहीं ! शुभ भाव पुण्यबंध का कारण है। और शुभ भाव से मुझे मोक्ष मिलेगा, ऐसा माने तो निगोद की प्राप्ति होती है।

प्र० ५४. विश्व में ऐसा कौन सा द्रव्य है जिसमें गुण न हो ?

उ० जिसमें गुण न हो ऐसा द्रव्य विश्व में है ही नहीं।

प्र० ५५. गुणों को कौन नहीं मानता ?

उ० श्वेताम्बर।

प्र० ५६. द्रव्य गुण भेद रूप हैं या अभेद रूप हैं ?

उ० भेद रूप भी हैं और अभेद रूप भी हैं।

प्र० ५७. द्रव्य गुण भेद रूप कैसे हैं ?

उ० संज्ञा संख्या लक्षण प्रयोजन की अपेक्षा भेद रूप है।

प्र० ५८. द्रव्य गुण अभेद रूप कैसे हैं ?

उ० प्रदेशों की अपेक्षा, क्षेत्र की अपेक्षा और काल की अपेक्षा अभेद है।

प्र० ५९. द्रव्य, गुण, 'संज्ञा' अपेक्षा भेद रूप कैसे है ?

उ० एक नाम द्रव्य है दूसरे नाम गुण हैं। यह संज्ञा भेद रूप है।

प्र० ६०. द्रव्य, गुण, संख्या अपेक्षा भेद रूप कैसे है ?

उ० द्रव्य एक है गुण अनेक हैं-यह संख्या भेद रूप है।

प्र० ६१. द्रव्य गुण लक्षण की अपेक्षा भेद रूप कैसे हैं ?

उ० (१) गुणों के समूह को द्रव्य कहते हैं।

(२) द्रव्य के सम्पूर्ण भागों में और सम्पूर्ण अवस्थाओं में रहता है उसको गुण कहते हैं। यह लक्षण भेद रूप है।

प्र० ६२. छह द्रव्यों को दो-दो भेद रूप में बांटो।

उ० (१) जीव, अजीव (२) रूपी, अरूपी (३) क्रियावती शक्ति भाववती शक्ति (४) बहुप्रदेशी और एक प्रदेशी (५) वैभाविक शक्ति सहित और वैभाविक शक्ति रहित (६) जड़ और चेतन (७) एक अनेक।

प्र० ६३. जीव अजीव कौन २ है ?

उ० जीव मात्र जीव, बाकी अजीव है।

प्र० ६४. रूपी और अरूपी कौन २ हैं ?

उ० पुद्गल रूपी है बाकी अरूपी है।

प्र० ६५. क्रियावती शक्ति और भाववती शक्ति वाले कौन २ है ?

उ० जीव पुद्गल क्रियावती शक्ति वाले और सब द्रव्य तथा जीव पुद्गल भी भाववती शक्ति वाले हैं।

प्र० ६६. बहुप्रदेशी और एक प्रदेशी कौन हैं ?

उ० परमाणु और काल द्रव्य एक प्रदेशी हैं बाकी बहुप्रदेशी हैं।

प्र० ६७. वैभाविक शक्ति सहित और रहित कौन २ हैं ?

उ० जीव और पुद्गल वैभाविक शक्ति सहित है बाकी रहित हैं।

प्र० ६८. जड़ चेतन कौन २ हैं ?

उ० जीव चेतन बाकी अचेतन है।

प्र० ६९. एक और अनेक कौन २ हैं ?

उ० धर्म अधर्म आकाश एकेक हैं बाकी अनेक हैं।

प्र० ७०. जीव के कितने भेद हैं ?

उ० संसारी और सिद्ध दो भेद हैं।

प्र० ७१. जगत में क्षेत्र की अपेक्षा सबसे बड़ा द्रव्य कौन सा है ?

उ० आकाश द्रव्य है।

प्र० ७२. अस्तिकाय किसे कहते हैं ?

उ० बहुप्रदेशी द्रव्य को अस्तिकाय कहते हैं ।

प्र० ७३. छः द्रव्यों के वर्णन से क्या समझना चाहिए ?

उ० (१) जीव सदा अरूपी होने से उसके गुण सदैव अरूपी हैं इस लिए किसी भी काल में निश्चय से या व्यवहार से हाथ पैर आदि का चलाना, स्थिर रखना, धर्म, अधर्म, आकाश काल आदि द्रव्यों से हे आत्मा तेरा किसी भी प्रकार का संबंध नहीं है ऐसा निर्णय करे इसलिये छः द्रव्यों का वर्णन किया है ।

(२) अनादिनिधन छहों द्रव्य भिन्न २ अपनी २ मर्यादा सहित परिणमते हैं कोई किसी का परिणमाया परिणमता नहीं ऐसा जानकर भेद विज्ञान कर ज्ञाता स्वभाव की श्रद्धा करके ज्ञाता दृष्टा रहना छः द्रव्यों के जानने का फल है ।

प्र० ७४. (१) शास्त्रों में कर्म चक्कर कटाता है (२) जीव पुद्गल का और पुद्गल जीव का उपकार करता है (३) धर्म चलाता है (४) अधर्म ठहराता है (५) आकाश जगह देता है (६) काल परिणमाता है ऐसे कथन का क्या अर्थ है ?

उ० निमित्तादि की अपेक्षा कथन किया है इसका अर्थ ऐसा है नहीं ?]

प्र० ७५. द्रव्य का लक्षण तत्वार्थ सूत्र में क्या बताया है ?

उ० सत् द्रव्यलक्षणम् उत्पाद व्यय ध्रौव्ययुक्तं सत् (मो० शा० अ०५-सू० २९-३०)

प्र ७६. क्या तात्पर्य रहा ?

उ० हे आत्मा! तेरा अन्य द्रव्यों से कोई संबंध नहीं है ऐसा तू जान, मान ।

प्र० ७७. किन-किन द्रव्यों का क्षेत्र समान है ?

उ० जीव, धर्म, अधर्म द्रव्य का क्षेत्र असंख्यात प्रदेशी है ।

प्र० ७८. सब असंख्य काल द्रव्यों का त्रिकाल निमित्त किस-किस द्रव्य को है ?

उ० धर्म अधर्म और लोकाकाश को है ?

प्र० ७९. नीचे लिखे वाक्यों पर छः द्रव्यों को साबित करो ।

१ गिरनार पर्वत ऊपर से (आकाश द्रव्य)	नेमिनाथ भगवान (जीव द्रव्य)	मोक्ष पधारे (धर्मास्तिकाय)	
२ बाहुबलि स्वामी (जीव द्रव्य)	चन्द्रगिरी पहाड़ पर (आकाश)	खड्गासन बिराजे हैं (अधर्मास्तिकाय)	
३ मैं (जीव द्रव्य)	सम्मेद शिखर की (आकाश)	यात्रा को जाता हूं (धर्मास्तिकाय)	
४ प्रभात समय में (कालद्रव्य)	मन्दिर (आकाश)	होकर आवो (धर्मास्तिकाय)	
५ स्वर्णपुरी में (आकाश)	मानस्तम्भ (पुद्गल)	सुन्दर स्थित है (अधर्म द्रव्य)	
६ आत्मा का हित (जीव)	तुरन्त करो (काल द्रव्य)		
७ आठ वर्ष का (काल द्रव्य)	मनुष्य (जीव)	महाविदेह से (आकाश)	मोक्ष जाता है (धर्मास्तिकाय)
८ भगवान (जीव)	सिद्धालय में (आकाश)	सादि अनन्त (काल)	स्थित रहते हैं (अधर्मास्तिकाय)
९ महावीर प्रभु (जीव द्रव्य)	पावापुरी से (आकाश)	चौथे काल में (काल)	मोक्ष पधारे (अधर्मास्तिकाय)

१० सीमंधर प्रभु (जीव)	समवशरण में (आकाश)	छः छः घड़ी (काल)	उपदेश देते हैं (पुद्गल)
११ गौतम स्वामी (जीव)	मानस्तम्भ के (पुद्गल)	पास आये तो (धर्मास्तिकाय)	हृदय पलटा (काल द्रव्य)
१२ इन्द्र (जीव)	सदैव सुरालयमेंसे (काल) (आकाश)	तीर्थंकर देव के (जीव–पुद्गल)	दर्शन को आते हैं (धर्मद्रव्य)
१३ कुन्दकुन्दाचार्य (जीव)	कुन्दनगिरी पर (आकाश)	निजध्यान में (अधर्मास्तिकाय)	स्थित हैं
१४ मुनिवर (जीव)	ग्रीष्म ऋतु में (काल)	पहाड़ पर (आकाश)	ध्यान में बैठे हैं (अधर्मास्तिकाय)
१५ नन्दीश्वर धाम में (आकाश)	शाश्वत (काल)	जिनमन्दिर (पुद्गल)	स्थित हैं (अधर्मास्तिकाय)
१६ समोशरणमें (आकाश)	बैठे हुए हों (अधर्म द्रव्य)	तब ,, (काल)	जीवोंको तीव्र कषाय नहीं होती (जीव)
१७ जीव (जीव द्रव्य)	संसार से (आकाश)	मोक्ष	पधारा (धर्मास्तिकाय)

पाठ ९

गुण

प्र० १. गुण किसे कहते हैं ?

उ० जो द्रव्य के सम्पूर्ण भागों में और उसकी सम्पूर्ण अवस्थाओं में रहता है उसे गुण कहते हैं।

प्र० २. गुण के पर्यायवाची शब्द क्या २ हैं ?

उ० शक्ति, धर्म, स्वभाव आदि गुण के पर्यायवाची शब्द है।

प्र० ३. गुण की व्याख्या में 'क्षेत्र वाचक' शब्द क्या हैं ?

उ० सम्पूर्ण भागों में।

प्र० ४. गुण की व्याख्या में 'काल वाचक' शब्द क्या है ?

उ० सम्पूर्ण अवस्थाओं में।

प्र० ५. गुण की व्याख्या में 'द्रव्य वाचक' शब्द क्या है ?

उ० द्रव्य में।

प्र० ६. गुण की व्याख्या में 'भाव वाचक' शब्द क्या हैं ?

उ० उसे गुण कहते हैं।

प्र० ७. गुण की व्याख्या में 'सम्पूर्ण भागों' में क्या सूचित करता है '

उ० (१) गुण द्रव्य के पूरे हिस्से में होता है कम ज्यादा में नहीं होत है।

(२) जितना बड़ा गुण है उतना ही बड़ा क्षेत्र (स्थान) द्रव्य का है।

प्र० ८. गुण की व्याख्या में "सम्पूर्ण अवस्थाओं में" क्या सूचित करता है ?

उ० (१) गुण द्रव्य से कभी भी, किसी भी समय पृथक नहीं होता है।

(२) गुण और द्रव्य दोनों अनादि अनन्त हैं।

प्र० ९. गुण की व्याख्या को द्रव्य क्षेत्र काल भाव में बांटो ?

उ० (१) जो द्रव्य.........यह द्रव्य को सूचित करता है।

(२) सम्पूर्ण भागों में.........यह क्षेत्र को सूचित करता है।

(३) सम्पूर्ण अवस्थाओं में......यह काल को सूचित करता है।

(४) उसको गुण कहते हैं......यह भाव को सूचित करता है।

प्र० १०. द्रव्य पहले या गुण पहले ?

उ० दोनों एक साथ अर्थात् अनादि अनन्त हैं।

प्र० ११. द्रव्य में गुण किस प्रकार हैं ?

उ० जैसे गुड़ में मिठास, पानी में ठन्डक और अग्नि में उष्णता है उसी प्रकार द्रव्य में गुण है।

प्र० १२. द्रव्य में गुण किस प्रकार नहीं है ?

उ० जैसे घड़े में बेर हैं उस प्रकार नहीं हैं।

प्र० १३. द्रव्य के पूरे हिस्से और सब हालतों में रहने वाले कौन हैं ?

उ० उसके गुण।

प्र० १४. जिस प्रकार माचिस में सींक हैं उसीप्रकार द्रव्य में गुण हैं ना ?

उ० बिल्कुल नहीं, क्योंकि माचिस डिब्बी के पूरे भाग और सम्पूर्ण अवस्थाओं में नही है।

प्र० १५. द्रव्य में गुण दूध में जल की तरह है ?

उ० बिल्कुल नहीं, क्योंकि दूध और जल का संयोगसंबंध है जबकि द्रव्य गुण का नित्य तादात्म्य संबंध हैं।

प्र० १६. एक गुण द्रव्य के कितने भाग में है ?

उ० सम्पूर्ण भाग में।

प्र० १७. गुण कितने प्रकार के हैं ?

उ० सामान्य और विशेष दो प्रकार के हैं।

प्र० १८. सामान्य गुण किसे कहते हैं ?

उ० जो समस्त द्रव्यों में रहते हैं उन्हें सामान्य गुण कहते हैं।

प्र० १९. विशेष गुण किसे कहते हैं ?

उ० जो सब द्रव्यों में न रहकर अपने अपने द्रव्यों में रहते हैं उन्हे विशेष गुण कहते हैं।

प्र० २०. सामान्य गुणों का क्षेत्र बड़ा है या विशेष गुणों का ?

उ० दोनों का समान क्षेत्र है क्योंकि दोनों द्रव्य के सम्पूर्ण भागो में रहते हैं।

प्र० २१. प्रत्येक द्रव्य में रहने वाले प्रत्येक गुण को भिन्न भिन्न किस आधार से करोगे ?

उ० प्रत्येक गुण के भिन्न भिन्न लक्षण से।

प्र० २२. द्रव्य से गुण किस अपेक्षा पृथक है ?

उ० किसी भी अपेक्षा से (निश्चय या व्यवहार से) द्रव्य से गुण पृथक नहीं है ।

प्र० २३. ऐसे द्रव्यों के नाम बताओ जिसमें सामान्य गुण हों और विशेष गुण ना हों ?

उ० ऐसा एक भी गुण नहीं है क्योंकि जहाँ सामान्य गुण होते हैं वहां विशेष गुण नियम से होते ही हैं ।

प्र० २४. द्रव्य में सामान्य गुण ना माने तो क्या नुकसान है ?

उ० द्रव्यपना ही ना रहे अर्थात् द्रव्य के नाश का प्रसंग उपस्थित हो जावेगा ।

प्र० २५. द्रव्य में विशेष गुण ना माने तो क्या नुकसान है ?

उ० एक द्रव्य को दूसरे द्रव्य से अलग न कर सकेंगे ?

प्र० २६. द्रव्य गुण में संख्या भेद है या नहीं ?

उ० है । द्रव्य एक और गुण अनेक ऐसा प्रत्येक द्रव्य में है ।

प्र० २७. ज्ञान गुण को गुण की परिभाषा में लगाओ ?

उ० ज्ञान गुण जीव द्रव्य के सम्पूर्ण भागों में और सम्पूर्ण अवस्थाओं मे त्रिकाल रहता है ।

प्र० २८. (१) रस गुण (२) चारित्र गुण (३) ज्ञान गुण (४) गति हेतुत्व गुण (५) वर्ण गुण (६) परिणमन हेतुत्व गुण (७) गंध गुण (८) अवगाहन हेतुत्व गुण (६) आनन्द गुण (१०) अस्पर्श गुण आदि सबको गुण की परिभाषा में लगाकर बताओ ?

उ० (१) रस गुण पुद्गल द्रव्य के सम्पूर्ण भागों में और सम्पूर्ण अवस्थाओं में त्रिकाल रहता है । इसी प्रकार जबानी ६ लगाओ ।

प्र० २९. रस गुण जीव द्रव्य के सम्पूर्ण भागों और सम्पूर्ण अवस्थाओं में त्रिकाल पाया जाता है ?

उ० ठीक नहीं है क्योंकि रस गुण पुद्गल द्रव्य के सम्पूर्ण भागों और सम्पूर्ण अवस्थाओं में पाया जाता है जीव द्रव्य में नहीं।

प्र० ३०. (१) [illegible] गुण द्रव्य के सम्पूर्ण भागों और सम्पूर्ण अवस्थाओं में पाया जाता है।

(२) क्रियावतीशक्ति द्रव्य के सम्पूर्ण भागों और सम्पूर्ण अवस्थाओं में पायी जाती है।

(३) गति हेतुत्व गुण जीव द्रव्य के सम्पूर्ण भागों और सम्पूर्ण अवस्थाओं में पाया जाता है।

(४) चारित्र गुण जीव और पुद्गल के सम्पूर्ण भागों और सम्पूर्ण अवस्थाओं में पाया जाता है।

(५) गंध गुण जीव द्रव्य के सम्पूर्ण भागों और सम्पूर्ण अवस्थाओं में पाया जाता है।

(६) ज्ञान गुण जीव द्रव्य के सम्पूर्ण भागों और सम्पूर्ण अवस्थाओं में पाया जाता है।

ऊपर के वाक्यों में गुण की परिभाषा जिस द्रव्य के साथ लगाई है वह ठीक है या नहीं। यदि गलत है तो ठीक बताओ ?

उ० जबानी लगाकर बताओ [प्रश्न २९ के मुताबिक]

प्र० ३१. गुणों के जानने से क्या लाभ है ?

उ० मैं जीव द्रव्य हूँ और अपने अनन्त गुणों से भरपूर तीनों काल श्रीमंत हूँ, रंक नहीं हूं, ऐसा जानकर अपने में लीन होना वह गुणों के जानने का लाभ है।

प्र० ३२. छहों द्रव्यों में पाया जाता है उसे क्या कहते हैं ?
उ० सामान्य गुण ।

प्र० ३३. जो अपने अपने द्रव्य में पाया जाता है उसे क्या कहते हैं ?
उ० विशेष गुण ।

प्र० ३४. सामान्य गुण कितने हैं ?
उ० अनेक हैं लेकिन मुख्य छह हैं ।

प्र० ३५. सामान्य गुण अनेक हैं उनमें छह को ही मुख्य क्यों किया ?
उ० यहां पर मोक्षमार्ग की सिद्धि करना है इसलिए इन छह सामान्य गुणों से मोक्षमार्ग की सिद्धि जानकर मुख्य किया है ।

प्र० ३६. मुख्य छह सामान्य गुण कौन २ से हैं ?
उ० १. अस्तित्व २. वस्तुत्व ३. द्रव्यत्व ४. प्रमेयत्व ५. अगुरूलघुत्व ६. प्रदेशत्व ।

प्र० ३७. जीव के विशेष गुण कितने हैं और कौन २ से हैं ?
उ० जीव के विशेष गुण भी अनेक हैं । दर्शन ज्ञान चारित्र, सुख, क्रियावती शक्ति, वैभाविक शक्ति इत्यादि ।

प्र० ३८. पुद्गल के विशेष गुण कितने हैं और कौन २ से हैं ?
उ० पुद्गल के विशेष गुण अनेक हैं । स्पर्श, रस, गंध, वर्ण, क्रियावती शक्ति वैभाविक शक्ति इत्यादि ।

प्र० ३९. धर्म द्रव्य के विशेष गुण कितने हैं और कौन २ से हैं ?
उ० धर्म द्रव्य के विशेष गुण अनेक हैं । गति हेतुत्व इत्यादि ।

प्र० ४०. अधर्म द्रव्य के विशेष गुण कितने हैं और कौन २ से हैं ?
उ० अधर्म द्रव्य के विशेष गुण अनेक हैं । स्थिति हेतुत्व इत्यादि ।

प्र० ४१. आकाश द्रव्य के विशेष गुण कितने हैं और कौन २ से हैं ?

उ० आकाश द्रव्य के विशेष गुण अनेक हैं। अवगाहन हेतुत्व इत्यादि

प्र० ४२. काल द्रव्य के विशेष गुण कितने हैं और कौन २ से हैं ?

उ० काल द्रव्य के विशेष गुण अनेक हैं। परिणमन हेतुत्व इत्यादि।

प्र० ४३. विशेष गुण में इत्यादि शब्द क्या सूचित करता है ?

उ० और भी विशेष गुण हैं यह सूचित करता है।

प्र० ४४. प्रत्येक गुण के कार्य क्षेत्र की मर्यादा कितनी है ?

उ० प्रत्येक गुण अपना अपना ही कार्य करता है। एक द्रव्य में रहने वाले अनन्त गुण एक दूसरे का कुछ भी नहीं करते हैं। जैसे ज्ञान गुण ज्ञान का ही कार्य करेगा। श्रद्धा चारित्र का कार्य नहीं करेगा।

प्र० ४५. छह द्रव्य, उनके गुण और उनकी पर्यायों को जानने का क्या फल ?

उ० १. स्व पर का भेद विज्ञान

२. अनादि काल से जो पर में करने धरने की बुद्धि और पर को भोगने की बुद्धि का अभाव होना।

३. सम्यग्दर्शनादि की प्राप्ति कर क्रमशः मोक्ष की ओर जाना। यह द्रव्य गुण पर्यायों के जानने का फल है।

प्र० ४६. द्रव्य के सामान्य और विशेष गुणों पर से द्रव्य की परिभाषा बनाओ ?

उ० सामान्य और विशेष गुणों के समूह को द्रव्य कहते हैं।

प्र० ४७. चैतन्य गुण गति कर सकता है ?

उ० जब जीव क्षेत्रान्तर रूप गमन करता है तब चैतन्य गुण जीव के साथ अभेद होने से उसका भी गमन होता है, उसमें जीव की क्रियावती शक्ति अन्तरंग निमित्त है।

—•—

पाठ १०

पर्याय

प्र० १. पर्याय किसे कहते हैं ?

उ० गुणों के विशेष कार्य को पर्याय कहते है ।

प्र० २. दर्शन मोहनीय के क्षय से सम्यक्त्व हुआ तो पर्याय को कब माना ? कब नहीं ?

उ० सम्यक्त्व हुआ यह पर्याय है श्रद्धा गुण में से आई तब पर्याय को माना और दर्शन मोहनीय के क्षय से आई तो पर्याय को नहीं माना।

प्र० ३. (१) केवल ज्ञानावर्णी के अभाव से केवल ज्ञान होता है। (२) आंख से ज्ञान होता है। (३) गुरू से ज्ञान होता है। (४) दिव्यध्वनि से ज्ञान की प्राप्ति होती है। (५) चारित्र मोहनीय के क्षय से चारित्र होता है। (६) बाल बच्चों से सुख मिलता है। (७) भगवान के आश्रय से सम्यक्त्व होता है। (८) कुम्हार घड़ा बनाता है। (९) बाई रोटी बनाती है। (१०) कुन्दकुन्द भगवान ने समयसार बनाया आदि वाक्यों में पर्याय को कब माना और कब नहीं ?

उ० (१) केवल ज्ञानावर्णी के अभाव से केवल ज्ञान होता है। इस वाक्य में, जिसको गुणों के विशेष कार्य को पर्याय कहते हैं, ऐसा ज्ञान होगा वह जानता है ज्ञान गुण का विशेष कार्य केवल ज्ञान है केवल ज्ञानावर्णी के अभाव से नहीं है। और केवल ज्ञानावर्णी का अभाव पर्याय है। यह

कार्माण वर्गणा का कार्य है। ऐसा ज्ञान वर्ते तो पर्यायको माना कहा जावेगा। और कोई ज्ञानावर्णी के अभाव से ही केवल ज्ञान होता है ऐसा माने तो उसने गुणों के विशेष कार्य को पर्याय कहते हैं, नहीं माना।

इसी प्रकार ६ वाक्यों में जबानी लगाकर बताओ।

प्र० ४. पर्याय का सच्चा ज्ञान हो, तो क्या हो ?

उ० पर से मेरी पर्याय आती है - ऐसी खोटी बुद्धि का अभाव होकर सम्यक्त्व की प्राप्ति हो जाती है। पर्याय का सच्चा ज्ञान सम्यग्दृष्टि को ही होता है, मिथ्यादृष्टि को नहीं।

प्र० ५. पर्याय के कितने भेद हैं ?

उ० व्यंजन पर्याय और अर्थ पर्याय यह दो भेद हैं।

प्र० ६. पर्याय किससे होती है ?

उ० द्रव्य और गुणों से पर्याय होती हैं।

प्र० ७. द्रव्य पर्याय किसे कहते हैं ?

उ० अनेक द्रव्यों में एकपने का ज्ञान होना द्रव्य पर्याय है।

प्र० ८. द्रव्य पर्याय के कितने भेद होते हैं ?

उ० दो भेद हैं। (१) समानजाति द्रव्य पर्याय (२) असमानजाति द्रव्य पर्याय।

प्र० ९. समान जाति द्रव्य पर्याय किसे कहते हैं ?

उ० एक जाति के अनेक द्रव्यों में एकपने का ज्ञान समानजाति द्रव्य पर्याय है।

प्र० १०. असमानजाति द्रव्य पर्याय किसे कहते हैं ?

उ० दो या अनेक जाति के द्रव्यों में एकपने का ज्ञान असमानजाति द्रव्य पर्याय है।

प्र० ११. समानजाति द्रव्य पर्याय के कुछ नाम बताओ ?

उ० (१) बिस्तरा (२) कम्बल (३) रोटी (४) हलवा (५) मेज (६) किताब। इसमें अनेक पुद्गलों में एकपने का ज्ञान होता है। यह समान जाति द्रव्य पर्याय के उदाहरण हैं।

प्र० १२. असमान जाति द्रव्य पर्याय के कुछ नाम बताओ ?

उ० आत्मा, द्रव्य कर्म और शरीर के संबंध को असमानजाति द्रव्य पर्याय कहते हैं।

प्र० १३. समानजाति और असमानजाति द्रव्य पर्याय का ज्ञान कब कहा जावेगा।

उ० (१) बिस्तरा कहते ही अनन्त पुद्गल परमाणुओं में एक-एक परमाणु अपने २ गुण पर्याय सहित पृथक-पृथक कार्य कर रहा है तब बिस्तरा को समान जाति द्रव्य पर्याय कहा जावेगा।

(२) मनुष्य कहते ही आत्मा पृथक, तैजस शरीर, कार्मण शरीर, औदारिक शरीर भाषा और मन में एक २ परमाणु स्वतंत्र रूप से परिणमन कर रहा है तथा आत्मा का पुद्गलों से कोई सम्बन्ध नहीं है। तब मनुष्य को असमानजाति द्रव्य पर्याय कहा जावेगा। इसका ज्ञान सम्यग्दृष्टि को ही होता; है मिथ्यादृष्टि को नहीं।

प्र० १४. गुण पर्याय किसे कहते हैं ?

उ० गुण के कार्य को गुण पर्याय कहते हैं।

प्र० १५. गुण पर्याय के कितने भेद हैं ?

उ० व्यंजन पर्याय और अर्थ पर्याय यह दो भेद हैं।

प्र० १६. व्यंजन पर्याय किसे कहते हैं ?

उ० द्रव्य के प्रदेशत्व गुण के विशेष कार्य को व्यंजन पर्याय कहते हैं।

प्र० १७. अर्थ पर्याय किसे कहते हैं ?

उ० प्रदेशत्व गुण के अतिरिक्त शेष सम्पूर्ण गुणों के विशेष कार्य को अर्थ पर्याय कहते हैं।

प्र० १८. व्यंजन पर्याय के कितने भेद हैं ?

उ० दो भेद हैं। स्वभाव व्यंजन पर्याय और विभाव व्यंजन पर्याय

प्र० १९. स्वभाव व्यंजन पर्याय किसे कहते हैं ?

उ० पर द्रव्य के संबध रहित द्रव्य का जो आकार हो उसे स्वभाव व्यंजन पर्याय कहते हैं। जैसे सिद्ध भगवान का आकार और परमाणु का आकार स्वभाव व्यंजन पर्याय है।

प्र० २०. विभाव व्यंजन पर्याय किसे कहते हैं ?

उ० पर निमित्त के संबंध वाले द्रव्य का जो आकार हो उसे विभाव व्यंजन पर्याय कहते हैं। जैसे जीव की नर-नारकादि पर्याय।

प्र० २१. अर्थ पर्याय के कितने भेद हैं ?

उ० दो भेद हैं—स्वभाव अर्थ पर्याय और विभाव अर्थ पर्याय।

प्र० २२. स्वभाव अर्थ पर्याय किसे कहते हैं ?

उ० पर निमित्त के संबंध रहित जो अर्थ पर्याय होती है उसे स्वभाव अर्थ पर्याय कहते हैं जैसे जीव का केवलज्ञान, क्षायिक सम्यग्दर्शन आदि।

प्र० २३. विभाव अर्थ पर्याय किसे कहते हैं ?

उ० पर निमित के संबध वाली जो अर्थ पर्याय होती है उसे विभाव अर्थ पर्याय कहते हैं। जैसे जीव में रागद्वेषादिक।

प्र० २४. मिथ्यादृष्टि संसारी जीवों में कौन २ सी पर्यायें होती हैं ?

उ० विभाव व्यंजन पर्याय और विभाव अर्थ पर्याय ही होती है।

प्र० २५. सिद्ध भगवान में कौन २ सी पर्याय होती है ?

उ० स्वभाव व्यंजन पर्याय और स्वभाव अर्थ पर्याय ही होती हैं।

प्र० २६. चौथे गुणस्थान से १४वें गुण स्थान तक कौन २ सी पर्यायें होती हैं ?

उ० विभाव व्यंजन पर्याय, स्वभाव अर्थ पर्याय और विभाव अर्थ पर्याय इसी प्रकार तीन प्रकार की पर्यायें होती हैं।

प्र० २७. चौथे से १४वें गुणस्थान तक तीन पर्यायें एक सी होती हैं या कुछ अन्तर है ?

उ० चौथे गुणस्थान से १४वें गुणस्थान तक जितनी शुद्धि है वह स्वभाव अर्थ पर्याय है और जो अशुद्धि है वह विभाव अर्थ पर्याय है। विभाव व्यंजन पर्याय में अन्तर नहीं है।

प्र० २८. मिथ्यादृष्टि के अस्तित्व आदि गुण शुद्ध कहे जाते हैं उसकी उनके स्वभाव अर्थ पर्याय क्यों नहीं कही जाती है ?

उ० जैसे किसी के पास हीरा जवाहरात सोना चांदी दबा पड़ा है परन्तु उसे मालूम नहीं है। उसी प्रकार मिथ्यादृष्टि को अपना पता न होने से स्वभाव अर्थ पर्याय नहीं कही जाती है।

प्र० २९. परमाणु में कौन २ सी पर्यायें होती हैं ?

उ० स्वभाव व्यंजन पर्याय और स्वभाव अर्थ पर्याय ही होती है ।

प्र० ३०. स्कंध दशा में कौन २ सी पर्यायें होती हैं ?

उ० विभाव व्यंजन और विभाव अर्थ पर्यायें ही होती हैं ।

प्र० ३१. जैसे आत्मा में चौथे गुणस्थान से स्वभाव अर्थ पर्याय, विभाव अर्थ पर्याय में अन्तर हो जाता है क्या ऐसा स्कंध में नहीं होता है ?

उ० स्कंध में नहीं होता है ।

प्र० ३२. चारों प्रकार की पर्यायें किस द्रव्य में संभव है ?

उ० जीव और पुद्गल में ही संभव है बाकी में नहीं ।

प्र० ३३. धर्म अधर्म आकाश और काल में कौन २ सी पर्यायें होती हैं ?

उ० स्वभाव व्यंजन पर्याय और स्वभाव अर्थ पर्यायें ही अनादि अनन्त होती रहती हैं इनमें कभी विभाव होती ही नहीं हैं ।

प्र० ३४. द्रव्यलिंगी मुनि को कौन २ सी पर्याय होती हैं ?

उ० विभाव व्यंजन और विभाव अर्थ पर्याय ही होती हैं ।

प्र० ३५. प्रत्येक द्रव्य में व्यंजन पर्याय कितनी और अर्थ पर्याय कितनी ?

उ० प्रत्येक द्रव्य में व्यंजन पर्याय एक ही होती है और अर्थ पर्यायें अनेक ही होती हैं ।

प्र० ३६. प्रत्येक द्रव्य में व्यंजन पर्याय एक क्यों है ?

उ० प्रत्येक द्रव्य में प्रदेशत्व गुण एक ही है उसके परिणमन को व्यंजन पर्याय कहते हैं इसलिये प्रत्येक द्रव्य में व्यंजन पर्याय एक एक ही है ।

प्र० ३७. अर्थ पर्याय अनेक क्यों हैं ?

उ० प्रदेशत्व गुण को छोड़कर बाकी गुणों के परिणमन को अर्थ

पर्याय कहते हैं इसलिये प्रदेशत्व गुण के परिणमन को छोड़ कर बाकी जितने गुण हैं उतनी अर्थ पर्याय हैं इसलिए अर्थ पर्याय अनेक हैं।

प्र० ३८. तुम्हारे आत्मा में व्यंजन पर्याय कितनी होती है और अर्थ पर्याय कितनी ?

उ० मेरी आत्मा में व्यंजन पर्याय एक और अर्थ पर्यायें अनेक हैं।

प्र० ३९. किताब में अर्थ पर्याय कितनी और व्यंजन पर्याय कितनी हैं ?

उ० किताब परमाणुओं की समानजाति द्रव्य पर्यायें है इसलिये किताब में जितने परमाणु हैं उतनी व्यंजन पर्याय हैं और एक २ परमाणु में अनेक अनेक अर्थ पर्यायें हैं।

प्र० ४०. जीव द्रव्य में विभाव व्यंजन पर्याय कहाँ तक होती हैं ?

उ० १४वें गुणस्थान तक विभाव व्यंजन पर्याय होती है।

प्र० ४१. सादि अनन्त स्वभाव व्यंजन पर्याय किस द्रव्य में होती है ?

उ० सिद्ध दशा में सादि अनन्त स्वभाव व्यंजन पर्याय जीव में होती है।

प्र० ४२. स्वभाव व्यंजन पर्याय में अन्तर और स्वभाव अर्थ पर्याय में समानता, क्या कभी ऐसा होता है ?

उ० सिद्ध दशा में आकार अलग अलग अर्थात् किसी का सात हाथ, किसी का ५०० धनुष होने से स्वभाव व्यंजन पर्याय में अन्तर होता है और स्वभाव अर्थ पर्याय में समानता होती है।

प्र० ४३. स्वभाव व्यंजन पर्याय में समानता और स्वभाव अर्थ पर्याय में अन्तर होता हो क्या ऐसा कभी होता है ?

उ० परमाणु में सबका आकार एक प्रदेशी होने से स्वभाव व्यंजन

पर्याय में समानता है और स्वभाव अर्थ पर्याय में अन्तर होता है।

प्र० ४४. पहले अर्थ पर्याय शुद्ध हो फिर व्यंजन पर्याय शुद्ध हो, ऐसा किन द्रव्यों में होता है ?

उ० किसी किसी गुण की अर्थ पर्याय पहले शुद्ध होती है जब जीव द्रव्य के सब गुणों की अर्थ पर्याय परिपूर्ण शुद्ध हो जाय उसी समय व्यंजन पर्याय भी शुद्ध हो जाती है।

प्र० ४५. स्वभाव व्यंजन पर्याय और स्वभाव अर्थ पर्याय किस द्रव्य में एक साथ होती है ?

उ० पुद्गल परमाणु में होती है।

प्र० ४६. नीम्बू के पेड़ में कौन कौन सी, कैसे २ पर्याय घट सकती हैं ?

उ० (१) नीम्बू का पेड़, आत्मा, कार्माण, तैजस, औदारिक शरीर की अपेक्षा देखें तो असमानजाति द्रव्य पर्याय है।

(२) आत्मा से रहित नीम्बू को विचारे तो समानजाति द्रव्य पर्याय है।

(३) नीम्बू को आकार की अपेक्षा विचारें तो विभाव व्यंजन पर्याय है।

(४) नीम्बू को प्रदेशत्व गुण को छोड़कर बाकी गुणों की अपेक्षा विचारें तो विभाव अर्थ पर्यायें हैं। कथन करने वाले के अभिप्राय की अपेक्षा यह बात है।

प्र० ४७. (१) दाल (२) किताब (३) महावीर भगवान (४) शब्द (५) धन (६) मकान (७) सोना (८) केवल ज्ञान (९) क्षायिक सम्यक्त्व (१०) दर्शनमोहनीय का क्षय (११) ज्ञानावर्णी का उदय में समानजाति द्रव्य पर्याय, असमान जाति द्रव्य पर्याय, व्यंजन पर्याय, अर्थ पर्याय जो लग सकती हैं

उसे लगाकर समझाओ ?

उ०　(१) दाल अनेक पुद्गलों परमाणुओं का पिण्ड होने से समान-जाति द्रव्य पर्याय है।

(२) आकार की अपेक्षा विभाव व्यंजन पर्याय है।

(३) प्रदेशत्व गुण को छोड़कर बाकी गुणों की अपेक्षा विभाव अर्थ पर्यायें हैं।

इसी प्रकार बाकी ६ लगाओ।

प्र० ४८. अचेतन दाल का कर्ता कौन है। कौन नहीं है ?

उ०　दाल का कर्ता आहार वर्गणा है, जीव और दूसरी वर्गणा नहीं है।

प्र० ४९. समयसार का कर्ता कौन है, कौन नहीं है ?

उ०　समयसार का कर्ता शब्दों की अपेक्षा भाषा वर्गणा और पत्र की अपेक्षा आहार वर्गणा है। श्री कुन्दकुन्द भगवान अमृतचन्द्राचार्य भगवान और दूसरी वर्गणा नहीं हैं ?

प्र० ५०. रोटी का कर्ता कौन है, कौन नहीं है ?

उ०　रोटी का कर्ता आहार वर्गणा है, बाई चकला, बेलन, तवा और दूसरी वर्गणा नहीं है।

प्र० ५१. शब्द का कर्ता कौन है, और कौन नहीं है ?

उ०　शब्द का कर्ता भाषा वर्गणा है, जीव और दूसरी वर्गणा नहीं है।

प्र० ५२. मन का कर्ता कौन है, और कौन नहीं है ?

उ०　मन का कर्ता मनोवर्गणा है, जीव और दूसरी वर्गणा नहीं है,

प्र० ५३. मकान का कर्ता कौन है, कौन नहीं है ?

उ० मकान का कर्ता आहार वर्गणा है, पैसा, सेठ, कारीगर और दूसरी वर्गणा नहीं है।

प्र० ५४. बर्फ का कर्ता कौन है और कौन नहीं है ?

उ० बर्फ का कर्ता आहार वर्गणा है, जीव, बिजली, आईसबाक्स और दूसरी वर्गणा नहीं हैं।

प्र० ५५. कपड़े का कर्ता कौन है और कौन नहीं है ?

उ० कपड़े का कर्ता आहार वर्गणा है मिल-मालिक, मशीनें और दूसरी वर्गणा नहीं है।

प्र० ५६. आलमारी का कर्ता बढ़ई है या कौन है ?

उ० अलमारी का कर्ता आहार वर्गणा है बढ़ई, औजार और दूसरी वर्गणा नहीं है।

प्र० ५७. (१) सम्यक् दर्शन (२) सम्यग्ज्ञान (३) सम्यग्चारित्र (४) केवलज्ञान (५) केवल दर्शन (६) पलंग (७) मीठा आम (८) तैजस शरीर (९) कार्माण शरीर (१०) ज्ञानावर्णी का क्षयोपशम (११) दिव्य ध्वनि (१२) रसगुल्ला (१३) धोती (१४) कपड़ा मैला से साफ हुआ (१५) सिद्ध दशा (१६) कम्पन का अभाव (१७) वीर्य की पूर्ण प्रगटता (१८) यथाख्यात चारित्र (१९) शुक्ल लेश्या (२०) नामकर्म

I इनमें यह क्या है, II इनका कर्ता कौन है, III इनका कर्ता कौन नहीं है IV पर्याय को कब माना, V पर्याय को कब नहीं माना इत्यादि वाक्यों को समझाओ ?

उ० सम्यग्दर्शन स्वभाव अर्थ पर्याय है। सम्यग्दर्शन का कर्ता आत्मा का श्रद्धा गुण है। सम्यग्दर्शन का कर्ता दर्शन मोहनीय के उपशमादि और

देव गुरू नहीं हैं। सम्यग्दर्शन श्रद्धा गुण में से आया तब पर्याय को माना और सम्यग्दर्शन दर्शन मोहनीय के उपशमादि से आया तो पर्याय को नहीं माना। इसी प्रकार १६ वाक्यों का जबाब दो।

प्र० ५८. समानजाति द्रव्य पर्यायों के नाम कहां आये हैं उनके कुछ नाम बताओ ?

उ० (१) द्रव्य संग्रह के अजीव अधिकार में तथा तत्वार्थ सूत्र में आये हैं।

(२) शब्द, बंध, स्थूल, संस्थान, तम, छाया, आताप, उद्योत इत्यादि है।

प्र० ५९. (१) आहारक शरीर (२) तैजस शरीर (३) कार्मण शरीर (४) वैक्रियक शरीर (५) औदारिक शरीर I क्या है, II इनका कर्ता कौन है, III इनका कर्ता कौन नहीं है, IV पर्याय को कब माना, V पर्याय को कब नही माना इत्यादि का उत्तर दो ?

उ० (१) आहारक शरीर मुनि की अपेक्षा विचारें तो असमानजाति द्रव्य पर्याय है। और शरीर की अपेक्षा विचारे समानजाति द्रव्य पर्याय है।

इसका कर्ता आहार वर्गणा है ऋद्धिधारी मुनि और दूसरी वर्गणा नहीं है। आहारक शरीर का कर्ता आहार वर्गणा है तब पर्याय को माना। और आहारक शरीर का कर्ता मुनि को माने या और वर्गणा को माने तो पर्याय को नही माना।

इसी प्रकार चार वाक्यों का जबाब दो।

प्र० ६०. (१) मतिज्ञान (२) श्रुत ज्ञान (३) चक्षु दर्शन (४) अवग्रह

(५) ध्वनि (६) छाया (७) मिथ्यादर्शन (८) मिथ्याज्ञान (९) मिथ्याचारित्र (१०) क्रोध (११) लोभ (१२) दया (१३) दान का भाव आदि का I कर्ता कौन है ? II कर्ता कौन नहीं है ? III यह क्या है ? IV पर्याय को कब माना ? V और पर्याय को कब नहीं माना ?

उ० I मतिज्ञान का कर्ता आत्मा का ज्ञान गुण है, II और कोई दूसरा गुण कर्म या विकार नहीं है, III यह पर्याय है IV ज्ञान गुण में से आया तब पर्याय को माना V कहीं और से माने तो पर्याय को नहीं माना बाकी १२ का उत्तर इसी प्रकार दो ।

प्र० ६१. जीव द्रव्य की पर्याय कितनी बड़ी है ?

उ० जितना बड़ा जीव द्रव्य है उतनी ही बड़ी उसकी पर्याय है । अर्थात् असंख्ययात प्रदेशी आत्मा है; और असंख्यात प्रदेशी उसके गुण और पर्यायें हैं ।

प्र० ६२. प्रत्येक द्रव्य की पर्याय कितनी बड़ी है और क्यों है ?

उ० जितना बड़ा द्रव्य है उतनी ही बड़ी पर्याय है क्योंकि पर्याय भी द्रव्य के सम्पूर्ण भाग में होती है ।

प्र० ६३. प्रत्येक पर्याय की स्थिति कितनी है ?

उ० कोई भी पर्याय हो उसकी स्थिति एक समय मात्र ही होती है।

प्र० ६४. १- शक्कर २- बर्फ ३- अन्धेरा ४- उजाला ५- समोशरण ६- बादलों में रंग का बदलना ७- मेघ गर्जना ८- स्याही ९- शीशे का प्रतिबिम्ब यह क्या है ?

उ० १- शक्कर:- पुद्गल द्रव्य के रस गुण की विभाव अर्थ पर्याय है।

२- बर्फ:- पुद्गल द्रव्य के स्पर्श गुण की ठंडी विभाव अर्थ

पर्याय है ।

३- अन्धेरा:- पुद्गल के वर्ण गुण की विभाव अर्थ पर्याय है ।

४- उजाला:- पुद्गल के वर्ण गुण की विभाव अर्थ पर्याय है ।

५- समोशरण:- पुद्गल के प्रदेशत्व गुण की विभाव व्यंजन पर्याय है ।

६- बादलों का रंग:- पुद्गल के वर्ण गुण की विभाव अर्थ पर्याय है ।

७- मेघ गर्जना:- भाषा वर्गणा के शब्द रूप समानजाति द्रव्य पर्याय है ।

८- स्याही:- पुद्गल के वर्ण गुण की विभाव अर्थ पर्याय है ।

९- शीशे का प्रतिबिम्ब: पुद्गल के वर्ण गुण की विभाव अर्थ पर्याय है ।

प्र० ६५. पहिले अर्थ पर्याय शुद्ध हो फिर व्यंजन पर्याय शुद्ध हो ऐसा किन द्रव्यों में होता है ?

उ० मात्र जीव द्रव्य में ही होता है औरों में नहीं ।

१- चौथे गुणस्थान में श्रद्धा गुण की अर्थ पर्याय शुद्ध होती है ।

२- १२वें गुणस्थान में चारित्र गुण की अर्थ पर्याय शुद्ध होती है

३- १३वें गुणस्थान में ज्ञानदर्शन सुख और वीर्य गुणों की अर्थ पर्याय परिपूर्ण शुद्ध होती हैं ।

४- १४वें गुणस्थान में योग गुण की अर्थ पर्याय शुद्ध होती है।

५- सिद्ध दशा होने पर वैभाविक गुण, क्रियावती शक्ति तथा

अव्याबाध, अवागाहनत्व, अगुरुलघुत्व, सूक्ष्मत्व आदि प्रतिजीवी गुणों की अर्थ पर्यायें शुद्ध होती हैं। और उसी समय व्यंजन पर्याय शुद्ध होती है।

प्र० ६६. द्रव्य गुण पर्याय तीनों सत् हैं ?

उ० द्रव्य गुण त्रिकाल सत् हैं। पर्याय एक समय का सत् है।

प्र० ६७. वर्तमान अज्ञान दूर होकर सच्चा ज्ञान होने में कितना समय लगता है ?

उ० एक समय।

प्र० ६८. द्रव्य की भूतकाल की पर्यायों की संख्या अधिक है या भविष्य काल की पर्यायों की ?

उ० द्रव्य की भूत की पर्यायें अनन्त हैं भविष्य की पर्याय उनसे भी अनन्त गुनी अधिक हैं।

प्र० ६९. ज्ञान गुण और दर्शन गुण की पर्यायों के नाम बताओ ?

उ० १. मति,श्रुत, अवधि, मनःपर्याय, केवलज्ञान. कुमति, कुश्रुत, कुअवधि आठ पर्यायें हैं।

२. चक्षु, अचक्षु, अवधि, केवल यह दर्शन गुण की चार पर्यायें हैं।

प्र० ७०. चारित्र गुण की शुद्ध पर्यायों के नाम बताओ ?

उ० १– स्वरूपाचरण चारित्र २– देश चारित्र ३– सकल चारित्र ४– यथाख्यात चारित्र।

प्र० ७१. चारित्र गुण का परिणमन कितने प्रकार का है ?

उ० शुद्ध और अशुद्ध। अशुद्ध के दो भेद-शुभ और अशुभ हैं।

प्र० ७२. इस गुण का परिणमन कितने प्रकार का है ?

उ० पांच प्रकार का है।

प्र० ७३. १. गंध २. स्पर्श ३. वर्ण ४. क्रियावती शक्ति ५. वैभाविक शक्ति ६. श्रद्धा ७. गति हेतुत्व ८. स्थिति हेतुत्व ६. आनन्द गुण १०. योग गुण - इनका परिणमन कितने प्रकार का है ?

उ० १. गंध गुण का परिणमन सुगंध और दुर्गंध दो प्रकार का है। इसी प्रकार ६ के उत्तर दो।

प्र० ७४. पर्याय को कब जाना ?

उ० अपने स्वभाव का आश्रय लिया तो पर्याय को जाना ।

पाठ ११

अस्तित्व गुण

प्र० १. अस्तित्व गुण क्या है ?

उ० प्रत्येक द्रव्य का सामान्य गुण है।

प्र० २. अस्तित्व गुण किसे कहते हैं ?

उ० जिस शक्ति के कारण से द्रव्य का कभी नाश ना हो और किसी से भी उत्पन्न ना हो उस शक्ति को अस्तित्व गुण कहते हैं।

प्र० ३. अस्तित्व गुण को गुण की परिभाषा में बताओ ?

उ० अस्तित्व गुण छहों द्रव्यों के सम्पूर्ण भागों में और सम्पूर्ण अवस्थाओं में त्रिकाल रहता है।

प्र० ४. अस्तित्व गुण छहों द्रव्यों के सम्पूर्ण भागों में और सम्पूर्ण अवस्थाओं में त्रिकाल रहता है इसको जानने से हमें क्या लाभ है?

उ० (१) किसी भी द्रव्य का (चाहे जड़ हो या चेतन) कभी भी नाश नहीं होता और ना कभी उत्पन्न ही होता है।

(२) सभी द्रव्य अजर अमर हैं, ऐसा पता चल जाता है।

प्र० ५. जब कोई द्रव्य का नाश और उत्पन्नपना नहीं होता और सब अजर अमर हैं, इससे हमें क्या लाभ है ?

उ० जब कोई भी द्रव्य का नाश नहीं होता और उत्पन्न भी नहीं

होता और सब अजर अमर हैं तो मेरा भी कभी नाश नहीं होता है । कभी उत्पन्न भी नहीं होता है इसलिए मैं अजर अमर भगवान हूं, ऐसा पता चला ।

प्र० ६. अस्तित्व गुण को जानने से दूसरा लाभ क्या रहा ?

उ० सात प्रकार के भयों का अभाव हो गया क्योंकि मैं कभी उत्पन्न और नाश नहीं होता ।

प्र० ७. सात प्रकार के भय कौन कौन से हैं ?

उ० (१) इस लोक का भय (२) परलोक का भय (३) वेदना भय (४) अरक्षा भय (५) अगुप्ति भय (६) मरण भय (७) आकस्मिक भय ।

प्र० ८. अस्तित्व गुण जानने से तीसरा लाभ क्या रहा ?

उ० अनादिकाल से मिथ्यादृष्टि को ईश्वर रक्षा करता है, बनाता है नाश करता है ऐसी बुद्धि थी । अस्तित्व गुण को जानने से जब किसी का नाश उत्पन्नपना नहीं होता, सब अनादि अनन्त हैं तब ईश्वर रक्षा करता है, बनाता है, और नाश करने की खोटी बुद्धि का अभाव हो गया ।

प्र० ९. अस्तित्व गुण को जानने से चौथा लाभ क्या रहा ?

उ० अनादि काल से दिगम्बर धर्म धारण करने पर भी कर्म बनाता है, कर्म रक्षा करता है, कर्म नाश करता है, ऐसी खोटी बुद्धि थी । अस्तित्व गुण को जानने से जब किसी का बनना, रक्षा, नाश होता ही नहीं, सब अनादि अनन्त हैं तब कर्म बनाता है, रक्षा करता है और नाश करता है इस खोटी बुद्धि का अभाव हो गया ।

प्र० १०. जिस समय आदिनाथ भगवान थे, उस समय तुम थे या नहीं ?

उ० अस्तित्व गुण के कारण हमें पता चला उस काल में हम किसी भी क्षेत्र में थे।

प्र० ११. क्या ईश्वर जगत का कर्ता है ?

उ० बिल्कुल नहीं, क्योंकि अस्तित्व गुण के कारण छहों द्रव्य स्वयं सिद्ध अनादि अनन्त है, तब ईश्वर जगत का कर्ता है यह बात असत्य है।

प्र० १२. क्या ईश्वर जगत की रक्षा करता है ?

उ० बिल्कुल नहीं, क्योंकि (१) प्रत्येक वस्तु अपनी अनन्त शक्ति से स्वयं रक्षित है। (२) प्रत्येक द्रव्य में अस्तित्व गुण होने से ईश्वर जगत की रक्षा करता है यह बात असत्य है।

प्र० १३. क्या ईश्वर जगत का नाश करता है ?

उ० बिल्कुल नहीं, क्योंकि अस्तित्व गुण के कारण किसी भी द्रव्य का नाश नहीं होता तो ईश्वर जगत का नाश करता है यह बात असत्य है।

प्र० १४. क्या कर्म जगत का कर्ता है ?

उ० बिल्कुल नहीं, क्योंकि अस्तित्व गुण के कारण छहों द्रव्य स्वयं-सिद्ध अनादि अनन्त हैं तब कर्म जगत का कर्ता हैं यह बात असत्य है।

प्र० १५. क्या कर्म जगत की रक्षा करता है ?

उ० बिल्कुल नहीं, क्योंकि प्रत्येक वस्तु अपनी अनन्त शक्तियों से स्वयं रक्षित है और प्रत्येक द्रव्य में अस्तित्व गुण होने से कर्म जगत की रक्षा करता है यह बात असत्य है।

प्र० १६. क्या कर्म जगत का नाश करता है ?

उ० बिल्कुल नहीं, क्योंकि अस्तित्व गुण के कारण किसी भी द्रव्य

का नाश नहीं होता तो कर्म जगत का नाश करता है यह बात असत्य है।

प्र० १७. अस्तित्व गुण को जानने का बड़ा पांचवां लाभ क्या रहा ?

उ० (१) अनादिकाल की पर में करने कराने की, भोक्ता-भोग्य की बुद्धि का अभाव हो गया।

(२) मिथ्यात्व का अभाव सम्यग्दर्शन की प्राप्ति यह पांचवां लाभ है।

प्र० १८. अस्तित्व गुण कितने हैं ?

उ० जितने द्रव्य हैं उतने अस्तित्व गुण हैं।

प्र० १९. जितने द्रव्य हैं उतने अस्तित्व गुण क्यों हैं ?

उ० प्रत्येक द्रव्य में एक एक अस्तित्व गुण होने से जितने द्रव्य हैं उतने अस्तित्व गुण हैं।

प्र० २०. द्रव्य का लक्षण 'सत्' क्यों कहा ?

उ० अस्तित्व गुण के कारण।

प्र० २१. मैं हमेशा रहूँगा या नहीं ऐसी शंका वाला क्या भूलता है ?

उ० अस्तित्व गुण को भूलता है।

प्र० २२. अस्तित्व गुण की अपेक्षा छहों द्रव्यों को क्या कहते हैं ?

उ० सत् कहते हैं।

प्र० २३. सत् क्या है ?

उ० द्रव्य का लक्षण है। ('सत् द्रव्यलक्षणम्' तत्वार्थ सूत्र पांचवां अध्याय सूत्र २९)

प्र० २४. सत् किसे कहते हैं ?

उ० उत्पाद व्यय ध्रौव्य सहित हो उसे सत् कहते हैं। इसलिये प्रत्येक द्रव्य में अपने ही कारण पर्याय अपेक्षा नई अवस्था की उत्पत्ति, पूर्व पर्याय का व्यय और द्रव्य की अपेक्षा ध्रौव्य रहना ऐसी स्थिति प्रत्येक द्रव्य और गुण में त्रिकाल हो रही है।

प्र० २५. क्या उत्पाद व्यय ध्रौव्य का समय पृथक पृथक है ?

उ० तीनों का समय एक ही है आगे पीछे नहीं।

प्र० २६. क्या प्रत्येक द्रव्य में और गुण में उत्पाद, व्यय, ध्रौव्य त्रिकाल होता है ?

उ० हां प्रत्येक द्रव्य और गुण में उत्पाद, व्यय, ध्रौव्य, त्रिकाल होता है।

प्र० २७. द्रव्य के उत्पाद, व्यय, ध्रौव्य को समझाओ ?

उ० (१) मनुष्य पर्याय का अभाव, देवपने की प्राप्ति, आत्मा कायम।

(२) अयोगी दशा का अभाव, सिद्ध दशा की प्राप्ति, आत्मा कायम।

(३) आम में खट्टेपने का अभाव, मीठेपने की प्राप्ति, आम कायम।

इसी प्रकार समझ लेना।

प्र० २८. गुण में उत्पाद, व्यय, ध्रौव्य एक २ समय में किस प्रकार हैं ?

उ० (१) मिथ्यात्व का अभाव, सम्यक्त्व की प्राप्ति, श्रद्धा गुण कायम।

(२) ठंडे का अभाव, गर्म की उत्पत्ति, स्पर्श गुण कायम।

(३) श्रुत ज्ञान का अभाव, केवल ज्ञान की प्राप्ति, ज्ञान गुण कायम।

प्रत्येक गुण में एक एक समय में उत्पाद, व्यय, ध्रौव्य हुआ है, होता रहेगा और हो रहा है ऐसा वस्तु स्वभाव है।

प्र० २६. (१) चारित्र (२) ज्ञान गुण (३) क्षायिक सम्यक्त्व (४) गति हेतुत्व गुण (५) गंध (६) वर्ण (७) मीठा (८) ठंडा (९) चारित्रमोहनीय का अभाव (१०) ज्ञानावर्णी का अभाव (११) श्रुतज्ञान की प्राप्ति आदि में उत्पाद. व्यय ध्रौव्य लगाओ ?

उ० (१) चारित्र गुण कायम, पहली पर्याय का व्यय, नई पर्याय का उत्पाद।

(२) ज्ञान की पहली पर्याय का व्यय, नवीन पर्याय की उत्पत्ति ज्ञान गुण ध्रुव।

(३) क्षयोपशम सम्यक्त्व का व्यय, क्षायिक सम्यक्त्व का उत्पाद श्रद्धा गुण ध्रुव।

(४) पहली पर्याय का व्यय, दूसरी पर्याय का उत्पाद, गति हेतुत्व गुण ध्रुव।

(५) सुगंध का व्यय, दुर्गंध का उत्पाद, गंध गुण ध्रुव।

(६) काले का व्यय, सफेद का उत्पाद, वर्ण गुण ध्रुव।

(७) खट्टे का व्यय, मीठे का उत्पाद, रस गुण ध्रुव।

(८) गर्म का व्यय, ठंडे का उत्पाद, स्पर्श गुण ध्रुव।

(९) चारित्र मोहनीय के क्षयोपशम का व्यय, चारित्र मोहनीय के क्षय का उत्पाद, कार्माण वर्गणा ध्रुव।

(१०) ज्ञानावर्णी क्षयोपशम का व्यय, ज्ञानावर्णी के क्षय का उत्पाद, कार्माण वर्गणा ध्रुव ।

(११) मतिज्ञान का व्यय, श्रुतज्ञान का उत्पाद, ज्ञान गुण ध्रुव

प्र० ३०. (१) क्रियावती शक्ति (२) देखकर ज्ञान हुआ (३) चखकर ज्ञान हुआ इनमें उत्पाद व्यय ध्रौव्य लगाओ ?

उ० (१) गमनरूप परिणमन का अभाव, स्थिररूप परिणमन का उत्पाद और क्रियावती शक्ति ध्रुव ।

(२) ज्ञान की पहली पर्याय का अभाव, नवीन पर्याय की उत्पत्ति, ज्ञान गुण ध्रुव ।

(३) ऐसा ही तीसरे नम्बर में है [दूसरे नम्बर के समान]

प्र० ३१. अस्तिपना वस्तु का लक्षण क्या सिद्ध करता है ?

उ० विश्व में जाति अपेक्षा छः द्रव्य हैं। प्रत्येक द्रव्य में अनंत २ गुण हैं। हरएक शक्ति की स्वतः समय समय पर अवस्था बदलती रहती है। शक्ति कायम रहती है जैसे "सत् द्रव्य लक्षणम्"। अपनी अवस्थाओं को पलटते पलटते ही द्रव्य अनादि अनंत कायम रहता है। इसकी सिद्धि के किये "उत्पाद व्यय ध्रौव्य युक्त सत्" अर्थात् वस्तु प्रत्येक समय अपनी सत्ता कायम रखते हुए भी पूर्व अवस्था का व्यय, नवीन अवस्था की उत्पत्ति करता रहता है।

प्र० ३२. अस्तित्व गुण से सिद्ध होता है सब द्रव्यों के गुणों की पर्याय क्रमबद्ध क्रम-नियमित है उसमें जरा भी हेर फेर नहीं हो सकता?

उ० १. मोक्षमार्ग प्रकाशक में कहा है "अनादि निधन वस्तु जुदी

जुदी अपनी २ मर्यादा लिये परिणमै है कोई किसी का परिणमाया परिणमता नाही'' ऐसा वस्तु स्वभाव है और दूसरे को परिणमाने का भाव मिथ्यादर्शन है।

२. रावण ने सीता को जैसा राम पर प्यार करती है वैसा मुझे प्यार करे ऐसे भाव के कारण तीसरे नरक गया, और जो किसी भी द्रव्य के परिणमाने का भाव करता है वह निगोद का पात्र है।

प्र० ३३. जो वस्तु है कायम रहकर बदलना ही उसका स्वभाव है तब हम इसका ऐसा कर दें, वैसा कर दें, ऐसी मान्यता क्यों पाई जाती है?

उ० १. उसे चारों गतियों में घूमकर निगोद में जाना अच्छा लगता है।

२. वह जिनेन्द्र भगवान की आज्ञा से बाहर निगोद का पात्र है।

प्र० ३४. जब सब क्रमबद्ध है हमारा कार्य क्या रहा?

उ० मात्र ज्ञाता दृष्टा ही रहा।

प्र० ३५. यदि हमारा कार्य सिद्ध भगवान के समान ज्ञाता दृष्टा ही रहा तो हमारे में सिद्ध भगवान में क्या फरक रहा?

उ० कुछ भी फर्क नहीं रहा।

प्र० ३६. तो विश्व की व्यवस्था सब व्यवस्थित ही है?

उ० प्रवचनसार गा० ९३ में ''पारमेश्वरी व्यवस्था'' कहा है विश्व की व्यवस्था सब व्यवस्थित ही है इसमें जरा भी हेर फेर नहीं हो सकता।

प्र० ३७. तो निमित से उपादान में कुछ होता है ऐसा लोग क्यों कहते हैं?

उ० चारों गतियों में घूमकर निगोद में जाना है इसलिए कहते हैं।

प्र० ३८. उत्पाद किसे कहते हैं ?

उ० द्रव्य में नवीन पर्याय की उत्पत्ति को उत्पाद कहते हैं।

प्र० ३९. व्यय किसे कहते हैं ?

उ० पूर्व पर्याय के नाश को व्यय कहते हैं।

प्र० ४०. ध्रौव्य किसे कहते हैं ?

उ० उत्पाद और व्यय में द्रव्य गुण का सदृशतारूप स्थायी रहना उसे ध्रौव्य कहते हैं।

प्र० ४१. (१) कुम्हार ने घड़ा बनाया (२) बाई ने रोटी बनाई (३) कारीगर ने बैटरी बनाई (४) बाई ने अग्नि से पानी गर्म किया (५) मैंने किताब बनाई (६) धर्म द्रव्य ने जीव पुद्गलों को ठहराया (७) केवल-दर्शनावर्णी के अभाव से केवलदर्शन हुआ (८) उसने गाली दी तो क्रोध आया (९) मैंने झाड़ू दी आदि वाक्यों में से (१) घड़ा बना (२) रोटी (३) बैटरी बनी (४) पानी गर्म हुआ (५) किताब बनाई (६) जीव पुद्गल ठहरे (७) केवलदर्शन हुआ (८) क्रोध आया (९) झाड़ू दी। इनमें उत्पाद व्यय ध्रौव्य लगाकर यह बताओ इनसे आपको क्या लाभ रहा ?

उ० (१) कुम्हार ने घड़ा बनाया—पिण्ड का अभाव, घड़े की उत्पत्ति, मिट्टी कायम रही। कुम्हार चाक डण्डे से बना इस खोटी मान्यता का अभाव हो गया।

इसी प्रकार ८ वाक्यों में लगाओ।

प्र० ४२. अस्तित्व गुण की जाति कितने प्रकार की है ?

उ० छह प्रकार की हैं क्योंकि विश्व में छह ही जाति के द्रव्य हैं।

प्र० ४३. अस्तित्व गुण का क्षेत्र कितना बड़ा ? और क्यों ?

उ० जितना द्रव्य का हैं उतना है। क्योंकि अस्तित्व गुण द्रव्य के सम्पूर्ण भागों में पाया जाता है।

प्र० ४४. जीव के अस्तित्व गुण का क्षेत्र कितना बड़ा है ?

उ० असंख्यात प्रदेशी है।

प्र० ४५. जीव के अलावा और किसी द्रव्य के अस्तित्व गुण का क्षेत्र असंख्यात प्रदेशी है ?

उ० धर्म, अधर्म के अस्तित्व का क्षेत्र भी असंख्यात प्रदेशी है।

प्र० ४६. काल और परमाणु के अस्तित्व गुण का क्षेत्र क्या है ?

उ० एक प्रदेशी है।

प्र० ४७. आकाश के अस्तित्व गुण का क्षेत्र क्या है ?

उ० अनन्त प्रदेशी है।

प्र० ४८. अस्तित्व गुण का काल कितना है ?

उ० जितना द्रव्य का काल है उतना ही अस्तित्व गुण का है अर्थात् अनादिअनन्त है क्योंकि अस्तित्व गुण द्रव्य की सम्पूर्ण अवस्थाओं में त्रिकाल रहता है।

प्र० ४९. अस्तित्व गुण को प्रथम नम्बर पर क्यों रखा ?

उ० प्रथम वस्तु में "हैय्यातीपना" "मौजूदगीपना" है ऐसा निर्णय होने पर ही और धर्म हो सकते हैं इसलिए अस्तित्व गुण को प्रथम रखा है।

प्र० ५०. ज्ञानी अस्तित्व गुण को कैसा जानता है अज्ञानी कैसा जानता है ?

उ० (१) मेरा अस्तित्वपना मेरे द्रव्य गुण पर्याय से है पर से नहीं ऐसा ज्ञानी जानता है ।

(२) मेरा अस्तित्वपना पर से है ऐसा अज्ञानी मानता है ।

प्र० ५१. ऐसी कौन सी खोटी मान्यता है जिससे सम्यक्त्व नहीं होता है ?

उ० अपने अस्तित्व को स्वीकार नहीं करके, पर के अस्तित्व से अपना अस्तित्व मानने के कारण सम्यग्दर्शन नहीं होता है ।

प्र० ५२. अस्तित्व कितने प्रकार का है ?

उ० चार प्रकार का है ।

प्र० ५३. किस किसके अस्तित्व से धर्म की प्राप्ति नहीं होती और किसके अस्तित्व से होगी ?

उ० (१) पर के अस्तित्व से (२) विकारी पर्याय के अस्तित्व से (३) अपूर्ण पूर्ण शुद्ध पर्याय के अस्तित्व से कभी भी धर्म की प्राप्ति नहीं होगी । एक मात्र अपने त्रिकाल स्वभाव के अस्तित्व के आश्रय से ही धर्म की शुरूआत, बृद्धि और पूर्णता होती है ।

प्र० ५४. अस्तित्व गुण जड़ है या चेतन है ? और क्यों ?

उ० दोनों हैं । जीव का चेतन है बाकी द्रव्य का अस्तित्व गुण जड़ है ।

प्र० ५५. मैं अजर अमर हूँ कैसे जाना ?

उ० अस्तित्व गुण से जाना ।

प्र० ५६. मेरा कभी नाश नहीं होता ना कभी उत्पन्नपना होता है, कैसे जाना ?

उ० अस्तित्व गुण से जाना।

प्र० ५७. कोई ईश्वर को सृष्टि का कर्ता, रक्षा, नाश करने वाला कहे तो ?

उ० अस्तित्व गुण को नहीं माना।

प्र० ५८. कोई कर्म को सृष्टि का कर्ता, रक्षा, नाश करने वाला कहे तो ?

उ० अस्तित्व गुण को नहीं माना।

प्र० ५९. अस्तित्व गुण रूपी है या अरूपी ? और क्यों ?

उ० दोनों है। पुद्गल का अस्तित्व गुण रूपी बाकी द्रव्यों का अरूपी है।

प्र० ६०. किन द्रव्यों का अस्तित्व गुण गति करता है ?

उ० जीव और पुद्गल का।

प्र० ६१. धर्म अधर्म आकाश और काल द्रव्यों का अस्तित्व गुण गति क्यों नहीं करता है ?

उ० धर्मादि द्रव्यों मे क्रियावती शक्ति नाम का गुण न होने से इसका अस्तित्व गुण गति नहीं करता है।

प्र० ६२. अस्तित्व गुण को समझने से अन्य मत की किस किस मान्यता का अभाव हो जाता है ?

उ० (१) ईश्वर रक्षा, उत्पन्न, नाश करता है। (२) कर्म रक्षा, उत्पन्न, नाश करता है ऐसी अन्य मत की खोटी मान्यता का नाश हो जाता है।

प्र० ६३. अस्तित्व गुण किस द्रव्य में नहीं है ?

उ० ऐसा कोई भी द्रव्य नहीं है जिसमें अस्तित्व गुण न पाया जावे क्योंकि अस्तित्व गुण प्रत्येक द्रव्य का सामान्य गुण है।

प्र० ६४. त्रिकाल कायम कौन रहता है ?

उ० प्रत्येक द्रव्य और उसके गुण।

प्र० ६५. प्रत्येक द्रव्य गुण त्रिकाल कायम क्यों रहते हैं ?

उ० अस्तित्व गुण के कारण।

प्र० ६६. इस लोक का भय परलोक का भय मिलने के लिए किस गुण का मर्म आनना चाहिए ?

उ० अस्तित्व गुण का मर्म जानना चाहिये।

प्र० ६७. कोई द्रव्य पहले न हो और बाद में उत्पन्न हो जाये क्या ऐसा होता है ?

उ० बिल्कुल नहीं क्योंकि प्रत्येक द्रव्य अस्तित्व गुण के कारण अनादि अनंत है।

प्र० ६८. संसार में किसी भी द्रव्य का कभी भी नाश नहीं होता है और कभी भी उत्पन्न नहीं होता इसकी सिद्धि कितने प्रकार से हो सकती है ?

उ० करोड़ों प्रकार से हो सकती है प्रथमानुयोग के शास्त्रों में तो पृष्ठ पृष्ठ पर यह बात लिखी है।

प्र० ६९. अस्तित्व की सिद्धि करोड़ों प्रकार से हो सकती है तो कुछ अस्तित्व की सिद्धि सदैव है ? उदाहरण देकर समझाओ।

उ० (१) भगवान महावीर से (२) पार्श्वनाथ भगवान से (३) जो करता है वही भोगता है (४) व्यन्तरों से (५) सर्प से (६) राग निकल जाता है ज्ञान रहता है (७) वृद्धपना से (८) प्रथमानुयोग से (९)

चरणानुयोग से (१०) करणानुयोग से (११) द्रव्यानुयोग से होती है।

प्र० ७०. भगवान महावीर से अतिस्त्व की सिद्धि किस प्रकार होती है ?

उ० जो आदिनाथ भगवान के समय में मारीच था। वह ही कितने बार निगोद गया। वह ही शेर बना और शेर पर्याय में सम्यक्त्व प्राप्त किया। उसी जीव में नन्द राजा के भव में तीर्थंकर गोत्र बाधा। वह ही जीव महावीर २४वां तीर्थंकर कहलाया। वह ही मोक्ष गया। देखो आत्मा वह का वह रहा तो अस्तित्व की सिद्धि हो गई। मिथ्यादृष्टि पर्याय दृष्टि करके पायल बना रहता है ज्ञानी स्वभावदृष्टि करके मोक्ष चला जाता है।

प्र० ७१. पार्श्वनाथ भगवान से अस्तित्व की सिद्धि किस प्रकार होती है ?

उ० (१) मरूभूति के भाव में कमठ के पत्थर गिराने से मृत्यु हुई (२) यही (उसी ने) हाथी की पर्याय में सम्यग्दर्शन प्राप्त किया और सर्प के काटने से मृत्यु हुई (३) वही अग्निवेग मुनि हुआ वहां पर अजगर निगल गया (४) वही वज्रनाभि चक्रवर्ती बना (५) वही आनंद मुनि बना। (६) वही आराधना करते २ तेईसवां तीर्थंकर पार्श्वनाथ हुआ। मरूभूति से लेकर सिद्ध दशा तक वही आत्मा रहा। देखो इससे अस्तित्व की सिद्धि हो गई।

प्र० ७२. जो करता है वही भोगता है इस पर से अस्तित्व की सिद्धि कैसे ?

उ० जैसे मनुष्य भव में शुभ भाव किये उसका फलदेव पर्याय में भोगा। द्रव्य दृष्टि से देखा जावे तो जो करता है वही भोगता है। जैसे मनुष्य पर्याय में जिस जीव में शुभ भाव किये उसी जीव द्रव्य ने देवादि पर्याय में स्वयं किये गये फल को भोगा।

इसलिये भूतकाल में जिस जीव के जैसे भाव किये। वही जीव वर्तमान में भोगता है दूसरा नहीं। इस पर से अस्तित्व की सिद्धि हो गई।

प्र० ७३. व्यन्तरों से अस्तित्व की सिद्धि कैसे ?

उ० किसी बाई को व्यतर आता था वह बोलती थी "मैं इसकी जिठानी हूं" यह मेरा सब माल खा गई है मैं इसे नहीं छोड़ूगीं। इस पर से सिद्ध हुआ पहले जिठानी का जीव था वही वर्तमान में व्यंतर हुआ। जीव जो जिठानी में था वही व्यंतर में रहा इस प्रकार व्यंतरों से अस्तित्व की सिद्धि होती है।

प्र० ७४. "अस्तित्व की सिद्धि" (१) सर्प से (२) राग निकल जाता है ज्ञान रह जाता है (३) वृद्धपने से (४) प्रथमानुयोग से (५) चरणानुयोग से (६) करणानुयोग से (७) द्रव्यानुयोग से (८) कमठ से (९) आदिनाथ भगवान से करो ?

उ० सबका उत्तर जबानी दो।

प्र० ७५. अस्तित्व गुण की सिद्धि अनेक प्रकार से की। तो अभी तक जितने लाभ अस्तित्व गुण को जानने से आये उन्हें जरा बताओ ?

उ० (१) मैं अजर अमर भगवान हूँ।

(२) सात प्रकार के भयों का अभाव हो गया।

(३) ईश्वर जगत की रक्षा उत्पन्न, नाश करता है इस खोटी मान्यता का अभाव।

(४) कर्म जगत की रक्षा, उत्पन्न, नाश करता है इस खोटी मान्यता का अभाव।

(५) सर्व द्रव्य अनादि अनन्त है किसी किसी भी समय अभाव नहीं होता है।

(६) अपने अस्तित्व की ओर दृष्टि करके धर्म की प्राप्ति होना यह अस्तित्व गुण को जानने का लाभ है।

प्र० ७६. अस्तित्व का क्या अर्थ है ?

उ० अस्ति अर्थात् होना। त्व अर्थात् पाना। होना पाना।

प्र० ७७. जो है उसका नाश नहीं होता और उत्पन्न नहीं होता कैसे जाना ?

उ० अस्तित्व गुण से जाना।

प्र० ७८. छहों द्रव्य भूतकाल में थे, वर्तमान में हैं और भविष्य में रहेंगे कैसे जाना ?

उ० अस्तित्व गुण से जाना।

प्र० ७९: मैं हूँ और जगत भी है। मैं अपने से हूँ, जगत जगत से है, कैसे जाना ?

उ० अस्तित्व गुण से जाना।

प्र० ८० मुझे कोई मार जिला नहीं सकता कैसे जाना ?

उ० अस्तित्व गुण से जाना ?

प्र० ८१ मैं स्वतन्त्र अनादिअनन्त अपने ही कारण हूं, मेरा किसी से नाश और उत्पत्ति नहीं होती है यह कैसे जाना ?

उ० अस्तित्व गुण से जाना।

प्र० ८२. अस्तित्व गुण का रहस्य बताने वाला कोई दोहा है ?

उ० हां है—

कर्ता जगत का मानता जो कर्म या भगवान को ।
वह भूलता है लोक में, अस्तित्व गुण के ज्ञान को ।।
उत्पाद-व्ययुत वस्तु है फिर भी सदा ध्रुवता धरे ।
अस्तित्व गुण के योग से कोई नहीं जग में मरे ।।

प्र० ८३. 'उत्पाद-व्ययुत वस्तु है फिर भी सदा ध्रुवता धरे' इस कथन का अनादि से जिनवरवृषभ, जिनवर और जिन ने तथा वर्तमान में पूज्य कानजीस्वामी ने क्या आध्यात्मिक रहस्य बताया है ?

उ० "प्रत्येक द्रव्य एक समय में अपने उत्पाद-व्यय-ध्रुवरूप त्रिस्वभाव का स्पर्श करता है, उसी समय निमित्त होने पर भी द्रव्य उनका स्पर्श नहीं करते । सम्यग्दर्शन हुआ वहाँ आत्मा उस सम्यग्दर्शन के उत्पाद को, मिथ्यात्व के व्यय को और श्रद्धारूप अपनी ध्रुवता को स्पर्श करता है, किन्तु सम्यक्त्व के निमित्तभूत ऐसे देव,गुरु या शास्त्र को स्पर्श नहीं, करता, वे तो भिन्नस्वभावी पदार्थ हैं । सम्यग्दर्शन की उत्पत्ति, मिथ्यात्व का व्यय तथा श्रद्धापने की अखण्डतारूप ध्रुवता—इन तीनों का आत्मा में ही समावेश होता है, किन्तु इनके अतिरिक्त जो बाह्य निमित्त हैं उनका समावेश आत्मा में नहीं होता । प्रतिसमय उत्पाद-व्यय-ध्रुवतारूप द्रव्य का अपना स्वभाव है और उस स्वभाव का ही प्रत्येक द्रव्य स्पर्श करता है, यानी अपने स्वभावरूप ही वर्तता है; किन्तु परद्रव्य के कारण किसी के उत्पाद-व्यय-ध्रुव नहीं है । परद्रव्य भी उसके अपने ही उत्पाद व्यय-ध्रुव स्वभाव में अनादिअनंत वर्तता है और यह आत्मा भी अपने उत्पाद-व्यय-ध्रुव स्वभाव में ही अनादिअनंत वर्तता है; ऐसा समझने वाले ज्ञानी को अपने आत्मा के उत्पाद-व्यय-ध्रुव के अतिरिक्त बाह्य में कोई भी कार्य किंचित्-

मात्र अपना भासित नहीं होता, इसलिये उत्पाद-व्यय-ध्रुवस्वरूप अपना जो आत्मा है उसके आश्रय से निर्मलता का ही उत्पाद होता है मलिनता का व्यय होता जाता है और ध्रुवता का अवलम्बन बना ही रहता है—इसका नाम धर्म है।

अजीव द्रव्य भी अपनें उत्पाद-व्यय-ध्रुवरूप त्रिस्वभाव का स्पर्श करता है, परका स्पर्श नहीं करता जैसे कि—मिट्टी के पिण्ड में से घड़ा हुआ; वहां पिण्ड अवस्था के व्यय को, घट अवस्था के उत्पाद को और मिट्टीपने की ध्रुवताको वह मिट्टी स्पर्श करती है, किन्तु वह कुम्हार को, चाक को, डोरी को या अन्य किसी परद्रव्य को स्पर्श नहीं करती और कुम्हार भी हाथ के हलन-चलनरूप अपनी अवस्था का जो उत्पाद हुआ उस उत्पाद को स्पर्श करता है किन्तु अपने से बाह्य ऐसे घड़े को वह स्पर्श नहीं करता।

जगत में छहों द्रव्य एक ही क्षेत्र में विद्यमान होने पर भो कोई द्रव्य दूसरे द्रव्य के स्वभाव को स्पर्श नहीं करता; अपने अपने उत्पाद व्यय ध्रुवतारूप स्वभाव में हो प्रत्येक द्रव्य वर्तता है इसलिये वह अपने स्वभाव को ही स्पर्श करता है। देखो यह सर्वज्ञदेव कथित वीतरागी भेदज्ञान ! निमित्त -उपादान का स्पष्टीकरण भी इसमें आ जाता है। उपादान और निमित्त यह दोनों पदार्थ एक साथ प्रवर्तमान होने पर भी उपादानरूप पदार्थ अपने उत्पाद-व्यय-ध्रुवतारूप स्वभाव का ही स्पर्श करता है—निमित्तका किंचित भी स्पर्श नहीं करता। और निमित्तभूत पदार्थ भी उसके अपने उत्पाद-व्यय-ध्रुवतारूप स्वभाव का ही स्पर्श करता है उपादान का वह किंचित् स्पर्श नहीं करता। उपादान और निमित्त दोनों

पृथक पृथक अपने अपने स्वभाव में ही वर्तते हैं, परिणमन करते हैं।

अहो ! पदार्थों का यह एक उत्पाद-व्यय-ध्रौव्यस्वभाव भलि-भांति पहिचान ले तो भेदज्ञान होकर स्व-द्रव्य के ही आश्रय से निर्मल पर्याय का उत्पाद और मलिनता का व्यय हो;-उसका नाम धर्म है और वही सर्वज्ञ भगवान के सर्व उपदेश का तात्पर्य है।-[वीर सं० २४८१ आसोज मासका आत्मधर्म अंक पत्र ३०१-२ से उद्धृत]

पाठ १२
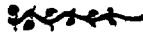
वस्तुत्व गुण

प्र० १. वस्तुत्व गुण द्रव्य है या पर्याय ?

उ० वस्तुत्व गुण प्रत्येक द्रव्य का सामान्य गुण है द्रव्य और पर्याय नहीं है।

प्र० २. वस्तुत्व गुण किसे कहते हैं ?

उ० जिस शक्ति के कारण से द्रव्य में अर्थक्रिया कारित्व हो उसको वस्तुत्व गुण कहते हैं।

प्र० ३. अर्थ क्रिया कारित्व से क्या प्रयोजन है ?

उ० प्रयोजनभूत क्रिया।

प्र० ४. प्रयोजनभूत क्रिया का मतलब भी हम नहीं समझे ?

उ० अपना अपना कार्य।

प्र० ५. आपने वस्तुत्वगुण की परिभाषा में 'अर्थक्रिया कारित्व, प्रयोजनभूत, क्रिया, 'अपना २ कार्य' बताया परन्तु वस्तुत्व गुण का प्रयोजन हमारी समझ में नहीं आया ?

उ० जैसे हमारे घर में छह आदमी हैं। स्त्री, लड़का, लड़की, बहन, बुआ और भाई हैं इन सब में से हरएक अपना अपना, जैसा जैसा संबंध

है, वैसा ही कार्य करता है ; उसी प्रकार संसार में जाति अपेक्षा छह द्रव्य हैं। प्रत्येक द्रव्य अपना अपना ही कार्य करता है इसका नाम अर्थक्रिया कारित्व,प्रयोजनभूत क्रिया है।

प्र० ६. वस्तुत्व गुण की बात समझ में नहीं आई, जरा स्पष्ट कीजिए?

उ० जैसे (१) आंख देखने का कार्य करता है (२) नाक सूंघने का ही (३) कान सुनने का ही (४) मुंह चखने का ही (५) हाथ स्पर्श का ही कार्य करता है; उसी प्रकार जीव द्रव्य में तथा प्रत्येक द्रव्य में अनन्त अनन्त गुण हैं वह अपना अपना ही कार्य करते हैं। जैसे जीव का श्रद्धा गुण श्रद्धा का ही कार्य करेगा। ज्ञान गुण ज्ञान का ही कार्य करेगा। पुद्गल का स्पर्श गुण स्पर्श का ही कार्य करेगा और गंध गुण गंध का ही कार्य करेगा।

प्र० ७. प्रत्येक द्रव्य में अनंत अनंत गुण हैं, क्या प्रत्येक द्रव्य का प्रत्येक गुण अपना अपना प्रयोजनभूत कार्य करता ही रहता है कोई, भी गुण एक समय के लिए भी प्रयोजनभूत क्रिया रहित नहीं होता है ?

उ० हां प्रत्येक गुण अपना अपना प्रयोजनभूत कार्य करता ही रहता है, कोई भी गुण एक समय के लिये भी प्रयोजनभूत क्रिया रहित नहीं होता है।

प्र० ८. सिद्ध भगवान में पूर्ण क्षायिकपना प्रगट हो गया है तो अब उनका प्रयोजनभूत कार्य समाप्त हो गया है ना ?

उ० बिल्कुल नहीं,क्योंकि उनके अनन्त गुणों में से प्रत्येक समय निर्मल स्वभाव रूप परिणमन प्रयोजनभूत कार्य होता ही रहता है।

प्र० ९. द्रव्य को वस्तु क्यों कहते हैं ?

उ० वस्तुत्व गुण के कारण ।

प्र० १०. गोमट्टसार में वस्तु किसे कहा है ?

उ० (गोमट्टसार जीव काण्ड गा० ६७२ की टीका में)

(१) जिसमें गुण पर्याय बसते हैं उसे वस्तु कहा है ।

(२) जिसमें सामान्य विशेष स्वभाव हो उसे वस्तु कहते हैं ।

(३) प्रत्येक द्रव्य अपना अपना प्रयोजनभूत कार्य करता है इसलिए प्रत्येक द्रव्य को वस्तु कहते हैं ।

प्र० ११. वस्तु क्या सूचित करती है ?

उ० प्रत्येक वस्तु के गुण पर्याय अपने में ही बसते हैं एक दूसरे में नहीं ।

प्र० १२. प्रत्येक वस्तु के गुण पर्याय अपने में ही बसते हैं एक दूसरे में नहीं इससे, हमको क्या लाभ है?

उ० मेरे गुण. पर्याय मेरे में ही बसते हैं शरीर से अथवा पर द्रव्यों में नहीं बसते, ऐसा जानकर अपने गुण पर्याय रूप अभेद वस्तु है उसका आश्रय ले तो धर्म की प्राप्ति हो ।

प्र० १३. (१) ज्ञान गुण (२) चारित्र गुण (३) स्पर्श गुण (४) रस गुण (५) गतिहेतुत्व गुण (६) श्रद्धा गुण (७) अस्तित्व गुण (८) दर्शन गुण (९) गंध गुण (१०) वर्ण गुण (११) क्रियावती शक्ति (१२) अवगाहन-हेतुत्व आदि गुणों का प्रयोजनभूत कार्य क्या २ है ?

उ० (१) ज्ञान गुण का प्रयोजनभूत कार्य मतिज्ञानादि ८ प्रकार का है।

(२) चारित्र गुण का प्रयोजनभूत कार्य शुद्ध और अशुद्ध दो प्रकार का है।

(३) स्पर्श गुण का प्रयोजनभूत कार्य आठ प्रकार का है।

(४) रस गुण का प्रयोजनभूत कार्य ५ प्रकार है।

(५) गतिहेतुत्व का प्रयोजनभूत कार्य उसका समय २ परिणमन है।

(६) श्रद्धा गुण का प्रयोजनभूत कार्य मिथ्यात्व सम्यक्त्व रूप है।

(७) अस्तित्व गुण का प्रयोजनभूत कार्य उसकी पर्याय है।

(८) दर्शन गुण का प्रयोजनभूत कार्य चार प्रकार का है।

(९) गंध गुण का प्रयोजन भूत कार्य दो प्रकार का है।

(१०) वर्ण गुण का प्रयोजनभूत कार्य ५ प्रकार का है।

(११) क्रियावती शक्ति का प्रयोजनभूत कार्य दो प्रकार का है।

(१२) अवगाहनहेतुत्व गुण का कार्य परिणमन में अवगाहन रूप होना है।

प्र० १४. (१) मतिज्ञान (२) सम्यग्दर्शन (३) केवलज्ञान (४) खट्टा (५) गर्म (६) काला (७) सुगन्ध (८) चिकना (९) शुभ (१०) शुद्ध (११) केवलदर्शन यह प्रयोजन भूत कार्य किस २ गुण का है ?

उ० (१) मतिज्ञान ज्ञानगुण का प्रयोजनभूत कार्य है। इसी प्रकार १० वाक्यों के उत्तर दो।

प्र० १५. किसी द्रव्य का, गुण का किसी भी समय प्रयोजनभूत कार्य समाप्त होता है या नहीं ?

उ० प्रयोजनभूत कार्य का मतलब कभी भी समाप्त न होना है; क्योंकि कोई द्रव्य या गुण निकम्मा नहीं है जो एक समय भी प्रयोजनभूत कार्य रहित होवे।

प्र० १६. यह मेज पड़ी है इसमें प्रयोजन भूत कार्य क्या हो रहा है ?

उ० यह मेज अनन्त पुद्गल परमाणुओं का स्कंध है। मेज में एक १ परमाणु अपने अनन्त गुणों सहित अपनी प्रयोजनभूत क्रिया कर रहा है।

प्र० १७. वस्तुत्व गुण क्या बताता है ?

उ० प्रत्येक द्रव्य अपना प्रयोजनभूत कार्य करता ही रहता है। एक समय मात्र भी ऐसा नहीं जो अपने प्रयोजनभूत कार्य से रहित हो जावे।

प्र० १८. वस्तुत्व गुण से को जानने क्या लाभ रहा ?

उ० (१) प्रत्येक द्रव्य अपना अपना प्रयोजनभूत कार्य करता ही रहता है। तब मेरा कार्य ज्ञाता-दृष्टा है ऐसा अनुभव ज्ञान होना।

(२) अनादि से पर में करने धरने और भोक्ता-भोग्य बुद्धि का

अभाव होकर अपना ही करना भोगना का अनुभव ज्ञान रमणता होना।

(३) मिथ्यात्व का अभाव सम्यग्दर्शन की प्राप्ति।

(४) अपने अन्दर अपूर्व शान्ति की प्राप्ति होना।

(५) मोक्ष की ओर अग्रसर होना।

(६) केवली के समान ज्ञाता-दृष्टा की प्राप्ति वस्तुत्व गुण को जानने का लाभ है।

प्र० १९. जिसको सम्यग्दर्शन नहीं है क्या उसने वस्तुत्व गुण को नहीं जाना ?

उ० नहीं जाना, क्योंकि अपने आपको जाने बिना अरण्यरोदन है।

प्र० २०. शास्त्रों में आता है यह जीव अनंत बार ११ अंग ९ पूर्व का पाठी बना और सम्यग्दर्शन की प्राप्ति नहीं हुई तो क्या उसे भी वस्तुत्व गुण का रहस्य पता नहीं है ?

उ० हां उसने भी वस्तुत्व गुण को नहीं जाना।

प्र० २१. क्या द्रव्यलिंगी मुनि ने वस्तुत्व गुण का रहस्य नहीं जाना ?

उ० नहीं जाना क्योंकि श्री कुन्दकुन्द भगवान ने द्रव्यलिंगी मुनि को संसार का नेता कहा है और मोक्ष मार्ग प्रकाशक में द्रव्यलिंगी मुनि को मिथ्यादृष्टि असंयमी पापी कहा है।

प्र० २२. समयसार गा० २७३ में जिनेन्द्र भगवान के कहे अनुसार व्रत समिति आदि का पालन किया क्या उसने भी वस्तुत्व गुण का रहस्य नहीं जाना ?

उ०   नहीं जाना, क्योंकि वस्तुत्व गुण का रहस्य जानते ही मोक्ष का पथिक बन जाता है।

प्र० २३. क्या द्रव्यलिंगी मुनि मोक्ष का पथिक नहीं है ?

उ०   वह चारों गतियों में घूमता हुआ निगोद का पथिक है।

प्र० २४. विश्व में ऐसी वस्तु का नाम बताओ जो अपना प्रयोजनभूत कार्य नहीं करती हो ?

उ०   ऐसी वस्तु विश्व में है ही नहीं।

प्र० २५. अपने कार्य के लिये दूसरे की मदद चाहने वाला किस गुण का मर्म नहीं जानता ?

उ०   वस्तुत्व गुण का मर्म नहीं जानता।

प्र० २६. मेरा हित मेरे से है उसने किसको माना ?

उ०   वस्तुत्व गुण को माना।

प्र० २७. वस्तुत्व गुण का रहस्य न जाने तो क्या होगा ?

उ०   (१) सम्यग्दर्शन की प्राप्ति कभी नहीं होगी।

(२) जब सम्यग्दर्शन नहीं होगा तो मोक्ष का प्रश्न ही नहीं रहा।

(३) पर में करने धरने की मान्यता कर करके निगोद चला जावेगा

(४) दूसरा मेरा भला बुरा करे या मैं दूसरों का भला बुरा करूं ऐसी आकुलता में ही जलता रहेगा।

(५) समय समय दुःख बढ़ता जावेगा।

प्र० २८. वस्तुत्व गुण को न जानने वाले को किस की उपेक्षा और किस की अपेक्षा होती है ?

उ० अपनी उपेक्षा और पर की अपेक्षा रहती है ।

प्र० २९. वस्तुत्व गुण को जानने वाले को किसकी उपेक्षा और किसकी अपेक्षा रहती है ?

उ० अपनी अपेक्षा और पर की उपेक्षा रहती है ।

प्र० ३०. वस्तुत्व गुण कितने हैं ?

उ० जितने द्रव्य हैं उतने वस्तुत्व गुण है क्योंकि प्रत्येक द्रव्य में एक एक वस्तुत्व गुण पाया जाता है ।

प्र० ३१. वस्तुत्व गुण रूपी है या अरूपी ?

उ० दोनों हैं । पुद्गल का वस्तुत्व गुण रूपी है बाकी द्रव्यों का वस्तुत्व गुण अरूपी है ।

प्र० ३२. वस्तुत्व गुण जड़ है या चेतन ?

उ० दोनों हैं । जीव का वस्तुत्व गुण चेतन है बाकी द्रव्यों का जड़ है ।

प्र० ३३. वस्तुत्व गुण का क्षेत्र कितना बड़ा है ?

उ० जितना द्रव्य का क्षेत्र हैं उतना ही क्षेत्र वस्तुत्व गुण का है क्योंकि वस्तुत्व गुण द्रव्य के सम्पूर्ण भागों में होता है ।

प्र० ३४. वस्तुत्व गुण का काल कितना है ?

उ० जितना द्रव्य का काल है उतना ही वस्तुत्व गुण का काल है क्योंकि वस्तुत्व गुण द्रव्य की सम्पूर्ण अवस्थाओं में त्रिकाल

रहता है अर्थात् वस्तुत्व गुण का काल अनादिअनंत है।

प्र० ३५. जीव का प्रयोजन क्या है ?

उ० दुःख ना हो, सुख हो यही प्रयोजन है।

प्र० ३६. अस्तित्व और वस्तुत्व गुण में क्या अन्तर है ?

उ० (१) अस्तित्व गुण अनादिअनंत कायमपने को सूचित करता है। (२) वस्तुत्व गुण प्रयोजनभूत कार्य को सूचित करता है।

प्र० ३७. अस्तित्व गुण और वस्तुत्व गुण जानने का क्या लाभ है ?

उ० प्रत्येक द्रव्य कायम रहता हुआ अपना अपना प्रयोजनभूत कार्य करता ही रहता है तब मेरा प्रयोजनभूत कार्य ज्ञाता-दृष्टा है ऐसा अनुभव करे तो अस्तित्व गुण, वस्तुत्व गुण को जाना।

प्र० ३८. प्रयोजनभूत कार्य कितने हैं ?

उ० जाति अपेक्षा छः हैं।

प्र० ३९. संख्या अपेक्षा प्रयोजनभूत कार्य कितने हैं ?

उ० जितने गुण हैं उतने ही एक समय में प्रयोजनभूत कार्य हैं।

प्र० ४०. अस्तित्व गुण बड़ा या वस्तुत्व गुण।

उ० दोनों समान हैं क्योंकि प्रत्येक गुण द्रव्य के बराबर होता है।

प्र० ४१. अनादिअनंतपना वस्तुत्व गुण सिद्ध करता है ना ?

उ० बिल्कुल नहीं; अनादिअनंतपना तो अस्तित्व गुण सिद्ध करता है वस्तुत्व गुण नहीं।

प्र० ४२. प्रयोजनभूत क्रिया को अस्तित्व गुण सिद्ध करता है ना ?

उ० बिल्कुल नहीं ! प्रयोजनभूत क्रिया को वस्तुत्व गुण सिद्ध करता है अस्तित्व गुण नहीं ।

प्र० ४३. ऐसे द्रव्य का नाम बताओ जिसमें अस्तित्व गुण तो हो और वस्तुत्व गुण ना हो ?

उ० ऐसा कोई भी द्रव्य नहीं है क्योंकि वस्तुत्व गुण सामान्य गुण है ।

प्र० ४४. मोक्ष की प्राप्ति कैसे हो ?

उ० वस्तुत्व गुण के योग से, हो द्रव्य में स्व-स्व क्रिया ।
स्वाधीन गुण पर्याय का ही, पान द्रव्यों ने किया ॥
सामान्य और विशेषता से, कर रहे निज काम को ।
यों मानकर वस्तुत्व को पाओ, विमल शिवधाम को ॥

पाठ १३

द्रव्यत्व गुण

प्र० १. द्रव्यत्व गुण, द्रव्य है या पर्याय है ?

उ० द्रव्यत्व गुण प्रत्येक द्रव्य का सामान्य गुण है। द्रव्य और पर्याय नहीं है।

प्र० २. द्रव्यत्व किसे कहते हैं ?

उ० जिस शक्ति के कारण द्रव्य की अवस्थायें निरन्तर बदलती रहती हैं उसे द्रव्यत्व गुण कहते हैं।

प्र० ३. द्रव्यत्व गुण क्या सूचित करता है ?

उ० "निरन्तर परिणमन" को सूचित करता है।

प्र० ४. 'निरन्तर परिणमन' से क्या तात्पर्य है ?

उ० एक समय मात्र भी पर्याय नहीं रुकती है अर्थात् हर समय कार्य नया नया होना यह बताता है।

प्र० ५. जब सब द्रव्यों में निरन्तर पर्यायें होती ही रहती हैं किसी को एक समय भी रुकने का अवकाश नहीं है ऐसा वस्तु स्वरूप है तब फिर जीवों को पर का कर दूं या भोगूं ऐसी बुद्धि क्यों पाई जाती है ?

उ० द्रव्यत्व गुण का मर्म न जानने के कारण।

प्र० ६. वस्तुत्व और द्रव्यत्व गुण में क्या अन्तर है ?

उ० (१) वस्तुत्व गुण द्रव्य गुण में प्रयोजनभूत क्रिया को बताता है और (२) द्रव्यत्व गुण उस प्रयोजनभूत क्रिया को "निरन्तर बदलने की बात को बताता है।

प्र० ७. अस्तित्व, वस्तुत्व और द्रव्यत्व गुण का क्या रहस्य है ?

उ० (१) प्रत्येक द्रव्य अनादिअनंत कायम रहता है (२) कायम रहता हुआ अपनी २ प्रयोजनभूत क्रिया को करता ही रहता है (३) वह क्रिया निरन्तर बदलती रहती है। ऐसा द्रव्य का स्वभाव है। इस बात को जाने तो दृष्टि स्वभाव पर होती है और पर को बदल दूं, पर को कायम रक्खूं, किसी के कार्य को करूं, किसी के कार्य को बदलाऊं आदि खोटी बुद्धियों का अभाव हो जाता है ज्ञाता-दृष्टा स्वभाव प्रगट हो जाता है।

प्र० ८. वस्तु को द्रव्य क्यों कहा है ?

उ० द्रव्यत्व गुण के कारण।

प्र० ९. क्या प्रत्येक गुण कायम रहता हुआ, अपना २ प्रयोजनभूत कार्य करता हुआ, निरन्तर बदलता ही रहता है ?

उ० हां ऐसा ही वस्तु स्वभाव है। यह पारमेश्वरी व्यवस्था है।

प्र० १०. प्रत्येक द्रव्य गुण में निरन्तर नई नई पर्याय होती है उसे द्रव्यत्व गुण करता है या काल द्रव्य करता है ?

उ० प्रत्येक द्रव्य गुण में निरन्तर नई २ पर्याय होती है वह पर्याय

अपनी २ योग्यता से ही होती है उसमें अंतरंग निमित्त द्रव्यत्व गुण है और बाहर का निमित्त काल द्रव्य है।

प्र० ११. द्रव्य और द्रव्यत्व गुण में क्या अन्तर है ?
उ० (१) द्रव्य तो अनंत गुणों का अभेद पिण्ड है। (२) और द्रव्यत्व गुण प्रत्येक द्रव्य का सामान्य गुण है।

प्र० १२ द्रव्यत्व गुण को सामान्य गुण क्यों कहा है ?
उ० सब द्रव्यों में पाया जाता है इसलिये सामान्य गुण कहा है।

प्र० १३. द्रव्यत्व गुण द्रव्य में क्या सूचित करता है ?
उ० निरन्तर बदलने को सूचित करता है।

प्र० १४. जीव में अज्ञान दशा सदैव एक सी नहीं है? रहती क्या कारण।
उ० द्रव्यत्व गुण के कारण।

प्र० १५. द्रव्यत्व गुण से क्या क्या समझना चाहिए ?
उ० (१) सर्व द्रव्यों की अवस्थाओं का निरन्तर परिवर्तन उसका अपने कारण से उसी में होता है दूसरा कोई पर द्रव्य या निमित्त कुछ नहीं कर सकता है।
(२) जीव की कोई भी पर्याय दूसरे जीवों से अजीवों से कर्म शरीरादि से नहीं बदलती है।
(३) दूसरे जीवों की, अजीवों की, कर्म, शरीर आदि की पर्याय भी मेरे से नहीं बदलती है।
(४) जीव में अज्ञान दशा सदैव एक सी नहीं रहती है।
(५) पहिले अल्प ज्ञान था बाद में ज्यादा हुआ वह उस समय की योग्यता से ही हुआ है।

(६) ज्ञान का विकास ज्ञानगुण से ही होता है किसी शास्त्र से, गुरु से, दिव्यध्वनि, कर्म, शुभ भाव से और गुणों से नहीं आता है।

(७) जो पर्याय हुई उसका उसी गुण की पहली अगली पर्याय से भी संबंध नहीं है।

प्र० १६. श्रुतज्ञान से केवल ज्ञान हुआ, किस कारण ?

उ० द्रव्यत्व गुण के कारण।

प्र० १७. द्रव्य को सर्वथा कूटस्थ मानने वाला किस गुण का मर्म नहीं जानता ?

उ० द्रव्यत्व गुण का मर्म नहीं जानता।

प्र० १८. मिथ्यात्व का अभाव सम्यक्त्व की प्राप्ति किस कारण ?

उ० द्रव्यत्व गुण के कारण।

प्र० १९. संसार का अभाव सिद्ध दशा की प्राप्ति किस गुण को बताता है ?

उ० द्रव्यत्व गुण को बताता है।

प्र० २०. पात्र जीव द्रव्यत्व गुण से क्या जानता है ?

उ० संसार का अभाव और मुक्ति हमारे हाथ में है किसी दूसरे के कारण संसार या मोक्ष नहीं है।

प्र० २१. प्रत्येक गुण की पर्याय क्यों बदलती है ?

उ०   बदलती अपनी योग्यता से है उसमें अन्तरंग निमित्त द्रव्यत्व गुण है।

प्र० २२. दुःख का अभाव और सुख प्राप्त करने के लिये किसका मर्म जानना चाहिए ?

उ०   द्रव्यत्व गुण का मर्म जानना चाहिये।

प्र० २३. हमें सम्यग्दर्शन प्राप्त करना है उसके लिये पर की सेवा करें सम्मेद शिखर जावें, माला जपे, कोई पाठ करें, या व्रत उपवासादि करें तो प्राप्ति हो ?

उ०   जैसे छोटा बच्चा है उसे 'अ आ इ ई' पढ़ाना है वह उसके लिये उपवास करे, दान करे, यात्रा करे - आप कहेंगे इन कार्यों से 'अ आ' पढ़ना नहो होगा वह 'अ आ' का हाथ से अभ्यास करे तो 'अ आ' पढ़ना लिखना आवेगा ; उसी प्रकार सम्यग्दर्शन प्राप्त करने के लिये पर की सेवा करे, सम्मेद शिखर जावें, माला जपें तो उससे सम्यग्दर्शन की प्राप्ति नहीं होगी। एक मात्र अपने अनन्त गुणों के अभेद पिण्ड भगवान का आश्रय लें तो द्रव्यत्व गुण के कारण मिथ्यात्व का अभाव होकर सम्यग्दर्शन की प्राप्ति हो।

प्र० २४. एक गुण में कितनी पर्याय होती हैं ?

उ०   तीन काल के जितने समय उतनी २ पर्याय प्रत्येक गुण की होती हैं।

प्र० २५. हमारे जीवन में द्रव्यत्व गुण को समझने से भी कुछ लाभ है ?

उ० भगवान की आज्ञानुसार द्रव्यत्व गुण को समझ ले तो लौकिक में भी अशान्ति न आवेगी और अपना अनुभव कर ले तो मोक्ष रूपी लक्ष्मी का नाथ बन जावे।

प्र० २६. द्रव्यत्व गुण को जानने से लौकिक में शान्ति कैसे आवे ?

उ० (१) ५० लाख का नुकसान या लाभ हो गया (२) लड़का मर गया या हो गया (३) मकान बन गया या गिर गया (४) शरीर में बीमारी आ गई या ठीक हो गई। यह सब द्रव्यत्व गुण के कारण पर्याय पलट गई दूसरे का हस्तक्षेप नहीं है तो तुरन्त शान्ति आवेगी।

प्र० २७. शरीर में बीमारी थी, दवा खाने से ठीक हो गई है वा ?

उ० बिल्कुल नहीं। शरीर की अवस्था द्रव्यत्व गुण के कारण बदल गई तो द्रव्यत्व गुण को माना और दवाई से बदली तो द्रव्यत्व गुण को नहीं माना।

प्र० २८. (१) मैंने होशियारी नहीं रखी तो दूध फट गया (२) कुम्हार ने घड़ा बनाया (३) उसने गाली दी तो क्रोध आया (४) मैंने मकान बनाया (५) बच्चे ने सावधानी नहीं रखी तो गिलास गिरकर फूट गया (६) मैंने लकड़ी से आलमारी बनाई (७) मैंने किताब बनाई (८) ज्ञानावर्णी के अभाव से केवलज्ञान हुआ (९) दर्शन मोहनीय के क्षय से क्षायिक सम्यक्त्व हुआ (१०) आंख से ज्ञान हुआ आदि वाक्यों में द्रव्यत्व गुण को कब माना और कब नहीं माना ?

उ० (१) मैंने होशियारी नहीं रखी तो दूध फट गया—दूध फटा—द्रव्यत्व गुण के कारण फटने रूप अवस्था हुई ऐसा जाने माने तो द्रव्यत्व

गुण को माना। फिर यह कि मैंने होशियारी नहीं रक्खी यह बात उड़ गयी। और दूध फटा मेरी होशियारी न रखने से तो उसने द्रव्यत्व गुण को नहीं माना। इसी प्रकार ६ वाक्यों को लगाओ ?

प्र० २९. द्रव्यत्व गुण के जानने वाले को कैसे २ प्रश्न नहीं उठेंगे ?

उ० (१) ऐसा क्यों हुआ, (२) इससे यह (३) ऐसा हो, ऐसा न हो, आदि प्रश्न नहीं उठ सकते हैं क्योंकि द्रव्यत्व गुण के कारण पर्याय बदलती है तब ऐसा क्यों आदि प्रश्नों का अवकाश ही नहीं है

प्र० ३०. द्रव्यत्व गुण से क्या २ बात का निर्णय होना चाहिए ?

उ० (१) प्रत्येक द्रव्य गुण की अवस्था निरन्तर स्वयं बदलती है।

(२) एक द्रव्य गुण की पर्याय दूसरा द्रव्य गुण नहीं बदल सकता है।

(३) जीव की पर्याय अजीवों से नहीं बदलती। स्वयं बदलती है।

(४) अजीवों की पर्याय जीवों से नहीं बदलती। स्वयं बदलती है।

(५) अज्ञान दशा का अभाव एक समय में हो सकता है।

(६) संसार एक समय का है।

(७) मोक्ष भी एक समय का है।

प्र० ३१. आम खट्टे से मीठा पाल में दबाने से हुआ ना ?

उ० बिल्कुल नहीं; द्रव्यत्व गुण के कारण खट्टे से मीठा हुआ

पाल के कारण नहीं ।

प्र० ३२. क्या (१) केवलज्ञान (२) केवल दर्शन (३) सिद्ध दशा (४) संसार दशा सब एक २ समय की है ?

उ० हां सब एक २ समय की है। वास्तव में एक २ समय की पर्याय वह भव है । सूक्ष्म ऋजुसूत्र नय की अपेक्षा चारों गति भी एक २ समय की हैं ।

प्र० ३३. यदि द्रव्यत्व गुण न माने तो क्या नुकसान हो ?

उ (१) द्रव्य गुण को कूटस्थपने का प्रसंग उपस्थित होवेगा ।

(२) संसार और मोक्ष का प्रश्न ही नहीं रहेगा ।

प्र० ३४. संसार और मोक्ष एक २ समय का है इसको जानने से क्या लाभ है ?

उ० हे आत्मा तू अनादिअनंत भगवान है उसका आश्रय ले तो एक समय के संसार का अभाव करके मोक्ष की प्राप्ति कर सकता है ।

प्र० ३५. मैं बड़ा पापी हूँ, मेरा पाप जन्मों जन्मों दुख देगा-क्या यह ठीक है ?

उ० बिल्कुल गलत । द्रव्यत्व गुण के कारण पर्याय बदल गई तब दु:ख का प्रश्न ही नहीं उठता है ।

प्र० ३६. वस्तुत्व गुण के बाद द्रव्यत्व गुण बताने के पीछे क्या रहस्य है ?

उ० वस्तु अपना २ प्रयोजनभूत कार्य करती है ऐसा वस्तुत्व गुण ने बताया तो द्रव्यत्व गुण बताने के पीछे यह रहस्य है कि वह प्रयोजनभूत कार्य 'निरन्तर बदलता' ही रहता है।

प्र० ३७. द्रव्यत्व गुण का कार्य कब पूरा होगा ?

उ० निरन्तर परिणमन होना ही द्रव्यत्व गुण का कार्य है फिर कार्य पूरा होने का प्रश्न ही नहीं रहता है।

प्र० ३८. क्या जीव की पर्याय अजीव से बदलती है ? कोई ऐसा माने तो ?

उ० बिल्कुल नहीं—

(१) जीव के द्रव्यत्व गुण को नहीं माना।

(२) जीव को परिणमन रहित माना।

प्र० ३९. द्रव्यत्व गुण त्रिकाल रहता है ? किस कारण ?

उ० अस्तित्व गुण के कारण।

प्र० ४०. द्रव्यत्व गुण अपना प्रयोजनभूत कार्य करता है, किस कारण ?

उ० वस्तुत्व गुण के कारण।

प्र० ४१. द्रव्यत्व गुण निरन्तर बदलता है, किस कारण ?

उ० द्रव्यत्व गुण के कारण।

प्र० ४२. अस्तित्व, वस्तुत्व और द्रव्यत्व गुण का क्या मर्म है ?

उ० प्रत्येक वस्तु कायम रहती हुई अपना २ प्रयोजनभूत कार्य

करती हुई निरन्तर बदलती है ऐसा द्रव्य का स्वभाव है। ऐसा जाने माने तो संसार का अभाव मोक्ष की प्राप्ति होती है।

प्र० ४३. मोक्षार्थी को क्या जानना चाहिये ?

उ० द्रव्यत्व गुण इस वस्तु को, जग में पलटता है सदा।
लेकिन कभी भी द्रव्य तो तजता न लक्षण सम्पदा ॥
स्वद्रव्य में मोक्षार्थी हो, स्वधीन सुख लो सर्वदा।
हो नाश जिससे आजतक की दुःखदायी भव कथा ॥

प्र० ४४. वस्तु जग में पलटती है लेकिन वस्तु का नाश नहीं होता, तब हम क्या करें।

उ० अपने द्रव्य में दृष्टि करें तो तमाम दुःख का अभाव होकर सम्यग्दर्शनादि पूर्वक मोक्ष के भागी बने।

पाठ १४

प्रमेयत्व गुण

प्र० १. प्रमेयत्व गुण किसे कहते हैं ?

उ० जिस शक्ति के कारण द्रव्य किसी न किसी ज्ञान का विषय हो उसे प्रमेयत्व गुण कहते हैं।

प्र० २. "किसी न किसी ज्ञान" से क्या मतलब है ?

उ० मति, श्रुति, अवधि, मन:पर्यय, और केवलज्ञान इन पांचों में से कोई भी एक।

प्र० ३. जगत में कोई ऐसा पदार्थ है जिसमें प्रमेयत्व गुण न हो ?

उ० जगत में ऐसा एक भी पदार्थ नहीं है जिसमें प्रमेयत्व गुण न हो क्योंकि प्रमेयत्व गुण प्रत्येक द्रव्य का सामान्य गुण है।

प्र० ४. प्रमेयत्व का मतलब क्या है ?

उ० ज्ञात होने योग्य, जानने योग्य, ज्ञेय, Knowable

प्र० ५. प्रमेयत्व का व्युत्पत्ति अर्थ क्या है ?

प्र = अर्थात् विशेष रूप से। मेय = अर्थात् ज्ञान में आने

योग्य । त्व = अर्थात पना । विशेष रूप से ख्याल में आने योग्य पना ।

प्र० ६. रूपी पदार्थ ज्ञान में ज्ञात होते हैं । अरूपी पदार्थ ज्ञात नहीं होते । क्या यह बात ठीक है ?

उ० बिल्कुल गलत है; क्योंकि प्रत्येक द्रव्य प्रमेयत्व गुण वाला है । प्रत्येक पदार्थ किसी न किसी ज्ञान का विषय होता है इसलिए रूपी और अरूपी दोनों पदार्थ अवश्य ही बराबर ज्ञात होते हैं ।

प्र० ७. ज्ञान करने की और ज्ञात होने की यह दोनों शक्तियां एक साथ किसमें हैं ?

उ० एक मात्र जीव द्रव्य में ही हैं ।

प्र० ८. पुद्गल, धर्म, अधर्म, आकाश और काल में भी यह दोनों शक्तियां हैं ना ?

उ० नहीं है क्योंकि मात्र ज्ञेयपने की शक्ति पुद्गल, धर्म, अधर्म, आकाश और काल में है, ज्ञान करने की नहीं है ।

प्र० ९. हम ऐसा कार्य करे किसी को भी पता न चले, ऐसा कहने वाला क्या भूलता है ?

उ० (१) प्रेमयत्व गुण को भूलता है ।

(२) अरहंत सिद्ध को नहीं मानता क्योंकि संसार में ऐसा कोई कार्य नहीं जो अरहंत सिद्ध ना जानते हो ।

(३) अवधिज्ञानी, मनःपर्यय ज्ञानी को नहीं माना ।

(४) ज्ञानी छदमस्थ भावश्रुत ज्ञानी को भी नहीं माना।

प्र० १०. प्रमेयत्व गुण को जानने से क्या लाभ है ?
उ० सब पापों से छूट जाता है।

प्र० ११. प्रमेयत्व गुण को जानने से सब पापों से कैसे छूट जाता है ?
उ० जो जीव पाप करता है वह यह जानकर करता है कि उसे कोई देखता नहीं है। यदि उसे यह पता लग जावे अरहंत सिद्ध आदि भगवान सब जानते हैं तो वह उन पापों को न करे।

प्र० १२. प्रमेयत्व गुण के रहस्य को जानने वाला सब पापों से कैसे छूट जाता है दृष्टांत देकर समझाओ ?
उ० एक आदमी ने ५० भैंसें खरीदी, उसने दूध निकाल कर जमा करके घी निकाल कर बेचने का काम शुरू किया। घी का भाव बाजार में ८ रुपया सेर, तो वह सात रुपया बेचता। बाजार में लोग जानते हैं कि मिलावट का होता है और इसने तो भैंसें रख रक्खी हैं और एक रुपया सेर कम बेचता है तो उसका घी रोज का रोज सुबह ही बिक जाता। और वह जल्दी ही मालदार हो गया। एक दिन उसका खास रिस्तेदार आया—अरे भाई तुम घी एक सेर एक रुपये कम में बेचते हो तब तुम इतने मालदार कैसे हो गये। उसने कहा—देखो मुझे सब इमानदार जानते हैं। मैं रोज १ कनस्तर असली घी और ५ कनस्तर नकली घी मिलाकर रात को रख देता हूँ वह सुबह ही सब बिक जाता है। इस बात को कोई नहीं जानता। इस तरह से मैं मालदार जल्दी बन गया हूँ।

उसने कहा भाई तुम तो जैन हो। अरहंत भगवान सिद्ध भगवान तो इस बात को जानते हैं और अवधि, मन:पर्यय ज्ञानी भी बतला सकते हैं तब तुम कैसे कहते हो—इस बात को कोई नहीं जानता। उस दिन से उसने यह बेईमानी का कार्य छोड़ दिया क्योंकि उसने प्रमेयत्व गुण का रहस्य जान लिया।

प्र० १३. (१) मैं जुआं खेलता हूं कोई नहीं जानता है;

(२) मैं दूसरों की मां बहिनों को छेड़ता हूं इसे कोई नहीं जानता;

(३) मैं इन्कम टैक्स की चोरी करता हूं कोई नहीं जानता;

(५) मैं सिगरेट पीता हूं किसी को क्या पता है;

(६) मैं शराब पीता हूं लेकिन किसी को पता नहीं,

(७) मैं वेश्या के यहां जाता हूं परन्तु कोई देखता नहीं है;

(८) मेरे घर पर दूसरों की स्त्रियां आती हैं मैं उनसे मनोरंजन करता हूं कोई नहीं जानता है;

(९) मैं हिंसा झूठ चोरी करता हूं किसी को पता नहीं चलता;

(१०) मैं नकल करता हूं किसी को पता नहीं चलता;

(११) मैं व्यापार में सबको उल्लू बना देता हूं कोई नहीं जानता है;

(१२) मैं ऐसी चार सौ बीस करता हूं सब दंग रह जाते हैं;

(१३) मैंने अलेक्सन में तमाम वोट अपनी पेटी में डाल दिये किसी ने देखा ही नहीं;

आदि वाक्यों में (१) प्रमेयत्व गुण को कब माना और कब नहीं माना ? (२) प्रमेयत्व गुण मानने वाले ने किस २ को माना प्रमेयत्व गुण न मानने वाले ने किस २ को नहीं माना आदि का उत्तर दो ?

उ० (१) मैं जुआं खेलता हूं कोई नहीं जानता है ऐसी मान्यता वाले ने प्रमेयत्व गुण को नहीं माना। अरंहत सिद्ध आदि पंच परमेष्ठियों का निरादर किया।

(२) मैं आत्मा हूँ मैं जुआं खेल ही नहीं सकता हूँ; जुआं खेलने का कार्य मेरे ज्ञान का ज्ञेय है मैं तो ज्ञायक हूँ ऐसा माने तो उसे जुआं खेलने का भाव भी नहीं आवेगा तब प्रमेयत्व गुण को माना।

(३) यदि अज्ञानी भी जो जुआं खेलता है क्योंकि कोई नहीं जानता। जब उसे किसी ज्ञानी ने बताया भाई परमेष्ठी यह बात जानते हैं तो वह भी जुआं न खेलेगा। लौकिक रूप से शान्ति आ जावेगी और यदि अज्ञानी यह जान जावे कि मेरा कार्य तो ज्ञान है तो ज्ञानी बन जावे तब प्रमेयत्व गुण को माना।

इसी प्रकार १२ वाक्यों में लगाओ।

प्र० १४. मैं रोटी खाता हूँ ऐसा माने तो क्या नुकसान है ?

उ० उसने प्रमेयत्व गुण को नहीं माना क्योंकि रोटी तो ज्ञान का ज्ञेय है ऐसा न मानकर मैं खाता हूँ उसने प्रमेयत्व गुण को नहीं माना। मैं आत्मा ज्ञायक रोटी मेरे ज्ञान का ज्ञेय है ऐसा

माने तो प्रमेयत्व गुण को माना ।

प्र० १५. (१) मैं रथ बनाता हूं (२) मैं शरीर की सेवा करता हूँ (३) मैं नहाता, धोता, कपड़े पहनता हूं (४) मैं बोझा उठाता हूँ (५) मैं पांच इन्द्रियों का भोग लेता हूँ (६) मैं दुकान चलाता हूँ (७) मैं घर की देख भाल करता हूं (८) मैं हूं तो उसके सब काम ठीक हो गये (९) मैं कर्मों का अभाव करता हूं आदि वाक्यों में (१) प्रमेयत्व गुण को कब माना और (२) इससे क्या लाभ रहा (३) प्रमेयत्व गुण को कब नहीं माना (३) इससे क्या नुकसान रहा इत्यादि स्पष्ट करो ?

उ० (१) मैं रोटी खाता हूं। रोटी मेरे ज्ञान का ज्ञेय है इसके बदले मैं खाता हूं तो मैंने प्रमेयत्व गुण को नहीं माना। रोटी अनंत पुद्गल परमाणुओं का स्कंध है मैं उनका कर्ता भोक्ता बन गया। अनन्त द्रव्यों का कर्ता भोक्तापने का भाव निगोद का कारण है।

प्र० निगोद का अभाव कैसे हो ?

उ० मै आत्मा ज्ञायक रोटी मेरे ज्ञान का ज्ञेय है। ज्ञेय ज्ञायक संबध है कर्ता भोक्ता का संबंध नहीं है तब प्रमेयत्व गुण को माना तब मोक्ष का अधिकारी बना।

इसी प्रकार बाकी के ८ वाक्यों को लगाओ।

प्र० १६. (१) मैं मनुष्य (२) मैं देव (३) मैं नारकी (४) मैं तिर्यंच (५) मैं चार इन्द्रिय आदि में प्रमेयत्व गुण को कब नहीं माना उसका और फल क्या है ?

उ० मैं मनुष्य हूं। मैं हूँ अनंत गुणों का अभेद पिण्ड भगवान।

प्र० मैं हूँ आत्मा इसके बदले मैं मनुष्य ऐसा माने तो क्या हो ?

उ० उसने प्रमेयत्व गुण को नहीं माना।

प्र० मैं मनुष्य हूं ऐसा मानने से क्या नुकसान हुआ ?

उ० कार्मण शरीर, तैजस शरीर, औदारिक शरीर आदि का कर्ता बन गया इसका फल निगोद है।

प्र० क्या करे तो निगोद का अभाव हो ?

उ० मैं आत्मा हूं कार्माण शरीर, तैजस शरीर, औदारिक शरीर, मन, वाणी यह सब मेरे ज्ञान का ज्ञेय हैं ऐसा जाने माने तब प्रमेयत्व गुण को माना और सब शरीर में एक २ परमाणु अपनी २ मर्यादा में परिणमन कर रहा है उसमें कर्ता बुद्धि का अभाव होकर मोक्ष का पथिक बन गया।

इसी प्रकार बाकी चार प्रश्नों का उत्तर दो।

प्र० १७. दिगम्बर धर्मी कौन हैं ? उनका कार्य क्या है ?

उ० ज्ञानी दिगम्बर धर्मी है उसका कार्य ज्ञाता-दृष्टा है।

प्र० १८. जो सप्तव्यसन का सेवन करते हैं हिंसादि झूठ बोलते हैं वह अपने को दिगम्बर धर्मी कहते हैं क्या यह ठीक है ?

उ० वह सब दिगम्बर धर्मी नहीं है और चारों गतियों में घूमते हुए निगोदगामी हैं। चारों गति के भक्त हैं पंचम गति के भक्त नहीं हैं।

प्र० १९. विश्व के सम्पूर्ण पदार्थों के साथ आत्मा का कैसा संबंध है ?

उ० एक मात्र ज्ञेय-ज्ञायक संबंध है और किसी प्रकार का संबंध नहीं है।

प्र० २०. कोई संसार के पदार्थों के साथ करने भोगने का संबंध माने तो?

उ० जैसे माता का पुत्र के साथ जैसा संबंध है वैसा ही माने तो ठीक है यदि उल्टा संबंध माने तो निन्दा का पात्र होता है। उसी प्रकार संसार के पदार्थों के साथ ज्ञेय-ज्ञायक संबंध है इसके बदले कर्ता-भोक्ता का संबंध माने तो जिनवाणी माता के साथ अनर्थ है और वह निगोद का पात्र है।

प्र० २१. ज्ञेय-ज्ञायक संबंध किसने माना, किसने नहीं माना ?

उ० ज्ञानी ने माना अज्ञानी ने नहीं माना।

प्र० २२. प्रमेयत्व गुण रूपी है या अरूपी ? और क्यों ?

उ० दोनों है। पुद्गल का प्रमेयत्व गुण रूपी है बाकी के द्रव्यों का अरूपी है।

प्र० २३. प्रमेयत्व गुण जड़ है या चेतन है और क्यों ?

उ० दोनों है। जीव का प्रमेयत्व गुण चेतन है बाकी का जड़ है।

प्र० २४. प्रमेयत्व गुण का क्षेत्र कितना बड़ा है और क्यों ?

उ० जितना द्रव्य का है उतना बड़ा क्षेत्र प्रमेयत्व गुण का है क्योंकि प्रमेयत्व गुण द्रव्य के सम्पूर्ण भागों में पाया जाता है।

प्र० २५. प्रमेयत्व गुण का काल कितना है और क्यों ?

उ० जितना द्रव्य का काल है उतना ही प्रमेयत्व गुण का है क्योंकि प्रमेयत्व गुण द्रव्य की सम्पूर्ण अवस्थाओं में त्रिकाल रहता है।

प्र० २६. पुद्गल परमाणु भी क्या ज्ञान का ज्ञेय हो सकता है ?

उ० वह भी ज्ञान का ज्ञेय है उसमें भी प्रमेयत्व गुण है। परमाणु अवधि, मन:पर्यय तथा केवलज्ञानी के ज्ञान का ज्ञेय हो जाता है।

प्र० २७. सभी द्रव्यों के गुणों की भूत भविष्यत वर्तमान सब पर्यायें ज्ञान का ज्ञेय हो सकती हैं ?

उ० हां वह सब केवलज्ञानी के केवलज्ञान की पर्याय में एक समय में एक साथ ज्ञेय हैं ?

प्र० २८. सब द्रव्यों की भूत भविष्यत वर्तमान पर्याय केवलज्ञानी केवल-ज्ञान में एक साथ एक समय में जानते हैं यह कहाँ आया है ?

उ० चारों अनुयोगों में आया है ?

(१) प्रवचनसार गा० ३७, ३८, २१, ४७ तथा २०० में
(२) तत्वार्थसूत्र अध्याय पहला सूत्र २६वां
(३) रत्नकरण्ड श्रावकाचार पहला श्लोक
(४) छहढाला में चौथी ढाल में:—
सकल द्रव्य के गुण अनंत पर्जाय अनन्ता।
जाने एकै काल प्रगट केवलि भगवन्ता॥
(५) धवला पुस्तक १३ पृ० ३४६ से ३५३ तक।

प्र० २९. कितने ही पंडित नाम धराने वाले, त्यागी नाम धराने वाले

दिगम्बर धर्मी कहलाने पर भी ऐसा क्यों कहते हैं कि

(१) केवली भगवान भूत और वर्तमान पर्यायों को हो जानते हैं और भविष्यत पर्यायों को वह हो तब जानते हैं;

(२) सर्वज्ञ भगवान अपेक्षित धर्मों को नहीं जानते;

(३) केवली भगवान भूत भविष्यत पर्यायों को सामान्य रूप से जानते हैं किन्तु विशेष रूप से नहीं जानते।

(४) केवली भगवान भविष्य की पर्यायों को समस्त रूप से जानते हैं भिन्न २ रूप से नहीं जानते।

(५) ज्ञान मात्र ज्ञान को ही जानता है।

(६) सर्वज्ञ के ज्ञान में पदार्थ झलकते हैं किन्तु भूत भविष्य की पर्यायें स्पष्ट रूप से नहीं झलकती।

क्या उन त्यागी पंडित नाम धराने वालों का कहना ठीक है या गलत है ?

उ० बिल्कुल गलत है।

(१) शास्त्र तमाम भवलिंगी मुनियों के बनाये हुए हैं उनमें भूत और भविष्यत की पर्यायों का स्पष्ट उल्लेख है जबकि अवधिज्ञानी, मन:पर्यय ज्ञानी तो भूत भविष्य की पर्यायों को जाने केवली ना जाने देखो कितना अनर्थ है।

(२) भरत जी ने भूत भविष्यत वर्तमान चौबीसी की स्थापना की, वह कहां से आई;

(३) मारीच २४वां तीर्थंकर होगा; द्वारिका में १२ वर्ष बाद आग लगेगी—यह कहां से आई;

(४) करणानुयोग में जीव ऐसे भाव करता है तब ऐसा २ कर्म का निमित्त-नैमित्तिक संबंध होगा, यह कहां से आया है;

(५) चरणानुयोग में जीवने ऐसे व्रत का भाव किया है उसके फल से देव हुआ, यह कहां से आया;

(६) प्रथमानुयोग तो भूत भविष्यत वर्तमान सबको बताता है यह इसका जीता जागता प्रमाण है।

(७) समयसार गा० ३०७ से ३११ तक स्पष्ट आया है। इस- लिऐ वास्तव में आजकल भगवान की आज्ञा न मानने से पंडितों त्यागियों में सर्वज्ञ के विषय में उल्टो धारणा है। इसलिए उनको वर्तमान में सच्चे ज्ञानियों का समागम करके अपनी भूल मिटा लेनी चाहिए।

प्रश्न में जो ६ बातें आई है उन्होंने सर्वज्ञ को अल्पज्ञ माना यह उनकी चारों गतियों में घूमने की बात है।

प्र० ३०. जब ज्ञान में अनादि और अनन्त पर्यायें एक साथ आ जाती है तब तो उनका आदि और अन्त भी आ गया ?

उ० नहीं आया। अनादि कहने से आदि नहीं है और अनन्त कहने से अन्त यह अर्थ नहीं है।

प्र० ३१. अनादि कहने से आदि क्यों नहीं ? अनंत कहने से अन्त क्यों नहीं ?

उ० केवलज्ञानी अनादि को अनादि रूप से और अनंत को अनंत रूप से जानते हैं।

प्र० ३२. जिसमें ज्ञान गुण हो उसमें प्रमेयत्व गुण होगा या नहीं ?
उ० अवश्य ही होगा।

प्र० ३३. ज्ञानी सुखी क्यों है ? अज्ञानी दुःखी क्यों है ?
उ० ज्ञानी संसार के पदार्थों के साथ ज्ञेय-ज्ञायक संबन्ध मानता है इसलिये सुखी है और अज्ञानी पर पदार्थों के साथ कर्ता-कर्म, भोक्ता-भोग्य संबंध मानता है इसलिये दुःखी है।

प्र० ३४. सातवें नर्क में सम्यग्दृष्टि जीव सुखी है उन्होंने ज्ञेय-ज्ञायक संबन्ध माना ?
उ० हां। उन्होंने ज्ञेय-ज्ञायक संबन्ध माना है तभी तो ज्ञानी बने।

प्र० ३५. हमको तो पदार्थों के साथ कर्ता-कर्म, भोक्ता-भोग्य संबन्ध ही जान पड़ता है ज्ञेय-ज्ञायक नहीं, इसका क्या कारण है ?
उ० (१) अज्ञानी को पीलिया रोग हो गया इसलिये उसे उल्टा मालूम पड़ता है।
(२) जैसे रेल में पेड़ चलते दिखते हैं; उसी प्रकार अज्ञानी को पर द्रव्यों के साथ कर्ता-कर्म, भोक्ता-भोग्य संबंध दिखता है। वास्तव में रेल चलती है पेड़ नहीं चलते; उसी प्रकार वास्तव में ज्ञेय-ज्ञायक संबन्ध है।
(३) "बछेरे के अण्डे के समान आत्मा ने किया ऐसा मानता है। बछेरे के अण्डे का दृष्टान्त निम्न प्रकार से है:—

एक बार एक दरबार दो सुन्दर घोड़े के बछेरों को खरीदने

के लिये बाहर निकला। दरबार पहले कभी महल से बाहर नहीं निकला था, इसलिये उसे दुनिया का कोई अनुभव नहीं था। वह बछेरे खरीदने एक गांव से दूसरे गांव में जा रहा था। बीच में उसे कुछ ठग मिले। बातचीत में उन ठगों ने जान लिया कि दरबार बिल्कुल अनुभवहीन है और बछेरे खरीदने बहार निकला है। उन ठगों ने दरबार को ठगने का निश्चय किया और दो काशीफल लेकर एक पेड़ पर टांग दिये। उसी पेड़ के पास वाली झाड़ी में दो खरगोश के बच्चे छिपे बैठे थे। उन ठगों ने दरबार से कहा हमारे पास बछेरों के दो सुन्दर अण्डे हैं इनमें से दो सुन्दर बछेरे निकलेंगे। दरबार से सौदा तय करके दो हजार रुपये ले लिये। फिर उस पेड़ पर छिपाकर रक्खे हुए दोनों काशीफलों को नीचे गिरा दिया। नीचे गिरते ही वे फट गये और जोर से धड़ाका हुआ। उस धड़ाके की आवाज सुनकर वे खरगोश के बच्चे झाड़ी में से निकलकर भागे। तब वे ठग ताली बजाकर हंसे और बोले—महाराज! महाराज! अन्डे तो फूट गये। वे तुम्हारे दोनों बछेरे भागे जा रहे हैं। पकड़ो, पकड़ो। दरबार उन्हें सचमुच बछेरे जानकर उन्हें पकड़ने दौड़ा। परन्तु वे खरगोश किसी झाड़ी में छिप गये। हाथ न आए, दरबार मन मारकर घर आ गया। घर आकर अन्तःपुर के लोगों ने पूछा कि महाराज, बछेरों का क्या हुआ। तब दरबारने अन्डे खरीदने की समस्त वार्ता कह सुनाई और कहने लगा कि इतने सुन्दर बछेरे निकले कि निकलते ही दौड़ पड़े। अन्तःपुर के लोगों ने कहा कि महाराज आप मूर्ख हो गये हैं—कहीं बछेरों के अन्डे भी होते हैं परन्तु दरबार ने कहा अरे! मैंने अपनी आंखों से देखें हैं। परन्तु कोई पूछे, अरे! जब बछेरे के अन्डे होते ही नहीं तो तुमने देखे कहां से हैं; उसी

प्रकार अज्ञानी जीव कहता है कि "आत्मा पर द्रव्य के कार्य को करता देखा जाता है। अरे भाई, जब आत्मा परद्रव्य का कुछ कर ही नहीं सकता तो तूने देखा कहाँ से। खोटी दृष्टि से अज्ञानी को जड़ की क्रिया चेतन करता हुआ भासित होता है। आत्मा ने यह क्रिया की, यह तो नजर नहीं आता। यह देखो हाथ में लकड़ी है। अब यह ऊंची हो गयी, इसमें आत्मा ने क्या किया। आत्मा ने यह जाना तो सही कि लकड़ी पहले नीचे थी और अब ऊपर हो गई है। परन्तु आत्मा लकड़ी को ऊंचा करने में समर्थ नहीं है। अज्ञानी मानता है मैंने लकड़ी को ऊंची की है सो विपरीत मान्यता है। इसलिए—

(१) एक आत्मा दूसरी आत्मा का कुछ नहीं कर सकता है
(२) एक आत्मा जड़ का कुछ नहीं कर सकता है
(३) एक पुद्गल दूसरे पुद्गल का कुछ नहीं कर सकता है
(४) एक पुद्गल आत्मा का कुछ नहीं कर सकता है ऐसा मानना सम्यग्ज्ञान है इससे उल्टा मानना महान पाप मिथ्यात्व है।

प्र० ३६. ज्ञेय-ज्ञायक संबन्ध किसने माना और जाना ?

उ० जिसने अपने आश्रय से सम्यग्दर्शनादि प्रगट किये उसने जाना।

प्र० ३७. संसार में ज्यादातर जनता कर्ता-कर्म भोक्ता-भोग्य की ही बातें करती है क्या यह सब पागल हैं ?

उ० वास्तव में निगोद से लगाकर द्रव्यलिंगी मुनि तक सब पागल हैं।

प्र० ३८. मैं सबको कैसे जान सकता हूं ऐसी मान्यता वाला क्या भूलता है ?

उ० प्रमेयत्व गुण को भूलता है।

प्र० ३९. मैं शरीर का, बाल बच्चों का कर सकता हूँ ऐसी मान्यता वाला क्या भूलता है ?

उ० प्रमेयत्व गुण को भूलता है क्योंकि शरीर के साथ, बाल बच्चों के साथ संबन्ध है ज्ञेयपने का, माना कर्तापने का।

प्र० ४०. मैं पर का कर्ता भोगता हूँ ऐसी मान्यता वाला कौन है ?

उ० (१) जिनमत से बहार द्विक्रियावादी है।

(२) पर के साथ ज्ञेय-ज्ञायक संबध है माना कर्ता और भोगता का तो उसने प्रमेयत्व गुण को नहीं माना।

प्र० ४१. आत्मा का और द्रव्य कर्मों का कर्ता-कर्म संबंध है ना ?

उ० बिल्कुल नहीं। मात्र ज्ञेय-ज्ञायक संबंध है। अथवा निमित्त-नैमित्तिक संबंध है जो दोनों की स्वतंत्रता का ज्ञान कराता है।

प्र० ४२. शास्त्रों में कथन आता है कि (१) कर्म जीव को चक्कर कटाता है, (२) ज्ञानावर्णी के अभाव से केवलज्ञान होता है (३) दर्शन मोहनीय के सद्भाव से मिथ्यात्व रहता है और अभाव से क्षायिक सम्यक्त्व होता है क्या यह कथन झूठा है ?

उ० यह व्यवहार कथन है इसका अर्थ ऐसा है नहीं, निमित्तादि की अपेक्षा कथन किया है ऐसा जानना चाहिए।

प्र० ४३. लड़का आज्ञा न माने, स्त्री हमारे मुताबिक न चले तो क्या क्रोध नहीं आवेगा ?

उ० लड़का आज्ञा न माने, स्त्री हमारे मुताबिक न चले, वह हमारे ज्ञान का ज्ञेय है ऐसा माने तो क्रोध नहीं आवेगा, तब प्रमेयत्व गुण को माना और उनके कारण क्रोध माना तो प्रमेयत्व गुण को नहीं माना।

प्र० ४४. प्रमेयत्व गुण का मर्म समझने के लिये किसका आदर्श रक्खें ?

उ० (१) सिद्ध भगवानों का। मन्दिर जी में अरहंत भगवान को अपना आदर्श माने तो प्रमेयत्व गुण का मर्म समझ में आवे। जैसे मन्दिर में कोई चोरी करे, किसी का बुरा विचारे तो भगवान अरहंत कहते हैं जानों और देखो क्योंकि वह तुम्हारे ज्ञान का ज्ञेय है। साक्षात समोशरण में अनेक जीव होते हैं विरोध भी होता है तो क्या भगवान नहीं जानते ? जानते तो हैं उन्हें क्रोधादि क्यों नहीं आता ? उन्हें वह ज्ञेय जानते हैं। हम भी सबको ज्ञेय माने तो भगवान की आज्ञा मानी और प्रमेयत्व गुण को माना।

प्र० ४५. देव गुरु शास्त्र क्या बताते हैं ?

उ० तेरा संसार के पदार्थों के साथ मात्र ज्ञेय-ज्ञायक संबंध हैं कर्ता-कर्म, भोक्ता-भोग्य संबंध नहीं है:—

सकल ज्ञेय ज्ञायक तदपि, निजनंद रस लीन।
सो जिनेन्द्र जयवन्त नित,अरि रज रहस विहीन ॥

प्र० ४६. संसार में जीव दुःखी क्यों है ?

उ० भगवान की आज्ञा न मानने से।

अनादिकाल से आजतक भगवान की आज्ञानुसार चला ही नहीं अपनी मर्जी के अनुसार भगवान की आज्ञा का पालन अनन्त बार किया, परन्तु भगवान की आज्ञानुसार आज्ञा का पालन एक समय भी ना किया इसलिए जीव संसार में दुःखी है।

प्र० ४७. प्रमेयत्वपना किस २ में है ?

उ० प्रत्येक द्रव्य गुण और पर्याय में प्रमेयत्वपना है।

प्र० ४८. प्रमेय (ज्ञेय) क्या २ है ?

उ० (१) छह द्रव्य उनके गुण और पर्याय हैं।

(२) विकारी भाव और अपूर्ण पूर्ण शुद्ध पर्याय सब ज्ञेय हैं। ज्ञानी तो अपनी और पर की परणति को जानता हुआ प्रवर्तता है।

प्र० ४९. हमें भगवान से और शुभ भावों से लाभ है ना ?

उ० उसने प्रमेयत्व गुण को नहीं माना क्योंकि भगवान और शुभ भाव ज्ञान का ज्ञेय हैं। माना लाभ, तो प्रमेयत्व गुण को नहीं माना।

प्र० ५०. ज्ञानी क्या जानता है ?

उ० सब द्रव्य गुण प्रमेय से, बनते विषय हैं ज्ञान के।
रुकता न सम्यग्ज्ञान परसे, जानियों यों ध्यान से ॥
आत्मा अरूपी ज्ञेय निज, यह ज्ञान उसको जानता।
है स्व-पर सत्ता विश्व में, सुदृष्टि उनको जानता ॥

•—•

पाठ १५

अगुरूलघुत्व गुण

प्र० १. अगुरूलघुत्व गुण किसे कहते हैं ?

उ० जिस शक्ति के कारण द्रव्य का द्रव्यत्व बना रहे। अर्थात्

(१) एक द्रव्य दूसरे द्रव्य रूप नहीं होता है।

(२) एक गुण दूसरे गुण रूप नहीं होता हैं।

(३) द्रव्य में विद्यमान अनन्त गुण बिखरकर अलग २ ना हो जावें उस शक्ति को अगुरूलघुत्व गुण कहते हैं।

प्र० २. अपने जीव द्रव्य में अगुरूलघुत्व गुण के कारण उसके द्रव्य क्षेत्र काल भाव की मर्यादा बताओ ?

उ० (१) अनन्त गुणों का पिण्ड मेरे जीव द्रव्य का स्वद्रव्यपना स्थायी रहता है, वह कभी भी दूसरे अनन्त जीवरूप, अनंतानंत पुद्गल रूप, धर्म, अधर्म, आकाश और कालरूप, द्रव्य कर्म रूप, आंख, नाक, शरीररूप, मन, वाणी रूप नहीं होता है।

(२) मेरे जीव द्रव्य का असंख्यात प्रदेशी स्वक्षेत्र अपने क्षेत्र में रहता है, वह कभी भी दूसरे जीवों के क्षेत्ररूप, द्रव्यकर्म के क्षेत्ररूप, पुद्गल आदि दूसरे द्रव्यों के क्षेत्ररूप, आंख,

कान, शरीर के क्षेत्ररूप, सम्मेदशिखर, गिरनार आदि क्षेत्ररूप कभी भी नहीं होता हूँ।

(३) मेरे जीव के गुणों की पर्याय अपने अपने रूप होती है, पर द्रव्यों के गुणों की पर्यायरूप नहीं होती है। मेरे एक गुण की पर्याय दूसरे गुण की पर्याय रूप नहीं होती है। जिस गुण की पर्याय है वह पर्याय आगे पीछे नहीं होती है।

(४) मेरे जीव द्रव्य के अनंत गुण हैं वह जिस रूप हैं सदा काल उसी रूप रहते हैं कभी भी बिखरकर अलग नहीं होते हैं।

प्र० ३. यह तो आपने अपने जीव द्रव्य में अगुरूलघुत्व गुण के कारण द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव की बात करी। अब आप प्रत्येक द्रव्य के विषय में क्या मर्यादा है, जरा स्पष्ट रूप से समझाओ ?

उ० विश्व में जीव अनंत, जीव से अनंत गुणा अधिक पुद्गल द्रव्य हैं—धर्म, अधर्म, आकाश एक २ और लोक प्रमाण असंख्यात काल द्रव्य हैं। इनका एक द्रव्य से दूसरे द्रव्य का किसी भी प्रकार का संबन्ध नहीं है। एक द्रव्य दूसरे द्रव्यों की अपेक्षा अद्रव्य, अक्षेत्र, अकाल और अभावरूप है। जैसे एक पुद्गल परमाणु है उसका दूसरे पुद्गलों, जीवों, बाकी द्रव्यों से कोई संबन्ध नहीं है, क्योंकि अनादिनिधन वस्तु जुदी २ अपनी २ मर्यादा लिये परिणमै है कोई किसी का परिणाम या परिणमता नाही।

प्र० ४. छहों द्रव्यों और उनके गुण पर्यायों की स्वतंत्रता जानने से क्या लाभ है ?

उ० (१) एक द्रव्य अपने स्वचतुष्टय से है पर चतुष्टय से नहीं है।

ऐसा जानकर अपना हित और अहित अपने से ही होता है ऐसा यथार्थ ज्ञान हो जाता है।

(२) मुझे संसार का कोई भी द्रव्यकर्म, नोकर्म हाणि लाभ नहीं कर सकता।

(३) ऐसा जानकर मैं अनादि अनंत भगवान हूं मेरा किसी से भी संबन्ध नहीं है, अपने स्वभाव का आश्रय ले तो धर्म की प्राप्ति हो।

प्र० ५. क्या द्रव्यकर्म के अनुसार जीवों में कार्य होता है ?

उ० बिल्कुल नहीं। (१) दो द्रव्यों को स्वतंत्र भिन्न नहीं जाना। (२) द्रव्य में अगुरूलघुत्व गुण को नहीं माना।

प्र० ६. छहों द्रव्यों की गुण पर्यायों की मर्यादा की स्वतंत्रता किस गुण से है ?

उ० अगुरूलघुत्व गुण से है।

प्र० ७. अगुरूलघुत्व गुण से क्या २ पता चलता है ?

उ० (१) एक द्रव्य का दूसरे द्रव्य से किसी भी प्रकार का संबंध नहीं है क्योंकि प्रत्येक द्रव्य का द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव पृथक पृथक है।

(२) एक द्रव्य में अनंत २ गुण हैं उन अनंत गुणों का आपस में भी संबंध नहीं है क्योंकि प्रत्येक गुण का भाव पृथक २ है।

(३) एक द्रव्य में अनंत २ गुण हैं वह बिखर कर अलग २ नहीं होते हैं क्योंकि उन गुणों का द्रव्य, क्षेत्र, काल एक ही है।

(४) एक गुण की पर्याय का उसी गुण की भूत, भविष्य पर्यायों से संबंध नहीं है।

इस प्रकार अगुरूलघुत्व गुण से स्वतंत्रता का पता चलता है।

प्र० ८. क्या एक द्रव्य में रहने वाले गुण परस्पर एक दूसरे का कार्य करते हैं ?

उ० बिल्कुल नहीं, क्योंकि अगुरूलघुत्व गुण के कारण एक गुण दूसरे गुणरूप नहीं होता इसलिये एक गुण का कार्यक्षेत्र दूसरे गुण में नहीं जाता है।

प्र० ९. एक गुण दूसरे गुण में कार्य क्यों नहीं करता ?

उ० प्रत्येक गुण नित्य परिणमन स्वभावी होने से प्रति समय अपनी नई नई पर्यायें उत्पन्न करता है इसप्रकार एक द्रव्य के आश्रित गुणों में भी स्वतंत्रता होने से एक गुण का दूसरे गुण के साथ कर्ता-कर्म संबंध नहीं है।

प्र० १०. एक द्रव्य का दूसरे द्रव्य से संबंध नहीं है परन्तु अन्दर अनंत गुणों से भी संबंध नहीं है इस बात को स्पष्ट करिये ?

उ० (१) जैसे किसी जीव को सम्यग्दर्शन हो गया तो वहां चारित्र, ज्ञान, दर्शन, वीर्य गुण में कमी है।

(२) चारित्र गुण पूर्ण हो गया तो ज्ञान, दर्शन, वीर्य अपूर्ण है।
(३) ज्ञान, दर्शन, वीर्य पूर्ण हो गया तो योग गुण विकारी है।
(४) योग गुण शुद्ध होगया, क्रियावती शक्ति आदि गुणों में अशुद्धि है।

पुद्गल में स्पर्श, रस, गंध, वर्ण हैं। आम खट्टा हो ऊपर से पीला हो, और मीठा हो ऊपर से हरा हो। इसलिये एक गुण का दूसरे गुण से संबंध नहीं है, ऐसा जानकर अपने स्वभाव का आश्रय लेना पात्र जीव का कर्त्तव्य है।

प्र० ११. (१) गुरू से ज्ञान की प्राप्ति हुई (२) मैं चश्मे से पुस्तक को पढ़कर ज्ञान करता हूं (३) ब्राह्मी तेल के प्रयोग से ज्ञान बढ़ता है (४) दूध में दही मिलाने से सब दही जम जाता है (५) शास्त्र से ज्ञान होता है। आदि वाक्यों में कौनसे गुण को नहीं माना और कब माना स्पष्ट करो ?

उ० (१) गुरू से ज्ञान की प्राप्ति हुई:—गुरू और शिष्य की आत्मा में एक द्रव्य से दूसरे द्रव्य का संबंध नहीं है तो अगुरूलघुत्व गुण को नहीं माना। और ज्ञान की प्राप्ति अपने ज्ञान गुण में से हुई गुरू से नहीं तब अगुरूलघुत्व गुण को माना।

(२) मैं चश्मे से पुस्तक पढ़कर ज्ञान करता हूँ—मेरी आत्मा का चश्मे पुस्तक से संबंध नहीं है। इससे ज्ञान होता है तो अगुरूलघुत्व गुण को नहीं माना। ज्ञान ज्ञान गुण से होता है, चश्मा किताब से नहीं तब अगुरूलघुत्व गुण को माना।

(३) ब्राह्मी के तेल से ज्ञान बढ़ता है—अगुरूलघुत्व गुण को नहीं माना। ज्ञान ज्ञान से बढ़ता है, तेल से नहीं तब अगुरू-लघुत्व को माना है।

(४) दूध में दही मिलाने से पूरा दही जमता है अगुरूलघुत्व गुण को नहीं माना। दूध अपनी योग्यता से जमता है, दही से नहीं तब अगुरूलघुत्व को माना।

(५) शास्त्र से ज्ञान होता है—अगुरूलघुत्व गुण को नहीं माना। ज्ञान ज्ञान से होता है, शास्त्र से नहीं तब अगुरूलघुत्व गुण को माना।

प्र० १२. जीव पुद्गल में करता है ऐसा माने तो क्या २ दोष आते हैं ?

उ० (१) जीव पुद्गल का द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव पृथक २ हैं। जब द्रव्य में रहने वाले अनंत गुण आपस में कुछ नहीं करते तब पृथक २ द्रव्य करें यह बात झूठी है।

(२) ऐसी मान्यता वाले ने अगुरूलघुत्व गुण को नहीं माना।

(३) जीव अपना अस्तित्व रखता हुआ अपना प्रयोजनभूत कार्य करता हुआ निरन्तर बदलता है तब दोनों के (जीव पुद्गल के) अस्तित्व, वस्तुत्व, द्रव्यत्व गुण को नहीं माना।

प्र० १३. एक द्रव्य में अनंत २ गुण हैं उनका द्रव्य क्षेत्र काल एक ही है तब एक गुण दूसरे गुण में क्यों नहीं कर सकता।

उ० प्रत्येक गुण के भाव में अन्तर होने से एक गुण दूसरे गुण में कुछ नहीं कर सकता है।

प्र० १४. द्रव्य में विद्यमान अनंत गुण बिखर कर अलग २ नहीं होते ऐसा क्यों है ?

उ० प्रत्येक द्रव्य के गुणों का द्रव्य, क्षेत्र, काल एक होने से वह द्रव्य से बिखरकर अलग २ नहीं हो सकते हैं।

प्र० १५. (१) आदिनाथ भगवान ने दूसरे जीवों का कल्याण किया (२) मैं दूसरों का भला कर सकता हूँ (३) दिव्यध्वनि से ज्ञान की प्राप्ति होती है (४) नेमिनाथ भगवान ने राजुल का भला किया (५) धर्म द्रव्य हमको चलाता है (६) दर्शन मोहनीय के क्षय से क्षायिक सम्यक्त्व होता है (७) अन्तराय कर्म के क्षय से क्षायिक वीर्य प्रगट होता है (८) आंखों से ज्ञान प्राप्त होता है (९) श्रद्धा गुण से ज्ञान गुण में कार्य होता है (१०) चारित्र गुण से श्रद्धा में काम होता है (११) आम मीठा हो तो रंग पीला होता है (१२) निमित्त से उपादान में कार्य होता है। आदि वाक्यों के मानने में क्या २ दोष आता है और ऐसा मानने से कौन २ से गुण को नहीं माना और कैसा २ माने तो कौन २ से गुण को माना ?

उ० (१) आदिनाथ भगवान ने दूसरे जीवों का भला किया—

(I) आदिनाथ भगवान और दूसरे जीवों का द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव पृथक २ हैं। यदि भगवान दूसरे जीवों का कुछ भला करें तो भगवान की सत्ता के अभाव का प्रसंग उपस्थित

होता है।

(II) जब स्वचतुष्टय भगवान की आत्मा का अलग है और दूसरे द्रव्यों का अलग है तो आदिनाथ भगवान ने किया तो अगुरुलघुत्व गुण को नहीं माना।

(III) आदिनाथ भगवान कायम रहते हुये अपनी प्रयोजनभूत क्रिया करते हुये निरन्तर बदलते हैं और दूसरे जीव अपनी क्रिया करते हुये निरन्तर बदलते हैं; दोनो का कार्य अपने २ अस्तित्व, वस्तुत्व, द्रव्यत्व गुण से हो रहा है उसके बदले आदिनाथ भगवान ने किया तो भगवान के अस्तित्व, वस्तुत्व, द्रव्यत्व गुण को उड़ा दिया और दूसरे जीवों के अस्तित्व, वस्तुत्व, द्रव्यत्व गुण को भी उड़ा दिया।

प्र० तो क्या करें ?

उ० आदिनाथ भगवान ने दूसरे जीवों का भला किया ही नहीं तब दोनों की सत्ता भिन्न २ मानी।

अगुरुलघुत्व गुण को माना। प्रत्येक द्रव्य के अस्तित्व, वस्तुत्व, द्रव्यत्व गुण को माना। इसीप्रकार ११ वाक्यों में लगाओ।

प्र० १६. एक परमाणु दूसरे परमाणु में करता है या ?

उ० (१) एक परमाणु का दूसरे परमाणु से द्रव्य क्षेत्र काल भाव पृथक २ है।

(२) एक परमाणु दूसरे परमाणु का करता है अगुरुलघुत्व

गुण को नहीं माना।

(३) एक परमाणु कायम रहता हुआ, बदलता हुआ अपना प्रयोजनभूत कार्य करता है। ऐसे ही दूसरा परमाणु करता है, इसके बदले एक एक परमाणु दूसरे परमाणु में करता है तो दोनों परमाणुओं के अस्तित्व, वस्तुत्व, द्रव्यत्व गुण को उड़ा दिया।

प्र० १७. निमित्त से उपादान में कार्य होता है या ?

उ० बिल्कुल नहीं।

(१) निमित्त उपादान का द्रव्य क्षेत्र, काल, भाव अलग २ है तब निमित्त ने उपादान में किया तो एक के अभाव का प्रसंग उपस्थित होता है।

(२) निमित्त ने उपादान में किया तो दोनों के अगुरुलघुत्व गुण को नहीं माना।

(३) दोनों के अस्तित्व, वस्तुत्व, द्रव्यत्व गुण को उड़ा दिया।

प्र० १८. श्रद्धा पूर्ण होते ही चरित्र पूर्ण हो जाना चाहिए ऐसो मान्यता वाला क्या भूलता है ?

उ० (१) अगुरुलघुत्व गुण के दूसरे पाखड़े को भूलता है।

(२) श्रद्धा पूर्ण होते ही चारित्र पूर्ण हो जाना चाहिए तो उसने श्रावक, मुनि, श्रेणी को भी उड़ा दिया।

प्र० १९. जब जिनेन्द्र भगवान ने द्रव्य गुण पर्याय की इतनी स्वतंत्रता बताई है तब यह अज्ञानी क्यों विश्वास नहीं करता है ?

उ० चारों गतियों में घूमकर निगोद में जाना अच्छा लगता है।

प्र० २०. एक गुण दूसरे गुण में कुछ नहीं करता है तो अस्तित्व गुण कायम रखता है, वस्तुत्व गुण सबको प्रयोजनभूत कार्य कराता है, द्रव्यत्व गुण निरन्तर बदलता है ऐसा क्यों कहा जाता है ?

उ० यह व्यवहार कथन है। एक गुण की वर्तमान पर्याय होने से दूसरे गुण की वर्तमान पर्याय निमित्त कहलाती है।

प्र० २१. एक गुण की पर्याय का दूसरे गुण की पर्याय के साथ कैसा सबंध है ?

उ० निमित्त-नैमित्तिक संबंध है, कर्ता-कर्म नही है।

प्र० २२. निमित्त नैमित्तिक संबंध तो दो द्रव्यों की स्वतंत्र पर्यायों के बीच पहले आपने बताया था, अब आपस में एक गुण की पर्याय का दूसरे गुण की पर्याय में भी निमित्त-नैमित्तिक संबन्ध है ऐसा कहते हो ?

उ० हां ऐसा ही है।

प्र० २३. ज्ञान गुण कायम अस्तित्व गुण से है ना ?

उ० ज्ञान गुण कायम अपने से है अस्तित्व गुण निमित्त है।

प्र० २४. ज्ञानगुण प्रयोजनभूत कार्य वस्तुत्व गुण से करता है ना ?

उ० ज्ञानगुण प्रयोजनभूत कार्य अपने से करता है वस्तुत्व गुण निमित्त है।

प्र० २५. ज्ञानगुण निरन्तर बदलता है वह द्रव्यत्व गुण से है ना ?

उ० ज्ञानगुण स्वयं से बदलता है उसमें द्रव्यत्व गुण निमित्त है।

प्र० २६. (१) श्रद्धागुण कायम अस्तित्व गुण से है ? (२) श्रद्धागुण का प्रयोजनभूत कार्य वस्तुत्व गुण से है ना ? (३) क्या श्रद्धागुण निरन्तर द्रव्यत्व गुण से बदलता है?(४) शुभ भाव से चारित्र की शुद्धि होती है ना? (५) सब गुण ज्ञेय प्रमेयत्व गुण से है ना ?

उ० (१) श्रद्धागुण कायम अपने से है अस्तित्व गुण निमित्त है। बाकी प्रश्नों के उत्तर जबानी दो।

प्र० २७. (१) क्या आयु के शुरू होने पर शरीर आत्मा एक होकर रहते हैं? (२) क्या भाषा जीव बोलता है ? (३) क्या सम्यग्दर्शन से सम्यग्ज्ञान होता है ? (४) क्या पुण्य से धर्म होता है ? (५) क्या श्रुतज्ञान से केवलज्ञान होता है ? (६) क्या आईसक्रीम खाने से शान्ति मिलती है ? इनमें अगुरूलघुत्व गुण के कौन २ हिस्से लगते हों लगाओ ?

उ० (१) क्या आयु के शुरू होने पर शरीर आत्मा एक होकर रहते हैं ? इसमें एक द्रव्य का दूसरे द्रव्य से संबंध नहीं है इस बात को नहीं माना, अगुरूलघुत्व गुण का पहला नम्बर उड़ा दिया। इसी प्रकार बाकी लगाओ।

प्र० २८. अगुरूलघुत्व गुण का क्षेत्र कितना बड़ा है और क्यों ?

उ० जितना बड़ा द्रव्य का है उतना क्षेत्र अगुरूलघुत्व गुण का है क्योंकि अगुरूलघुत्व गुण द्रव्य के सम्पूर्ण भाग में होता है।

प्र० २९. अगुरूलघुत्व गुण का काल कितना और क्यों ?

उ० जितना काल द्रव्य का है उतना ही काल अगुरूलघुत्व गुण का है क्योंकि अगुरूलघुत्व गुण द्रव्य की सम्पूर्ण अवस्थाओं में त्रिकाल पाया जाता है।

प्र० ३०. एक परमाणु के अगुरूलघुत्व गुण का क्षेत्र कितना बड़ा है ?

उ० एक प्रदेशी है।

प्र० ३१. आकाश के अगुरूलघुत्व गुण का क्षेत्र कितना बड़ा है ?

उ० अनन्त प्रदेशी है।

प्र० ३२. धर्मादि द्रव्यों में भी अगुरूलघुत्व गुण है ?

उ० हां है, क्योंकि धर्मादि द्रव्य भी द्रव्य हैं और अगुरूलघुत्व गुण प्रत्येक द्रव्य का सामान्य गुण है इसलिये धर्मादि में भी है।

प्र० ३३. संसार दशा में गुण कम हों, सिद्ध दशा होने पर ज्यादा हो जावें क्या ऐसा होता है ?

उ० कभी नहीं। (१) क्योंकि द्रव्य में अगुरूलघुत्व गुण होने से गुणों की संख्या और शक्ति कम ज्यादा नहीं होती है।

(२) गुण सर्व अवस्थाओं में जितने हैं उतने ही रहते हैं।

प्र० ३४. अगुरूलघुत्व गुण क्या बताता है ?

उ० यह गुण अगुरूलघु भी, सदा रखता है महत्ता महा।
गुण द्रव्य को पररूप, यह होने न देता है अहा।
निज गुण-पर्यय सर्व ही, रहते सतत् निजभाव में।
कर्ता न हर्ता अन्य कोई, यों लखो स्व-स्वभाव में।

प्र० ३५. एक द्रव्य के गुण परस्पर में कुछ नहीं करते कहाँ कहा है ?

उ० पंचाध्यायी अध्याय दूसरा गाथा २००८ से १०१० में भी कहा है "कोई भी गुण किसी प्रकार दूसरे गुण में अंतर्भूत नहीं होता"…"सभी गुण अपनी २ शक्तियों से स्वतंत्र हैं और वे भिन्न २ लक्षण वाले अनेक हैं, तथापि स्वद्रव्य के साथ एकमेक हैं।

—०—

चेतावनी

स्वतः परिणमती वस्तु के, क्यों कर्ता बनते जाते हो।
कुछ समझ नहीं आती तुमको, निःसत्व बने ही जाते हो।
अरे कौन निकम्मा जग में है, जो पर का करने जाते हो।
सब अपने अन्दर रमते हैं, सब किस विधि करण रचाते हो।
वस्तु की मालिक वस्तु है, जो मालिक है वही कर्ता है।
फिर मालिक के मालिक बनकर, क्यों नीति न्याय गमाते हो।
सत् सब स्वयं परिणमता है, वह नहीं किसी को सुनता है।
यह माने बिन कल्याण नहीं, कोई कैसे ही कुछ कहता हो।

—०—

पाठ १९

प्रदेशत्व गुण

प्र० १. प्रदेशत्व गुण किसे कहते हैं ?

उ० जिस शक्ति के कारण से द्रव्य का कोई न कोई आकार अवश्य रहता है उस शक्ति को प्रदेशत्व गुण कहते हैं।

प्र० २. प्रदेशत्व गुण क्या है ?

उ० प्रत्येक द्रव्य का सामान्य गुण है।

प्र० ३. सिद्ध भगवान निराकार हैं या साकार हैं ?

उ० सिद्ध भगवान दोनों हैं। क्योंकि पुद्गल जैसा आकार नहीं है इस अपेक्षा सिद्ध भगवान निराकार हैं और प्रदेशत्व गुण के कारण उनका आकार है इसलिए साकार हैं।

प्र० ४. प्रत्येक आत्मा साकार निराकार किस प्रकार है ?

उ० (१) प्रदेशत्व गुण के कारण प्रत्येक आत्मा का अरूपी आकार है इसलिए साकार है। और आत्मा का रूपी आकार नहीं है इसलिए निराकार है।

प्र० ५. क्या द्रव्य, गुण, पर्याय—तीनों का भिन्न भिन्न अथवा छोटा

बड़ा आकार है ?

उ० नहीं। द्रव्य का आकार ही गुण पर्याय का आकार है। तीनों का क्षेत्र एक है इसलिये द्रव्य गुण और पर्याय का आकार एक समान है छोटा बड़ा नहीं है।

प्र० ६. द्रव्य गुण अनादि अनंत है पर्याय एक समय की है तो उसमें किसका आकार बड़ा है ?

उ० दोनों का आकार एक सा है।

प्र० ७. कुछ चीजों का आकार दीर्घकाल तक एकसा दिखाई देता है, तो उसे परिवर्तित होने में कितना समय लगता है ?

उ० प्रति समय निरन्तर बदलते ही रहते हैं, किन्तु स्थूल दृष्टि से उनका आकार दीर्घकाल तक एक सा दिखाई देता है।

प्र० ८. सोने में से मुकट बना तो उसमें कौनसा गुण कारण है ?

उ० (१) आकार बदला प्रदेशत्व गुण कारण है।
(२) पुरानी अवस्था बदली इसमें द्रव्यत्व गुण कारण है।

प्र० ९. प्रदेशत्व गुण का शुद्ध परिणमन अनादि अनंत किस द्रव्य में होता है ?

उ० धर्म, अधर्म, आकाश और काल में अनादि अनंत शुद्ध होता है।

प्र० १०. प्रदेशत्व गुण के परिणमन को क्या कहते हैं ?

उ० व्यंजन पर्याय।

प्र० ११. प्रदेशत्व गुण का सादि अनंत शुद्ध परिणमन किस द्रव्य में, किस समय ?

उ० जीव द्रव्य में १४वें गुणस्थान के बाद सिद्ध दशा में सादि-अनंत शुद्ध परिणमन प्रदेशत्व गुण का होता है।

प्र० १२. सादिसान्त शुद्ध परिणमन प्रदेशत्व गुण का कब किस समय ?

उ० परमाणु में।

प्र० १३. अरहंत दशा में प्रदेशत्व गुण का परिणमन कैसा है ?

उ० विभाव रूप है।

प्र० १४. जीव द्रव्य में प्रदेशत्व गुण का विभाव रूप परिणमन कब से कहां तक ?

उ० निगोद से लगाकर १४वें गुणस्थान तक।

प्र० १५. किस द्रव्य में किस अवस्था में प्रदेशत्व गुण का परिणमन विभाव रूप ही रहता है।

उ० पुद्गल के स्कंध रूप दशा में और संसारी जीवों में।

प्र० १६. प्रत्येक द्रव्य में व्यंजन पर्याय कितनी होती हैं ?

उ० एक ही होती है।

प्र० १७. क्या सिद्ध दशा में प्रदेशत्व गुण का परिणमन सबका एक सा होता है ?

उ० नहीं। क्योंकि सिद्ध दशा में सबका आकार अलग २ है।

प्र० १८. परमाणु के प्रदेशत्व गुण का आकार एक सा है ?
उ० सब परमाणुओं का आकार एक सा ही है।

प्र० १९. प्रदेशत्व गुण का क्षेत्र कितना बड़ा, और क्यों ?
उ० जितना द्रव्य का है उतना ही क्षेत्र प्रदेशत्व गुण का है क्योंकि प्रदेशत्व गुण द्रव्य के सम्पूर्ण भागों में होता है।

प्र० २०. प्रदेशत्व गुण का काल कितना है और क्यों है ?
उ० जितना द्रव्य का है उतना ही काल प्रदेशत्व गुण का है क्योंकि प्रदेशत्व गुण द्रव्य की सम्पूर्ण अवस्थाओं में त्रिकाल रहता है।

प्र० २१ मैंने रोटी बना ई इसमें कौन २ से गुण को नहीं माना ?
उ० मेरा आकार रोटी रूप हो जावे सो ऐसा कहा जा सकता है मैंने रोटी बनाई। सो होता नहीं है। जो ऐसा मानता है मैंने रोटी बनाई उसने प्रदेशत्व गुण को नहीं माना। और रोटी का आकार अलग है मेरा आकार अलग है मैं रोटी बना ही नहीं सकता तब प्रदेशत्व गुण को माना।

प्र० २२. (१) कुम्हार ने घड़ा बनाया (२) मैं मनुष्य हूं (३) मैं मेज बनाता हूं (४) मैं मकान बनाता हूं (५) दर्जी ने कपड़े सिले (६) हलवाई ने मिठाई बनाई (७) मैंने किताब बनाई (८) मैंने कर्मों का नाश किया (९) सिद्ध भगवान ने आठों कर्मों का नाश किया (१०) सम्यग्दृष्टि जीव ने दर्शन मोहनीय का क्षय किया आदि में प्रदेशत्व गुण को कब नहीं माना, और उसका फल क्या है ? और प्रदेशत्व गुण को कब माना और उसका फल क्या है ?

उ० कुम्हार ने घड़ा बनाया = कुम्हार घड़े रूप हो जावे अर्थात् कुम्हार का आकार घड़े रूप हो जावे तो कहा जा सकता है कि कुम्हार ने घड़ा बनाया।

प्र० कुम्हार ने घड़ा बनाया ?

उ० प्रदेशत्व गुण को नहीं माना क्योंकि घड़े का आकार पृथक है आत्मा का आकार पृथक ऐसा न मानकर एक माना तो प्रदेशत्व गुण को नहीं माना।

प्र० कुम्हार ने घड़ा बनाया इसमें प्रदेशत्व गुण न मानने से क्या हुआ ?

उ० घड़ा अनन्त द्रव्यों का पिण्ड है अनन्त द्रव्यों का कर्ता बन गया। मिथ्यात्व का महान पाप हुआ।

प्र० कुम्हार ने घड़ा बनाया इसमें मिथ्यात्व का अभाव कैसे हो ?

उ० मैं आत्मा असंख्यात प्रदेशी आकार वाला हूं। घड़े का आकार तो अनन्त पुद्गलों का एक २ प्रदेशी आकार है मेरा उससे सम्बन्ध नहीं है, तब प्रदेशत्व गुण को माना।

प्र० प्रदेशत्व गुण को मानने से क्या लाभ रहा ?

उ० अपने असंख्यात प्रदेशी स्वभाव का आश्रय लेकर धर्म की प्राप्ति यह इसका फल है।

इसी प्रकार ६ वाक्यों को लगाओ।

प्र० २३. आत्मा में कितने प्रदेशत्व गुण हैं ?

उ० एक है ?

प्र० २४. शरीर में कितने प्रदेशत्व गुण हैं ?
उ० जितने परमाणु हैं उतने प्रदेशत्व गुण हैं क्योंकि प्रत्येक द्रव्य में एक प्रदेशत्व गुण होता है।

प्र० २५. प्रदेशत्व गुण को छोड़कर बाकी गुणों के परिणमन को क्या कहते हैं ?
उ० अर्थ पर्याय।

प्र० २६. प्रदेशत्व गुण क्या सूचित करता है ?
उ० प्रत्येक द्रव्य के आकार को बताता है।

प्र० २७. यह मेज है क्या इसका एक ही आकार है ?
उ० नहीं। मेज में जितने परमाणु हैं उतने आकार हैं।

प्र० २८. प्रदेशत्व गुण रूपी है या अरूपी ?
उ० पुद्गल का प्रदेशत्व गुण रूपी है बाकी द्रव्यों का अरूपी है।

प्र० २९. प्रदेशत्व गुण जड़ है या चेतन ?
उ० दोनों है। आत्मा का प्रदेशत्व गुण चेतन बाकी द्रव्यों का जड़ है?

प्र० ३०. प्रदेशत्व गुण के पर्यायवाची शब्द क्या २ हैं ?
उ० आकार कहो, क्षेत्र कहो, किलेबन्दी कहो एक ही बात है।

प्र० ३१. क्या लकड़ी के टुकड़े में कितने ही परमाणु एक दूसरे में घुस गये हैं।

उ० बिल्कुल नहीं । पंचास्तिकाय गा० ८१ में कहा है लकड़ी के टुकड़े में एक २ परमाणु पृथक-पृथक अपने २ गुण पर्यायों में वर्त रहा है ऐसा ज्ञानी जानते हैं ?

प्र० ३२. क्या निमित्त उपादान में घुसकर काम करता है ?

उ० निमित्त उपादान का आकार अलग है इसमें निमित्त उपादान में घुसकर काम करता है, प्रदेशत्व गुण को नहीं माना ।

प्र० ३३. शास्त्रों में आता है जहां एक सिद्ध बिराजमान है वहां पर अनन्त सिद्ध विराजमान हैं क्या सिद्ध जीव एक दूसरे में मिल गये हैं ?

उ० बिल्कुल नहीं । प्रत्येक सिद्ध जीव अपने २ असंख्यात प्रदेशी आकार में रहता है एक दूसरे में मिलता नहीं है । कोई कहे मिल जाता है तो प्रदेशत्व गुण को नहीं माना ।

प्र० ३४. महावीर का आकार सात हाथ का आदिनाथ भगवान का ५०० धनुष का, वह क्यों ?

उ प्रदेशत्व गुण के कारण ।

प्र० ३५. जिस स्थान में धर्म द्रव्य है उसी स्थान में अधर्म द्रव्य है क्या दोनों एक दूसरे में मिल गये हैं ?

उ० बिल्कुल नहीं । दोनों अपने २ असंख्यात प्रदेशी आकार में अपने २ द्रव्य क्षेत्रकाल भाव में रह रहे हैं । कोई कहे मिल गये हैं तो प्रदेशत्व गुण को नहीं माना ।

प्र० ३६. किन २ द्रव्यों का आकार नहीं है ना ?

उ० ऐसा कोई भी द्रव्य नहीं है जिसका आकार न हो क्योंकि प्रदेशत्व गुण प्रत्येक द्रव्य का सामान्य गुण है।

प्र० ३७. परमाणु और काल का प्रदेशत्व गुण कितना बड़ा है ?

उ० एक प्रदेशी है।

प्र० ३८. आकार रूपी है या अरूपी ?

उ० पुद्गल का आकार रूपी हैं बाकी द्रव्यों का आकार अरूपी है।

प्र० ३९. आकार की अपेक्षा सबसे बड़ा कौन है ?

उ० आकाश द्रव्य है।

प्र० ४०. आकार की अपेक्षा सामान्य द्रव्य कौन २ हैं ?

उ० धर्म अधर्म जीव द्रव्य का असंख्यात प्रदेशी आकार है।

प्र० ४१. जीव का आकार तो छोटा बड़ा होता है वह धर्म अधर्म द्रव्य के समान कैसे ?

उ० आकार तो एक सा ही है परन्तु जीव द्रव्य में संकोच विस्तार की शक्ति है। संकोच विस्तार होने पर भी जीव हमेशा असंख्यात प्रदेशी ही होता है।

प्र० ४२. प्रदेशत्व गुण और द्रव्यत्व गुण में क्या अन्तर है ?

उ० प्रदेशत्व गुण आकार को बताता है और द्रव्यत्व गुण निरन्तर परिणमन को बताता है।

प्र० ४३. सब आकार कितने हैं ?

उ० जितने द्रव्य हैं उतने ही आकार है।

प्र० ४४. जीव का आकार बड़ा हो तो लाभ हो और छोटा हो तो नुक-सान हो, क्या ऐसा होता है ?

उ० बिल्कुल नहीं। आकार सुख दुःख का कारण नहीं है।

प्र० ४५. जीव का प्रदेशत्व गुण शुद्ध हो जावे और गुणों में अशुद्धता रहे, क्या ऐसा होता है ?

उ० बिल्कुल नहीं। सिद्धदशा में प्रदेशत्व गुण शुद्ध होता है। इससे पहले सब गुणों का परिणमन शुद्ध हो जाता है

प्र० ४६. प्रदेशत्व गुण को जानने से क्या लाभ है ?

उ० प्रदेशत्व गुण की शक्ति से, आकार द्रव्यों को धरे।
निजक्षेत्र में व्यापक रहे, आकार भी स्वाधीन है।
आकार हैं सबके अलग, हो लीन अपने ज्ञान में।
जानों इन्हें सामान्य गुण, रक्खो सदा श्रद्धान में।
अपने असंख्यात प्रदेशों में एकत्व बुद्धि करके लीन हो जाना प्रदेशत्व गुण को जानने का लाभ है।

प्र० ४७. प्रदेशत्व गुण क्या बताता है ?

उ० कोई वस्तु अपने स्वक्षेत्र रूप आकार बिना नहीं होती, और आकार छोटा हो या बड़ा हो, वह हानि या लाभ का कारण नहीं है।

तथापि प्रत्येक द्रव्य की स्व-अवगाहनारूप अपना स्वतंत्र आकार अवश्यहोता है। एक के आकार से दूसरे के आकार का सम्बन्ध नहीं है ऐसा जानकर अपने आकार की ओर दृष्टि कर और भगवान बन।

—०—

पाठ १७

छह समान्य गुणों को एक २ वाक्य पर लगाना

प्र० १. मैं मनुष्य हूं इस पर छः सामान्य गुण लगाओ। प्रत्येक का पूरा २ स्पष्टीकरण करो ? सामान्य गुणों को उल्टे नम्बर से शुरू करो ?

उ० विचारियेगा। ध्यान पूर्वक जब समझ में आवेगा। यदि एक वाक्य पर छः सामान्य गुण लगाने आ गये तो जीवन में शान्ति आये बिना रहेगी नहीं।

प्र० २. 'मैं मनुष्य हूं' इस पर प्रदेशत्व गुण लगाओ ?

उ० (१) मैं आत्मा असंख्यात प्रदेशी मेरा आकार है।

(२) द्रव्यकर्म—अनन्त पुद्गल परमाणुओं के अनंत आकार हैं

(३) तैजस शरीर—अनंत पुद्गल परमाणुओं के अनन्त आकार हैं।

(४) औदारिक शरीर—अनन्त पुद्गल परमाणुओं के अनन्त आकार हैं।

मैं आत्म असंख्यात प्रदेशी एक मेरा आकार है और द्रव्य, कर्म, तैजस, शरोर, औदारिक शरीर अनंत पुद्गलों के अनन्त आकार हैं। यदि मैं अपना आकार छोड़कर इन सब रूप हो जाऊं तब तो मैं मनुष्य हूं, ऐसा कहा जा सकता है। इसलिए जो यह मानता है मैं मनुष्य हूं तो उसने प्रदेशत्व

गुण प्रत्येक द्रव्य का पृथक २ आकार बताता है उसको नहीं माना ।

प्र० ३. प्रदेशत्व गुण को न मानने से क्या नुकसान रहा ?

उ० मैंने अनंत द्रव्यों के एक एक प्रदेशी आकार को अपना आकार माना । उनको अपना आकार मानना, यह मिथ्यात्व हैं इसका फल चारों गतियों में घूमकर निगोद का पात्र है ।

प्र० ४. अनंत पुद्गलों के आकार की खोटी मान्यता कैसे छूटे तो हमने प्रदेशत्व गुण को माना ?

उ० मैं आत्मा असंख्यात प्रदेशी एक आकार वाला हूँ इन पुद्गलों के आकार से मेरा किसी भी प्रकार का कोई संबन्ध नहीं है ऐसा जानकर अपने असंख्यात प्रदेशी अभेद एक आकार का आश्रय ले तो प्रदेशत्व गुण को माना कहलाया ।

प्र० ५. अपने असंख्यात प्रदेशी अभेद एक का आश्रय लेने से क्या होता है ?

उ० सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्र की प्राप्ति होकर मोक्ष का पथिक बन जाता है ।

प्र० ६. तो क्या अनादि से इसने पुद्गलों के आकार को अपना आकार माना और प्रदेशत्व गुण का रहस्य नहीं जाना, इसीलिए संसार में घूमता है?

उ० हां, इस जीव ने अनादि से एक २ समय करके अपने आकार का निरादर किया और पर के आकार को अपना माना इसलिये चारों

गतियों का पात्र होता हुआ अनंतबार निगोद हो आया। अब यदि प्रदेशत्व गुण को समझ लें तो मोक्ष का पथिक बन जावे।

प्र० ७. 'मैं मनुष्य हूं' इस पर अगुरुलघुत्व गुण को लगाओ ?

उ० (१) मैं आत्मा ज्ञान दर्शन चारित्र आदि अनंत गुणों का पिण्ड ज्ञायक भगवान हूँ। (२) द्रव्यकर्म, तैजस शरीर और औदारिक शरीर अनंत पुद्गल द्रव्य हैं इनसे मेरी आत्मा का कोई भी संबंध नहीं है। इसके बदले इन सबमें 'मैं मनुष्य हूँ' ऐसा माने तो उसने अगुरुलघुत्व गुण को नहीं माना।

प्र० ८. मैं आत्मा और अनंत पुद्गलों में अपनापना मानने के कारण अगुरुलघुत्व गुण को नहीं माना, तो इसका क्या फल होगा ?

उ० अनंत द्रव्यों को अपना मानना निगोद का कारण है। जैसे कोई दूसरे की स्त्री को अपना मान ले तो सिर पर जूते पड़ते हैं और उसका काला मुंह करके गधे पर चढ़ाकर देश निकाला होता है; उसी प्रकार जो अनंत द्रव्यों से अपनापना मानता है वह चारों गतियों में घूमता हुआ निगोद चला जाता है।

प्र० ९. अनंत द्रव्यों को अपना मानने वाली खोटी बुद्धि कैसे छूटे तब हमने अगुरुलघुत्व गुण को माना कहलाये ?

उ० मैं आत्मा अनंत गुणों का अभेद पिण्ड हूं यह सब पुद्गल परमाणु हैं इनसे मेरा स्वचतुष्टय अलग है, इनका स्वचतुष्टय अलग है इन सबमें और मेरे में अत्यन्त भिन्नता है ऐसा जानकर अपने स्वभाव की ओर

दृष्टि करे तो अगुरूलघुत्व गुण को माना ।

प्र० १०. 'मैं मनुष्य हूँ' इसमें अगुरूलघुत्व गुण को मानने से क्या लाभ है ?

उ० मैं अनंत गुणों का अभेद पिण्ड हूं उसकी दृष्टि होते ही सम्यग्दर्शनादि की प्राप्ति हो जाती है और पंच परमेष्ठियों में उसकी गिनती होने लगती है संसार के कारणों का और पंच परावर्तन का अभाव हो जाता है।

प्र० ११. यह जीव अनन्त बार द्रव्यलिंग धारण करके जैन साधु कहलाया और ११ अंग ६ पूर्व का पाठी हुआ, क्या अगुरूलघुत्व गुण का रहस्य नहीं जाना ?

उ० यदि एक बार अगुरूलघुत्व गुण का रहस्य समझले तो तुरन्त द्रव्यलिंग का, और बाहरी परलक्षी ज्ञान का अभाव होकर भावलिंग और सम्यज्ञान की प्राप्ति हो जावे। परन्तु इतना होने पर भी नहीं समझा, तो समझलो वह अभव्य है ।

प्र० १२. 'मैं मनुष्य हूँ' इस पर प्रमेयत्व गुण को समझाओ ?

उ० मैं आत्मा ज्ञायक हूँ। द्रव्यकर्म, नोकर्म आदि सब मेरे ज्ञान का ज्ञेय है। मेरी आत्मा का पर पदार्थों के साथ (द्रव्यकर्म तैजस,शरीर, कार्माण शरीर) ज्ञेय ज्ञायक संबंध है। इसके बदले मैं मनुष्य हूँ तो इसने प्रमेयत्व गुण को नहीं माना।

प्र० १३. आत्मा और द्रव्यकर्म, तैजस शरीर, औदारिक शरीर के साथ

ज्ञेय-ज्ञायक संबन्ध न मानने से क्या इसने प्रमेयत्व गुण को नहीं माना ?

उ० आत्मा, शरीरादि का ज्ञेय-ज्ञायक संबंध न मानने से और कर्ता कर्म भोक्ता-भोग्य संबंध मानने से यह जीव निगोद का पात्र होता है अनन्त जन्म मरण करता हुआ दु:खी रहता है।

प्र० १४. आत्मा, शरीर का ज्ञेय-ज्ञायक संबध न मानने से यह दु:खी हो रहा है और प्रमेयत्व गुण का निरादर कर रहा है ऐसी अवस्था में प्रमेयत्व गुण को कैसे माने ताकि दु:ख का अभाव हो ?

उ० मैं आत्मा ज्ञायक हूँ, शरीरादि ज्ञान का ज्ञेय है इनमें मेरा कर्ता-कर्म, भोक्ता-भोग्य का संबंध नहीं है ऐसा जानकर अपनी ओर दृष्टि करे तो प्रमेयत्व गुण को माना।

प्र० १५. 'मैं मनुष्य हूँ' इसमें प्रमेयत्व गुण मानने से क्या लाभ रहा ?

उ० मैं आत्मा ज्ञायक हूँ, शरीरादि ज्ञेय हैं, तब शरीर में कुछ हो-जैसे सुकुमाल को स्यालनी खा रही थी, गजसुकुमार के सिर पर अंगीठी रक्खी थी, उन्होंने उन सबको ज्ञेय जाना तो उनको धर्म की प्राप्ति हुई—यह प्रमेयत्व गुण को जानने का लाभ है। सकल ज्ञेय ज्ञायक तदपि, निजानन्द रसलीन। सो जिनेन्द्र जयवंत नित, अरि रज रहस विहीन।। अतः प्रमेयत्व गुण को मानने से अरहंत सिद्ध पद की प्राप्ति होती है।

प्र० १६. तो क्या इस जीव ने प्रमेयत्व गुण को अनादि से नहीं माना ?

उ० अहो, अहो, आश्चर्य है, वर्तमान में दिगम्बर धर्म धारण करने पर

भगवान की पूजा, यात्रा, शास्त्र पढ़ता हुआ भी, इस जीव ने अनादि से एक समय भी प्रमेयत्व गुण को नहीं माना। यदि मान लेता तो आज इसका मोक्ष हो गया होता। हे आत्मा, तू ज्ञायक, तमाम संसार ज्ञेय, इतना ही संबंध है। मन्दिर शास्त्र देव गुरू यही बतलाते हैं। यह अज्ञानी उनको हाथ जोड़ता है परन्तु उनकी आज्ञा नहीं मानता। मन्दिर की प्रतिमा यह बताती है कि मैंने तमाम संसार के पदार्थों को ज्ञेय माना, तो मुझे इस पद की प्राप्ति हुई है, और तूने नहीं माना इसलिये तू दु:खी हो रहा है अब तू संसार के पदार्थों का ज्ञाता-दृष्टा बन जा, तब तो इसने भगवान के दर्शन किये तभी ज्ञेय-ज्ञायक संबंध को माना

प्र० १७. 'मैं मनुष्य हूँ' इसमें अस्तित्व, वस्तुत्व, द्रव्यत्व गुण को लगाओ।

उ० (१) मैं आत्मा अनंत गुणों का पिण्ड अनादिअनंत कायम रहता हुआ, प्रयोजनभूत कार्य को करता हुआ, निरन्तर बदलता हूं।

(२) द्रव्यकर्म, तैजस शरीर, औदारिक शरीर में अनंत पुद्गल परमाणु हैं। वह हमेशा कायम रहते हुए, अपना अपना प्रयोजनभूत कार्य करते हुये, निरन्तर बदल रहे हैं, ऐसा वस्तु स्वभाव है।

प्र० १८. आत्मा और परमाणु सब कायम रहते हुये, अपना प्रयोजनभूत कार्य करते हुये, निरन्तर क्यों बदल रहे हैं ?

उ० अस्तित्व, वस्तुत्व, द्रव्यत्व गुण के कारण ऐसा हो रहा है ऐसा वस्तु स्वभाव है यह पारमेश्वरी व्यवस्था है, इसको बदलने को देव इन्द्र जिनेन्द्र भी समर्थ नहीं हैं।

ऐसा होने पर भी अज्ञानी 'मैं मनुष्य हूं' ऐसा मानता है, इस

मान्यता वाले ने दूसरे द्रव्यों के अस्तित्व, वस्तुत्व, और द्रव्यत्व गुण को नहीं माना और साथ ही अपने अस्तित्व, वस्तुत्व और द्रव्यत्व गुण को उड़ा दिया।

प्र० १९. अपनी आत्मा का और दूसरे अनंत पुद्गलों के अस्तित्व, वस्तुत्व और द्रव्यत्व गुण को न मानने से क्या नुकसान हुआ ?

उ० सच्चा वस्तु स्वभाव न मानने के कारण और दूसरे के अस्तित्व, वस्तुत्व, द्रव्यत्व से अपना अस्तित्वपना आदि मानने से एक २ समय करके अनादि से आकुलता को प्राप्त कर बहुत दुःखी होता है और उसका फल निगोद होता है।

प्र० २०. अपने अस्तित्व, वस्तुत्व और द्रव्यत्व को और दूसरे के अस्तित्व, वस्तुत्व द्रव्यत्व को कब माना।

उ० मेरा अस्तित्व अनन्त गुणों का अभेद पिण्ड से है, वह अभेद पिण्ड अपना २ प्रयोजनभूत कार्य करता हुआ, निरन्तर बदलता हुआ, कायम रहता है।

और द्रव्यकर्म, तैजस शरीर, आदरिक शरीर में भी एक एक परमाणु कायम रहता हुआ, अपना २ प्रयोजनभूत कार्य करता हुआ, निरन्तर बदलता रहता है, ऐसा जानकर अपने अस्तित्व की ओर दृष्टि करे तो इसने अस्तित्व वस्तुत्व और द्रव्यत्व गुण को माना।

प्र० २१. अपने और पर के अस्तित्व, वस्तुत्व, द्रव्यत्व गुण को मानने का क्या फल है ?

उ० पर के अस्तित्व को अपना न माने और अपने अस्तित्व की ओर दृष्टि दे तो प्रथम सम्यक्त्व की प्राप्ति होती है। फिर श्रावक, मुनि, श्रेणी की प्राप्ति कर अरहंत सिद्ध की प्राप्ति होती है।

प्र० २२. छः सामान्य गुणों का रहस्य इतना है, तो जीव क्यों नहीं विचारता ?

उ० इसे चारों गतियों में घूमकर निगोद में जाना अच्छा लगता है, इसलिये नहीं विचारता है।

प्र० २३. (१) कुम्हार ने घड़ा बनाया (२) मैं देव हूँ (३) मैं तिर्यंच हूँ (४) मैं लड़का हूँ (५) मुझे कर्म दुःख देते हैं (६) मेरा ज्ञान ज्ञानावर्णी-कर्म ने रोक रक्खा है (७) मैं किताब उठाता हूँ (८) मुझे ज्ञान की प्राप्ति शास्त्र से होती है (९) मुझे ज्ञान की प्राप्ति दिव्यध्वनि से होती है (१०) मैं जोर शोर से बोलता हूं। (११) मैं बाल बच्चों का पालन पोषण कर सकता हूँ। (१२) अरहंत भगवान को अघातिकर्म मोक्ष में जाने से रोकते हैं। आदि १२ वाक्यों में छह सामान्य गुण इस प्रकार लगाओ जैसे १७वें पाठ में लगायें हैं ?

उ० देखो इनमें छः सामान्य गुण लगाने के लिये १७वाँ पाठ देखो। १७ वें पाठ के अनुसार लगाने से यदि अपने स्वभाव की दृष्टि करले, तो सम्यग्दर्शन की प्राप्ति होकर, वृद्धि होकर, पूर्णता को प्राप्त कर ले।

अहो अहो। छः सामान्य गुणों का रहस्य बताने वाले जिन, जिनवर और जिनवर वृषभों को अगणित नमस्कार।

—०—

पाठ १८

चार अभाव

प्र० १. अभाव किसे कहते हैं ?

उ० एक पदार्थ का दूसरे पदार्थ में अस्तित्व न होने को अभाव कहते हैं।

प्र० २. अभाव के कितने भेद हैं ?

उ० चार भेद हैं। (१) प्रागभाव (२) प्रध्वंसाभाव (३) अन्योन्याभाव (४) अत्यन्ताभाव।

प्र० ३. प्रागभाव किसे कहते हैं ?

उ० वर्तमान पर्याय का पूर्व पर्याय में अभाव, सो प्रागभाव है।

प्र० ४. प्रध्वंसाभाव किसे कहते हैं।

उ० एक द्रव्य की वर्तमान पर्याय का, उसी द्रव्य की आगामी (भविष्य की) पर्याय में अभाव, सो प्रध्वंसाभाव है।

प्र० ५. अन्योन्याभाव किसे कहते हैं ?

उ० एक पुद्गल द्रव्य की वर्तमान पर्याय का दूसरे पुद्गल द्रव्य की वर्तमान पर्याय में जो अभाव, सो अन्योन्याभाव है।

प्र० ६. अत्यन्ताभाव किसे कहते हैं ?

उ० एक द्रव्य का दूसरे द्रव्य में (त्रिकाल) अभाव सो अत्यंताभाव है।

प्र० ७. प्रागभाव और प्रध्वंसाभाव किसमें लगते हैं ?

उ० प्रागभाव और प्रध्वंसाभाव दोनों एक ही द्रव्य की पर्यायों को लागू होते हैं।

प्र० ८. प्रागभाव और प्रध्वंसाभाव दोनों एक ही द्रव्य की पर्यायों में कैसे लगते हैं, समझाइये ?

उ० (१) जैसे—अवाय का ईहा में अभाव सो प्रागभाव है। और अवाय का धारणा में अभाव सो प्रध्वंसाभाव है।

(२) जैसे—क्षयोपशम सम्यक्त्व का क्षायिक सम्यक्त्व में अभाव सो प्रध्वंसाभाव है।

प्र० ९. (१) लाडू (२) श्रुतज्ञान (३) केवलज्ञान (४) दही (५) रोटी (६) सिद्धदशा (७) शब्द (८) औपशमिक सम्यक्त्व (९) ज्ञानावर्णी कर्म का क्षयोपशम (१०) दर्शन मोहनीय का उपशम (११) रसगुल्ला (१२) अपूर्वकरण आदि में प्रागभाव और प्रध्वंसाभाव लगाओ ?

उ० (१) लाडू का पूर्व की पर्याय में अभाव प्रागभाव है। और लाडू का भविष्य की पर्याय में अभाव प्रध्वंसाभाव है।

(२) श्रुतज्ञान का मतिज्ञान में अभाव प्रागभाव है और श्रुतज्ञान का केवलज्ञान में अभाव प्रध्वंसाभाव है।

(३) (वर्तमान का) केवलज्ञान का श्रुतज्ञान में अभाव प्रागभाव है

और केवलज्ञान का भविष्य के केवलज्ञान में अभाव प्रध्वंसाभाव है।

(४) दही का दूध में अभाव सो प्रागभाव है और दही का मट्ठे की पर्याय में अभाव प्रध्वंसाभाव है।

(५) रोटी का लोई में अभाव प्रागभाव है और रोटी का उल्टी में अभाव सो प्रध्वंसाभाव है।

(६) सिद्ध दशा का संसार दशा में अभाव सो प्रागभाव है और सिद्ध दशा का भविष्य की सिद्ध दशा में अभाव सो प्रध्वंसाभाव है।

(७) 'शब्द हुआ' का पूर्व की पर्याय में प्रागभाव है और शब्द का भविष्य की पर्याय में अभाव सो प्रध्वंसाभाव है।

(८) औपशमिक सम्यक्त्व का मिथ्यात्व में अभाव प्रागभाव है और औपशमिक सम्यक्त्व का क्षायोपशमिक सम्यक्त्व में अभाव प्रध्वंसाभाव है।

(९) ज्ञानावर्णी कर्म के क्षयोपशम का ज्ञानवर्णी के उदय में अभाव सो प्रागभाव है और ज्ञानावर्णी कर्म के क्षयोपशम का ज्ञानावर्णी के अभाव में प्रध्वंसाभाव है।

(१०) दर्शन मोहनीय के उपशम का दर्शन मोहनीय के उदय में अभाव सो प्रागभाव है और दर्शनमोहनीय के उपशम का दर्शनमोहनीय के क्षयोपशम में प्रध्वंसाभाव है।

(११) रसगुल्ला की पूर्व पर्याय में अभाव सो प्रागभाव है और रसगुल्ले का भविष्य की उल्टो पर्याय में अभाव प्रध्वंसाभाव है।

(१२) अपूर्वकरण का अधःकरण में अभाव प्रागभाव है। और अपूर्वकरण का अनिवृत्तिकरण में अभाव प्रध्वंसाभाव है।

प्र० १०. एक पुद्गल की वर्तमान पर्याय का दूसरे पुद्गल की वर्तमान पर्याय में अभाव सो अन्योन्याभाव है यह हमारी समझ में नहीं आया ?

उ० जैसे दूध, दही और मट्ठा यह तीनों वर्तमान वस्तुएं हैं यह तीनों पुद्गल द्रव्य की अलग २ पर्यायें हैं इनमें अन्योन्याभाव है।

प्र० ११. अन्योन्याभाव के दृष्टांत देकर समझाओ ?

उ० जैसे रोटी बाई ने बनाई, तो रोटी का तो बाई के साथ अत्यन्ताभाव है परन्तु हाथ चकला बेलन तवे ने तो बनाई ? कहते हैं, नहीं क्योंकि हाथ चकला बेलन रोटी यह सब वर्तमान वस्तुएं है इनमें अन्योन्याभाव है ?

प्र० १२. क्या छप्पर को दिवार का आधार है ?

उ० छप्पर और दिवार दोनों अलग पुद्गलों की वर्तमान अवस्थाएं हैं इनमें अन्योन्याभाव है। इसलिए छप्पर को दिवार का आधार माने तो अन्योन्याभाव को नहीं माना। और दोनों अलग अलग हैं तो अन्योन्याभाव को माना।

प्र० १३. (१) तैजस, कार्मण शरीर में (२) घड़ा, चाक, डन्डा में (३) किताब, हाथ, पैन में (४) अग्नि पानी पतीला में (५) हाथ, स्टूल, औजारों में कौन सा अभाव है ?

उ० (१) तैजस तथा कार्मण दोनों पुदगल की वर्तमान पर्याय हैं इनमें अन्योन्याभाव है।

(२) घड़ा, चाक, डन्डा तीनों पुद्गल की वर्तमान पर्याय हैं। इनमें अन्योन्याभाव है।

(३) किताब, हाथ, पैन तीनों पुद्गल की वर्तमान पर्याय है। अन्योन्याभाव है।

(४) अग्नि, पानी, पतीला तीनों पुद्गल की वर्तमान पर्याय है। अन्योन्याभाव है।

(५) हाथ, स्टूल, औजार तीनों पुद्गल की वर्तमान पर्याय है। अन्योन्याभाव है।

प्र० १४. अन्योन्याभाव कितने द्रव्यों में लागू होता है ?

उ० परस्पर पुद्गल द्रव्यों की वर्तमान पर्यायों मे ही लागू होता है। और द्रव्यों में नहीं लगता है।

प्र० १५. एक द्रव्य का दूसरे द्रव्य में अभाव सो अत्यंताभाव है सो कैसे है ?

उ० (१) जैसे मेरी आत्मा का बाकी सब द्रव्यों में अभाव अत्यंताभाव है।

(२) कुम्हार और घड़े में अत्यंताभाव है।

प्र० १६ अत्यन्ताभाव कितने द्रव्यों में लगता है ?

उ० छहो द्रव्यों में लगता है।

प्र० १७. चारों अभाव किस किस द्रव्य में लागू हो सकते हैं ?

उ० पुद्गल में चारों अभाव लग सकते हैं। बाकी द्रव्यों में तीन लगते हैं।

प्र० १८. जीव धर्म अधर्म आकाश और काल में कौनसा अभाव नहीं लगता है ?

उ० अन्योन्याभाव नहीं लगता क्योंकि अन्योन्याभाव मात्र पुद्गल की पर्यायों में ही लगता है।

प्र० १६. इन चार अभावों में से पर्याय सूचक कौन २ अभाव हैं ?
उ० प्रागभाव, प्रध्वंसाभाव, अन्योन्याभाव पर्याय सूचक हैं।

प्र० २०. इन चार अभावों में से द्रव्य सूचक कौन २ से अभाव हैं ?
उ० मात्र अत्यन्ताभाव द्रव्य सूचक है।

प्र० २१. प्रागभाव कितने द्रव्यों में लागू होता है ?
उ० छहों द्रव्यों की वर्तमान पर्याय का भूत की पर्यायों में लागू होता है।

प्र० २२. प्रध्वंसाभाव कितने द्रव्यों में लागू होता है ?
उ० छहों द्रव्यों की वर्तमान पर्याय का भविष्य की पर्यायों में लागू होता है।

प्र० २३. प्रागभाव ना माने तो क्या होगा ?
उ० कार्य अनादि का सिद्ध होगा।

प्र० २४. प्रध्वंसाभाव ना माने तो क्या होगा ?
उ० कार्य अनन्तकाल तक रहेगा।

प्र० २५. अन्योन्याभाव न माने तो क्या होगा ?
उ० एक पुद्गल द्रव्य की वर्तमान पर्याय का दूसरे पुद्गल की वर्तमान पर्याय में अभाव है वह नहीं रहेगा।

प्र० २६. अत्यन्ताभाव न माने तो क्या होगा ?
उ० प्रत्येक पदार्थ की भिन्नता नहीं रहेगी। जगत के सर्व द्रव्य एक-

रूप होने का प्रसंग उपस्थित होवेगा।

प्र० २७. प्रागभाव से धर्म संबन्धी क्या लाभ है ?

उ० अनादि काल से जीव अज्ञान मिथ्यात्व और रागादि नये नये दोष करता आ रहा है; उसने धर्म कभी नहीं किया। तो भी वर्तमान में नये पुरुषार्थ से धर्म कर सकता है क्योंकि वर्तमान पर्याय का पूर्व पर्याय में अभाव वर्तता है।

प्र० २८. प्रध्वंसाभाव से धर्म संबन्धी क्या लाभ है ?

उ० वर्तमान अवस्था में धर्म नहीं किया है फिर भी जीव नवीन पुरुषार्थ से अधर्म दशा का तुरन्त ही अभाव करके अपने में सत्य धर्म प्रगट कर सकता है।

कोई कहे मैंने तो बहुत पाप किये हैं आगे पाप का उदय आ गया तो क्या होगा ? भगवान कहते हैं कि भाई वर्तमान पर्याय का भविष्य की पर्याय में अभाव है तू तुरन्त धर्म कर, देर मत कर।

प्र० २९. अन्योन्याभाव से धर्म संबंधी क्या लाभ है ?

उ० एक पुद्गल की वर्तमान पर्याय दूसरे पुद्गल द्रव्य की वर्तमान पर्याय का कुछ नहीं कर सकती है। जब पुद्गल की अवस्था सजाति में कुछ नहीं कर सकती है तो पुद्गल जीव का कुछ भी लाभ हानि कैसे कर सकता है अर्थात् कुछ नहीं कर सकता।

प्र० ३०. अत्यन्ताभाव से धर्म संबंधी क्या लाभ है ?

उ० प्रत्येक द्रव्य का दूसरे द्रव्य में त्रिकाल अभाव है। इसलिये एक द्रव्य अन्य द्रव्य की पर्याय का कुछ नहीं कर सकता है।

प्र० ३१. अपना कल्याण करने के लिये क्या करना चाहिए ?
उ० चार अभाव का रहस्य जानना चाहिये ।

प्र० ३२. सबसे पहले कौन २ से अभाव को जानना चाहिये ?
उ० वैसे तो चारों को जानना चाहिये । मुख्य रूप से प्रथम अत्यन्ता-भाव को फिर अन्योन्याभाव को फिर बाकी को समझकर अपनी ओर सन्मुख होना चाहिए ।

प्र० ३३. चार अभावों को समझने से हमारा कल्याण कैसे हो सीधे सादे शब्दों में बताओ ?
उ० (१) मैं आत्मा अनंत गुणों का पिण्ड ज्ञायक स्वभावी हूँ मेरा मेरे इस ज्ञायक स्वभावी भगवान से, अलग अनंत जीव, अनन्तानन्त पुद्गल, धर्म, अधर्म, आकाश, लोक प्रमाण असंख्यात काल द्रव्य हैं इनसे किसी भी प्रकार का संबंध नहीं है इसलिए हटावो दृष्टि अत्यंत भिन्न पदार्थों से, शरीर, मन, वाणी से ।

(२) जब एक पुद्गल की वर्तमान पर्याय दूसरे पुद्गल वर्तमान पर्याय में कुछ नहीं कर सकती है तो आठ कर्म मुझे दुःख देंगे या सुख देंगे ऐसी बुद्धि का अभाव हो जाना चाहिये । तो दृष्टि उठावो द्रव्यकर्मों से ।

(३) अब विचारो पर से, द्रव्य कर्म से तो संबंध ही नहीं रहा । अपनी आत्मा की ओर देखो—तुम्हारी जो वर्तमान पर्याय है उसका भूत पर्याय से कोई संबंध नहीं है । जब वह है ही नहीं तो दृष्टि उठावो पिछली पर्यायों से ।

(४) भविष्य की पर्याय आई है नहीं । तो अब तुम अपनी

वर्तमान पर्याय को कहाँ ले जाओगे ? पर, द्रव्यकर्म, पूर्व, भविष्य की पर्यायों से तो संबंध रहा ही नहीं। तो एक मात्र जो स्वभाव है उस पर दृष्टि देवें तो सम्यग्दर्शनादि की प्राप्ति होकर मोक्ष की प्राप्ति होती है।

प्र० ३४. (१) कुम्हार ने घड़ा बनाया (२) मैंने इच्छा की तो भाषा निकली (३) चश्मे से ज्ञान होता है (४) हमें शरीर और वस्त्रों की रक्षा करनी चाहिए (५) बाई ने चकला बेलन से रोटी बनाई (६) घाती कर्म के नाश से अरहंत दशा की प्राप्ति होती है (७) आत्मा पर का कर सकता है ना ? (८) कर्म के उदय से रागादि उत्पन्न होते हैं (९) कर्म के उदय से औदयिक भाव होते हैं (१०) मोहनीय उपशम से औपशमिक भाव होते हैं (११) कर्म के क्षयोपशम से क्षायोपशमिक भाव होते हैं (१२) कर्म के क्षय से क्षायिक भाव होते हैं (१३) निमित से नैमित्तिक कार्य होता हैं (१४) निमित्त से उपादान में कार्य होता है (१५) इन सबमें जिस तरह से चारों अभाव लग सकते हैं लगाओ। I तथा ऐसा माने तो, इस अभाव को नहीं माना। II और ऐसे मानो, तो इस अभाव को माना इत्यादि बताओ।

उ० (१) कुम्हार ने घड़ा बनाया—

(१) कुम्हार का घड़े में अभाव अत्यन्ताभाव है।

(२) हाथ डन्डा कीली चाक डोरा घड़े का अन्योन्याभाव है

(३) घड़े का पूर्व पिण्ड पर्याय में प्रागभाव है।

(४) घड़े का भविष्य की ठीकरी में अभाव प्रध्वंसाभाव है।

कुम्हार ने घड़ा डन्डा कीली से ही बनाया ऐसा मानने वाले ने

अत्यन्ताभाव अन्योन्याभाव को नहीं माना और घड़ा बना उसमें पहली पिछली पर्याय भी कुछ करती हैं ऐसी मान्यता वाले ने प्रागभाव प्रध्वंसाभाव को नहीं माना।

घड़ा उस समय की योग्यता से ही बना है उसमें कुम्हार का डन्डा चाक आदि का तथा पिण्ड का या भविष्य की पर्यायों का संबंध नहीं है। ऐसा माना तो चारों अभाव को माना।

इसी प्रकार १३ वाक्यों का उत्तर दो।

प्र० ३५. अन्योन्याभाव की क्या आवश्यकता थी?

उ० जैसे सुनार ने जेवर बनाया तो सुनार जेवर का तो अत्यन्ताभाव हो गया। इसके बदले कोई कहे सुनार ने तो नहीं बनाया परन्तु हाथ हथौड़ा आदि से तो बना तो उससे कहते हैं कि भाई पुद्गलों की वर्तमान पर्यायों में अभाव है ऐसा अन्योन्याभाव बताता। जब पुद्गल की पर्याय दूसरे पुद्गल की पर्याय में कुछ नहीं कर सकती है तो तू तो विजातीय है यह बताने के लिए अन्योन्याभाव को बताने की आवश्यकता थी।

प्र० ३६. जीव दूसरे का तो न करे परन्तु पुद्गल तो पुद्गल का करता है ना?

उ० अन्यान्योभाव को नहीं माना।

प्र० ३७. जीव से तो भाषा नहीं निकली परन्तु होंठ से तो निकली है ना?

उ० अन्योन्याभाव को नहीं माना।

—•—

पाठ १६

छः द्रव्य, विश्व, छः सामान्य गुणों, चार अभावों पर मिले जुले प्रश्नोत्तर

प्र० १. द्रव्य गुण पर्याय किस अपेक्षा समान है और किस अपेक्षा समान नहीं है।

उ० क्षेत्र से समान है और भाव से समान नहीं है।

प्र० २. द्रव्य गुण पर्याय में, काल अपेक्षा समान कौन है और कौन नहीं है ?

उ० काल अपेक्षा द्रव्य गुण समान है। पर्याय एक समय की होने से समान नहीं है।

प्र० ३. द्रव्य गुण पर्यायों में संख्या अपेक्षा समान कौन हैं ?

उ० गुण और पर्याय संख्या में समान हैं।

प्र० ४. गुणों के समूह को द्रव्य कहते हैं इसमें लक्षण क्या और लक्ष्य क्या ?

उ० गुणों का समूह लक्षण है और द्रव्य लक्ष्य है।

प्र० ५. द्रव्य में निरन्तर पर्याय होने का क्या कारण है ?

उ० द्रव्यत्व गुण ।

प्र० ६. तुम आत्मा को कैसे जानते हो ?
उ० प्रमेयत्व गुण के कारण ।

प्र० ७. ज्ञान का लक्षण क्या है ?
उ० स्व पर प्रकाशक ज्ञान का लक्षण है ।

प्र० ८ संख्या अपेक्षा कौन २ द्रव्य समान हैं ?
उ० धर्म, अधर्म, आकाश तीनों एकेक हैं ।

प्र० ९. क्षेत्र अपेक्षा कौन २ द्रव्य समान हैं ?
उ० (१) धर्म, अधर्म और जीव क्षेत्रअपेक्षा असंख्यात प्रदेशी होने से समान हैं ।
(२) कालाणु और परमाणु क्षेत्र अपेक्षा एक प्रदेशी हैं ।

प्र० १०. निश्चय से अस्तिकाय कौन कौन है ?
उ० जीव, धर्म, अधर्म, आकाश ।

प्र० ११. व्यवहार से अस्तिकाय कौन हैं ?
उ० पुद्गल स्कंध ।

प्र० १२. लोकाकाश, अलोकाकाश यह आकाश का भेद निश्चय से या व्यवहार से ?
उ० व्यवहार से

प्र० १३. ऐसे गुणों का नाम बताओ जो जीव पुद्गलों में हों बाकी द्रव्यों

में नहीं ?

उ० क्रियावती शक्ति, वैभाविक शक्ति

प्र० १४. ज्ञानी को राग में कैसी बुद्धि होती है ?

उ० हेय बुद्धि होती है।

प्र० १५. अज्ञानी को शुभभावों में कैसी बुद्धि होती है ?

उ० उपादेय बुद्धि होती है।

प्र० १६. ज्ञानी राग को क्या जानता है ?

उ० ज्ञानी राग को तपेदिक की बीमारी के समान जानता है।

प्र० १७. क्रियावती शक्ति जानने का क्या लाभ है ?

उ० (१) घर में से रुपया, सोना, चाँदी डाकू ले गये तो ज्ञानी जानते हैं वह अपनी क्रियावती शक्ति के कारण गया डाकूओं के कारण नहीं।

(२) मेरा रुकना और गमन, शरीर के कारण, धर्म, अधर्म द्रव्य के कारण नहीं होता है मात्र क्रियावती शक्ति के कारण होता है। ऐसा जानने से आकुलता मिट जाती है।

प्र० १८. क्या शरीर आगे पीछे जीव करता है ?

उ० बिल्कुल नहीं। क्रियावती शक्ति के कारण होता है।

प्र० १९. जीव क्यों नहीं बोलता है ?

उ० जीव और शब्द में अत्यंताभाव है।

प्र० २०. क्या मुंह से तो शब्द निकलता है ?
उ० नहीं, क्योंकि शब्द और मुंह में अन्योन्याभाव है।

प्र० २१. क्या देव अपने शरीर को छोटा बड़ा कर सकता है ?
उ० बिल्कुल नहीं, क्योंकि देव और शरीर में अत्यन्ताभाव है।

प्र० २२. जीव के दो भेद कौन कौन से हैं ?
उ० संसारी और सिद्ध

प्र० २३. संसारी के दो भेद कौन कौन से हैं ?
उ० छद्मस्थ और सर्वज्ञ।

प्र० २४. छद्मस्थ के दो भेद कौन २ से हैं ?
उ० साधक और बाधक।

प्र० २५. बाधक के दो भेद कौन २ से हैं ?
उ० भव्य और अभव्य

प्र० २६. भव्य के दो भेद कौन २ से हैं ?
उ० मोक्ष प्राप्त करने वाला और मोक्ष प्राप्त न करने वाला।

प्र० २७. परमाणु की दो जातियों का क्या नाम है ?
उ० १. कारण परमाणु २. कार्य परमाणु।

प्र० २८. कारण परमाणु किसे कहते हैं ?
उ० स्कंध में जुड़ने की शक्ति वाले परमाणु को कारण परमाणु कहते हैं।

प्र० २६. कार्य परमाणु किसे कहते हैं ?

उ० स्कंधों से पृथक होने वाले परमाणु को कार्य परमाणु कहते हैं

प्र० ३०. शरीर और जीव में और शरीर और वस्त्र में कौन सा अभाव ?

उ० शरीर और जीव में अत्यंताभाव है। शरीर और वस्त्र में अन्योन्याभाव है।

प्र० ३१. जीव और चैतन्य में कौन सा अभाव है ?

उ० कोई भी नहीं।

प्र० ३२. पवन ध्वजा को हिलाता है ना ?

उ० बिल्कुल नहीं, क्योंकि पवन और ध्वजा में अन्योन्याभाव है।

प्र० ३३. ध्वजा किससे हिलती है ?

उ० अपनी क्रियावती शक्ति से हिलती है, पवन से नहीं।

प्र० ३४. सादिअनंत एक क्षेत्र में रहने वाला कौन है ?

उ० सिद्ध भगवान

प्र० ३५. पर्याय की अपेक्षा द्रव्य को क्या कहते हैं ?

उ० पर्यायी या पर्यायवान कहते हैं।

प्र० ३६. चैतन्य सामान्य है या विशेष ?

उ० छह द्रव्यों में से मात्र जीव द्रव्य में है औरों में नहीं इस अपेक्षा विशेष है और सब जीव द्रव्यों में है इस अपेक्षा सामान्य है।

प्र० ३७. ज्ञान गुण और सुख गुण की संख्या बताओ ?

उ० जितने जीव द्रव्य हैं उतने ही ज्ञान और सुख गुण हैं।

प्र० ३८. अपने को कूटस्थ मानने वाला किस गुण का मर्म नहीं जानता ?

उ० द्रव्यत्व गुण का।

प्र० ३९. मैं पर का शरीरादि का करने वाला क्या भूलता है ?

उ० अगुरुलघुत्व गुण और अत्यंताभाव को भूलता है।

प्र० ४०. ज्ञानावर्णी कर्म ने ज्ञान को दबाया, क्या यह ठीक है ?

उ० गलत है, क्योंकि दोनों में अत्यंताभाव है।

प्र० ४१. क्रियावती शक्ति के गमन और स्थिति के निमित्त में क्या अन्तर है ?

उ० गति में निमित्त धर्म द्रव्य और स्थिति में अधर्म द्रव्य हैं।

प्र० ४२. सिद्ध भगवान को किसका निमित्त छूट गया और किसका सादि अनंत हो गया ?

उ० धर्म द्रव्य का निमित्त छूट गया और सादि अनंत अधर्म द्रव्य का हो गया।

प्र० ४३. अनंत गुणों का द्रव्य के साथ कैसा संबंध है ?

उ० नित्यतादात्म्य संबंध है।

प्र० ४४. शुभाशुभ भावों का गुण भेद का आत्मा के साथ कैसा संबंध है ?

उ० अनित्य तादात्म्य संबंध है।

प्र० ४५. छह द्रव्य किस २ अपेक्षा समान नहीं हैं ?

उ० (१) विशेष गुणों (२) क्षेत्र (३) और संख्या अपेक्षा समान नहीं है ।

प्र० ४६. किन द्रव्यों में संकोच विस्तार होता है ?
उ० मात्र जीव द्रव्य में ही होता है ।

प्र० ४७. आठ भेद वाला कौन सा शरीर है ?
उ० कार्मण शरीर ।

प्र० ४८. पाँचों शरीर का कर्ता कौन है और कौन नहीं है ?
उ० पाचों शरीर का कर्ता पुद्गल द्रव्य है और जीव नहीं है ।

प्र० ४९. अविनाभाव संबंध किसे कहते हैं और उसके उदाहरण दो ?
उ० एक पदार्थ के साथ दूसरे का होना अविनाभाव संबंध है । जैसे (१) जहां कार्मण शरीर होता है वहां तैजस शरीर होता ही है (२) जहां मतिज्ञान होता है वहां श्रुतज्ञान होता ही है (३) जहां रंग होता है वहां स्पर्श रस गंध होता ही है (४) जहां २ ज्ञान होता है वहां सुख होता ही है ।

प्र० ५०. अनादिअनंत एक क्षेत्र में रहने वाले कौन २ द्रव्य हैं ?
उ० धर्म, अधर्म, आकाश और काल द्रव्य हैं ।

प्र० ५१. सब द्रव्यों के एक क्षेत्र में रहते हुए कौन सा अभाव है ?
उ० अत्यंताभाव है ।

प्र० ५२. तुम किस अपेक्षा एक हो ?
उ० मैं अपने जीव द्रव्य की अपेक्षा एक हूं ।

प्र० ५३ तुम किस अपेक्षा असंख्य हो ?
उ० मैं अपने प्रदेशों की अपेक्षा असंख्य हूं ।

प्र० ५४ तुम किस अपेक्षा अनंत हो ?
उ० मैं अपने गुणों की अपेक्षा अनंत हूं ।

प्र० ५५. चक्षुदर्शन का द्रव्य गुण पर्याय क्या है ?
उ० चक्षुदर्शन स्वयं पर्याय है । जीव द्रव्य के दर्शन गुण की विभाव अर्थ पर्याय है ।

प्र० ५६. सम्यग्दर्शन और चक्षुदर्शन में क्या भेद है ?
उ० दोनों अलग २ गुण की पर्याय हैं इसलिए गुण भेद है ।

प्र० ५७. सम्यग्दर्शन और चक्षुदर्शन दोनों किसको होते हैं ?
उ० साधक जीव को होते हैं ।

प्र० ५८. चक्षुदर्शन हो और सम्यग्दर्शन ना हो क्या ऐसा होता है ?
उ० (१)मिथ्यादृष्टि को चक्षुदर्शन होता है सम्यग्दर्शन नहीं होता है
(२) चक्षुदर्शन तीन इन्द्रिय वाले जीवों को भी नहीं होता है ।

प्र० ५६. सम्यग्दर्शन हो चक्षुदर्शन ना हो, क्या ऐसा हो सकता है ?
उ० देव (अरहंत सिद्ध) को सम्यग्दर्शन होता है और चक्षुदर्शन नहीं होता, क्योंकि उनको केवलदर्शन होता है ।

प्र० ६०. अस्तित्व और वस्तुत्व गुण का द्रव्य क्षेत्र काल भाव एक ही है है ना ?

उ०　　दोनों के भावों में अन्तर है द्रव्य क्षेत्र काल एक ही है।

प्र० ६१. कूड़े को बाहर फेंक दिया क्या वह निकम्मा है ?
उ०　　वस्तुत्व गुण के कारण कूड़ा भी अपनी प्रयोजनभूत क्रिया करता है निकम्मा नहीं है।

प्र० ६२. क्या मैं चुपचाप ऐसा कार्य करूं किसी को पता न चले यह ठीक है ?
उ०　　प्रमेयत्व गुण को नहीं माना।

प्र० ६३. अगुरुलघुत्व गुण के कारण एक द्रव्य दूसरे द्रव्य रूप नहीं होता, वह एक द्रव्य की बात है या पृथक पृथक द्रव्यों की बात है ?
उ०　　एक ही द्रव्य की बात है।

प्र० ६४. मोक्ष होने पर 'तेज में तेज मिल जाता है' इस प्रकार सब एक हो जाते हैं क्या यह ठीक है ?
उ०　　अगुरुलघुत्व गुण को नहीं माना।

प्र० ६५. ज्ञेय-ज्ञायक संबंध कौनसा गुण बताता है ?
उ०　　प्रमेयत्व गुण बताता है।

प्र० ६६. कौन सा द्रव्य अक्रिय है ?
उ०　　कोई भी नहीं, क्योंकि प्रत्येक द्रव्य में अर्थक्रियाकारित्व होता रहता है।

प्र० ६७. ज्ञान और मतज्ञान में क्या अन्तर है ?

उ० ज्ञान गुण है और मतिज्ञान ज्ञान गुण की पर्याय है।

प्र० ६८. क्या तुम यहाँ रेल से आये हो ?

उ० मैं अपनी क्रियावती शक्ति से आया हूँ रेल, शरीर और धर्म द्रव्य के कारण नही आया हूँ।

प्र० ६९. क्या रुपये का एक ही आकार है ?

उ० नहीं ! जितने परमाणु हैं उतने आकार हैं।

प्र० ७०. गेहूँ का आटा चक्की से हुआ या बाई से ?

उ० किसी से भी नहीं। क्योंकि बाई और आटे का अत्यन्ताभाव है और गेहूं और चक्की में अन्योन्याभाव है। द्रव्यत्व गुण के कारण पर्याय बदल गई है।

प्र० ७१. काल द्रव्य की क्या पहिचान है ?

उ० परिणमन हेतुत्व इत्यादि।

प्र० ७२. स्कंध होने का सच्चा कारण क्या है ?

उ० उस समय की योग्यता। परमाणु की स्निग्धरूक्ष अवस्था स्कंध-रूप बनने में कारण है।

प्र० ७३. कुंए से पानी खींचा ?

उ० बिल्कुल गलत है। पानी अपनी क्रियावती शक्ति से आया है।

प्र० ७४. आहारवर्गणा तैजस, भाषा, मन और कार्मण के क्रम का क्या कारण है ?

उ० (१) जीव को प्रथम अपने संयोगरूप शरीर का ज्ञान होता है अतः प्रथम नम्बर आहारवर्गणा रक्खी।

(२) पश्चात शरीर के तेज का पता चलता है अतः दूसरा नम्बर तैजसवर्गणा रक्खी।

(३) फिर दो तीन इन्द्रियों के भाषा प्रकट होती है अतः तीसरा नम्बर भाषावर्गणा रक्खी है।

(४) मन मात्र संज्ञी जीवों के ही होता है अतः चौथा नम्बर मनोवर्गणा रक्खी है।

(५) कार्मण शरीर की सूक्ष्मपने के कारण पांचवा नम्बर कार्मण वर्गणा का रक्खा।

प्र० ७५. आम हरे से पीला हो गया तो द्रव्य गुण पर्याय में से क्या बदला ?

उ० मात्र वर्ण गुण की पर्याय बदली।

प्र० ७६. किस २ द्रव्य के टुकड़े हो सकते हैं ?

उ० किसी द्रव्य के टुकड़े नहीं हो सकते हैं।

प्र० ७७. एक क्षेत्र में एक जाति के दो द्रव्य कभी न आवें ऐसे द्रव्य का क्या नाम है ?

उ० काल द्रव्य।

प्र० ७८. अपना विशेष गुण अपने को निमित्त न बने ऐसे द्रव्य कौन२ है ?

उ० धर्म और अधर्म द्रव्य हैं।

प्र० ७९. घड़ी की सुई कौन फेरता है ?

उ० अपनी क्रियावती शक्ति के कारण फिरती है।

प्र० ८०. घड़ी की सुई निश्चय काल है या व्यवहार काल ?

उ० दोनों नहीं हैं क्योंकि घड़ी की सुई तो पुद्गलों का पिण्ड है।

प्र० ८१. दुःखी करने का भाव और सुखी करने का भाव क्या है और क्या नहीं है ?

उ० दुःखी सुखी करने का भाव चारित्र गुण की विभावअर्थपर्याय है। स्वभावअर्थपर्याय नहीं है।

प्र० ८२ (१) प्रकाश हुआ (२) भगवान ने सिद्ध पद पाया (३) घी ताया (४) ठंड पड़ी (५) सम्यग्दर्शन प्रगटा उनमें उत्पाद व्यय ध्रौव्य लगाओ।

उ० अंधकार का व्यय, प्रकाश का उत्पाद वर्ण गुण कायम। इसी प्रकार बाकी के चार लगाओ।

प्र० ८३. (१) मिथ्यादर्शन (२) पुरुषाकार (३) मेघ गर्जना (४) परिणमन हेतुत्व (५) गति हेतुत्व (६) केवल ज्ञान (७) रुपया (८) शुभ भाव (९) गंध (१०) श्रद्धा, यह क्या है ?

उ० (१) मिथ्यादर्शन जीव द्रव्य के श्रद्धा गुण की विभावअर्थपर्याय है।

इसी प्रकार ९ का उत्तर दो।

प्र० ८४. सामान्य गुण पहिले या विशेष गुण ?

उ० दोनों साथ २ हैं आगे पीछे नहीं अर्थात् अनादिअनंत हैं।

प्र० ८५. अस्तित्व गुण जानने योग्य है ?
उ० हाँ ! प्रमेयत्व गुण के कारण से जानने योग्य है।

प्र० ८६. प्रयोजनभूत कार्य किस में होता है किसमें नहीं ?
उ० पर्याय में होता है द्रव्य गुण में नहीं।

प्र० ८७. अगुरुलघुत्व गुण का क्या कार्य है ?
उ० प्रत्येक द्रव्य जैसा का तैसा रहे। छोटा बड़ा ना होवे। यह अगुरुलघुत्व गुण का कार्य है।

प्र० ८८. विश्व के तीन भेद कौन कौन से हो सकते हैं ?
उ० (१) द्रव्य गुण पर्याय (२) उत्पाद व्यय ध्रौव्य।

प्र० ८९. गति हेतुत्व और स्थिति हेतुत्व में कौन कौनसा अभाव है ?
उ० अत्यंताभाव है।

प्र० ९०. सूत में प्रागभाव प्रध्वंसाभाव बताओ ?
उ० सूत का पूणी में अभाव प्रागभाव है और सूत का कपड़े में अभाव प्रध्वंसाभाव है।

प्र० ९१. धारणा का प्रध्वंसाभाव में क्या आवेगा ?
उ० श्रुतज्ञान आवेगा।

प्र० ९२. जीव पुद्गल में परस्पर मिलान करो ?
उ० (१) संख्या से—जीव अनंत—पुद्गल जीव से अनंत गुणा अधिक

(२) क्षेत्र से—जीव असंख्यात प्रदेशी—पुद्गल एक प्रदेशी है।
(३) जीव अमूर्त है = पुद्गल मूर्त है
(४) जीव चेतन है = पुद्गल जड़ है
(५) जीव पुद्गल दोनों में क्रियावती तथा वैभाविक शक्ति है।

प्र० ९३. एक सिद्ध को दूसरे सिद्ध भगवान की अपेक्षा है ऐसा कहें तो ?
उ० अगुरुलघुत्व गुण को नहीं माना।

प्र० ९४. 'मैं अपने में बसता हूँ' कौन २ गुण को माना ?
उ० वस्तुत्व गुण को माना।

प्र० ९५. सम्यग्दर्शन होते ही तुरन्त वीतरागता होनी चाहिये, किस गुण का मर्म नहीं जानता ?
उ० अगुरुलघुत्व का नही जानता।

प्र० ९६. ध्रुव रहता हुआ निरन्तर बदलता है कौनसा गुण दृष्टि में आया ?
उ० अस्तित्व, द्रव्यत्व गुण दृष्टि में आता है।

प्र० ९७. सीमंधर भगवान की मुद्रा अति भव्य है ?
उ० प्रदेशत्व गुण

प्र० ९८. अभाव अभावरूप है या सद्भाव रूप है ?
उ० सद्भाव रूप है क्योंकि भावों की अस्ति है।
प्र० ९९. सिद्ध भगवान को कितने अभाव लग सकते हैं ?

उ० अन्योन्याभाव को छोड़कर तीनों लग सकते हैं ?

प्र० १००. कर्मोदय के कारण राग हुआ, तो कौन से अभाव को भूलता है ?
उ० अत्यंताभाव को भूलता है।

प्र० १०१. द्रव्यलिंग से भावलिंग प्रकट होता है, तो किस अभाव को भूला ?
उ० अत्यंताभाव को भूलता है।

प्र० १०२. मुनिराज बाह्य पांच समिति गुप्ति को पालते हैं,तो किस अभाव कों भूला ?
उ० अत्यंताभाव को भूलता है।

प्र० १०३. दो द्रव्यों का कर्त्ता एक है, तो किस अभाव को भूला ?
उ० अत्यंताभाव को भूलता है।

प्र० १०४. क्रमबद्ध पर्याय को न मानने वाला किस अभाव को भूलता है?
उ० प्रागभाव और प्रध्वंसाभाव को भूलता है।

प्र० १०५. प्रागभाव और प्रध्वंसाभाव को न माने तो कौन सामान्य गुण उड़ जाता है ?
उ० द्रव्यत्व गुण उड़ जाता है।

प्र० १०६. अत्यंताभाव को न माने तो कौनसा सामान्य गुण उड़ जाता है ?
उ० अगुरुलघुत्व गुण उड़ जाता है।

प्र० १०७. पहिले था अब नहीं है इससे कौनसा अभाव ध्यान में आता है ?

उ० प्रागभाव ध्यान में आता है।

प्र० १०८. चारों अभाव रूपी हैं या अरूपी ?

उ० पुद्गल के रूपी हैं और बाकी द्रव्यों के अरूपी हैं।

प्र० १०९. घाति कर्म और अघाति कर्म में कौनसा अभाव है ?

उ० अन्योन्याभाव है।

प्र० ११०. दंड चक्र से घड़ा बना, तो कौनसे अभाव को भूला ?

उ० अन्योन्याभाव को भूला है।

प्र० १११. भगवान के जिनबिम्ब के दर्शन करने से सम्यग्दर्शनादि प्रगट होते हैं, क्या यह बात ठीक है ?

उ० यह व्यवहार कथन है; व्यवहार कथन को सच्चा मानने वाले ने अगुरुलघुत्वगुण और अत्यंताभाव को नहीं माना।

प्र० ११२. द्रव्यत्वगुण के कारण ज्ञान में क्या होता है ?

उ० ज्ञान गुण में निरन्तर समय २ पर नया २ परिणमन होता है।

प्र० ११३. अगुरुलघुत्व गुण के कारण, ज्ञान में क्या होता है ?

उ० ज्ञानगुण, वर्णादि पुद्गलों के गुणों में नहीं जाता और ज्ञान-गुण श्रद्धा, चारित्र आदि दूसरे गुणों रूप नहीं होता है।

प्र० ११४. (१) जीव (२) शरीर (३) कुम्हार (४) सिद्ध (५) दया (६)

धर्म (७) स्पर्श (८) गतिहेतुत्व (९) पुण्य—पाप (१०) दुःख (११) अवगाहनहेतुत्व (१२) उपवास (१३) भक्ति पूजा (१४) नाचना (१५) पूजा की सामग्री (१६) दान (१७) कर्म (१८) भावकर्म (१९) ज्ञान (२०) केवलज्ञान (२१) मोक्ष (२२) संसार (२३) चारित्र (२४) श्रावक (२५) मुनिपना (२६) दौड़ना (२७) बैठना (२८) मिथ्यात्व (२९) सम्यक्त्व (३०) रस (३१) खट्टा (३२) जैन (३३) कषाय (३४) परिणमन-हेतुत्व (३५) बुखार (३६) बुखार पर द्वेष (३७) आहारक शरीर (३८) औदारिक शरीर (३९) मेज (४०) सुगंध। I यह क्या है ? यदि पर्याय है तो किस गुण की है ? और यदि गुण है तो किस द्रव्य का हैं ? स्पष्ट खुलासा करो ?

उ० (१) जीव-द्रव्य है, और चैतन्य जीव का लक्षण है।

(२) शरीर—पर्याय है। अनंत पुद्गलों की स्कंधरूप पर्याय है।

(३) बुखार=पुद्गल द्रव्य के स्पर्श गुण की विभाव अर्थ पर्याय है।

(४) सिद्ध=जीव द्रव्य के सम्पूर्ण गुणों की स्वभाव अर्थ पर्याय और एक स्वभावव्यंजन पर्याय है।

(५) दया=जीव द्रव्य के चारित्र गुण की विभाव अर्थ पर्याय है।

(६) धर्म=I धर्म नाम का एक द्रव्य है। II सम्यग्दर्शनादि शुद्ध भावों को धर्म कहा है। III वस्तु स्वभाव को धर्म कहते हैं।

(७) स्पर्श—पुद्गल द्रव्य का विशेष गुण है।

(८) गति हेतुत्व—धर्म द्रव्य का विशेष गुण है ।

(९) पुण्य पाप का भाव—जीव द्रव्य के चारित्र गुण की विभाव-अर्थ पर्याय है ।

(१०) दुःख—जीव द्रव्य के सुख गुण की विभावअर्थ पर्याय है ।

(११) अवगाहनहेतुत्व—आकाश द्रव्य का विशेष गुण है ।

(१२) उपवास का भाव—I जीव द्रव्य के चारित्र गुण की विभाव अर्थ पर्याय है । II उप 'माने समीप','वास'—रहना आत्मा के समीप रहना वह सच्चा उपवास है । III जहाँ कषाय, विषय तथा आहार का त्याग किया जाता है उसे उपवास कहते हैं । यह चारित्र गुण की स्वभाव अर्थ पर्याय है ।

(१३) भक्तिपूजा का भाव—जीव द्रव्य के चारित्र गुण की विभावअर्थ पर्याय है ।

(१४) नाचना—असमानजातीय द्रव्य पर्याय है ।

(१५) सामग्री—सामानजाति द्रव्य पर्याय है ।

(१६) 'दान' I पैसा आदि देना पुद्‌गल द्रव्य की विभावअर्थ पर्याय हैं । II दान का भाव, चारित्र गुण की विभाव अर्थ पर्याय है । III सच्चादान वीर्य गुण की स्वभाव अर्थ पर्याय है ।

(१७) कर्म—I द्रव्य कर्म II नोकर्म III भाव कर्म IV कर्म कारक V कर्म अर्थात् कार्य ।

(१८) भावकर्म—चारित्र गुण की विभाव अर्थ पर्याय है।

(१९) I ज्ञान अर्थात् आत्मा, II ज्ञान गुण, III ज्ञानी के सम्यग्-ज्ञान को ज्ञान कहते हैं।

(२०) केवल ज्ञान—जीव द्रव्य के ज्ञान गुण की स्वभावअर्थ पर्याय है।

(२१) मोक्ष—जीव द्रव्य के सब गुणों की स्वभावअर्थ पर्याय और स्वभाव व्यंजन पर्याय।

(२२) संसार—I अपने भगवान का पता न होना II मिथ्यात्व, वह संसार है।

(२३) चारित्र—जीव द्रव्य का गुण।

(२४) श्रावक—जीव द्रव्य के चारित्र गुण की एक देश स्वभाव-अर्थ पर्याय।

(२५) मुनिदशा—जीव द्रव्य के चारित्र गुण की सकल स्वभाव अर्थ पर्याय।

(२६) दौड़ना—पुद्गल द्रव्य के क्रियावती शक्ति की विभावअर्थ पर्याय।

(२७) बैठना—पुद्गल द्रव्य के क्रियावती शक्ति की विभावअर्थ पर्याय।

(२८) मिथ्यात्व—जीव द्रव्य के श्रद्धा गुण की विभावअर्थ पर्याय।

(२९) सम्यक्त्व—जीव द्रव्य के श्रद्धा गुण की स्वभाव अर्थ पर्याय

(३०) रस—पुद्गल द्रव्य का विशेष गुण।

(३१) खट्टा—पुद्गल द्रव्य के रस गुण की विभाव अर्थ पर्याय।

(३२) जैन—अपने शुद्धात्मा के आश्रय से मोह, राग द्वेष को जीतने वाली निर्मल परिणति जिसने प्रगट की है उसे जैन कहते हैं। सच्चे जैन तीन हैं— I उत्तम–अरहंत सिद्ध II मध्यम–सातवें से बारहवें गुणस्थान तक III जघन्य–चौथा, पांचवां व छटा गुणस्थान।

(३३) कषाय—'कष' अर्थात् संसार, आय अर्थात् लाभ, जिस भाव से संसार का लाभ हो उसे कषाय कहते हैं। यह जीव द्रव्य के चारित्र गुण की विभावअर्थ पर्याय है।

(३४) परिणमन हेतुत्व—काल द्रव्य का विशेष गुण।

(३५) बुखार—पुद्गल द्रव्य के स्पर्श गुण की विभावअर्थ पर्याय।

(३६) बुखार पर द्वेष—चारित्र गुण की विभाव अर्थ पर्याय।

(३७) आहारक शरीर—आहार वर्गणा का कार्य है।

(३८) औदारिक शरीर—आहार वर्गणा का कार्य।

(३९) मेज—समानजाति द्रव्य पर्याय।

(४०) सुगंध—पुद्गल द्रव्य के गंध गुण की विभाव अर्थ पर्याय।

प्र० ११५. भगवान की वाणी सुनकर ज्ञान हुआ इसमें कौनसे अभाव को भूलता है?

उ० अत्यन्ताभाव को भूलता है।

प्र० ११६. साता वेदनीय से पैसा आता है कौनसे अभाव को नहीं माना?

उ० अन्योन्याभाव को नहीं माना ।

प्र० ११७. क्या नामकर्म से शरीर की रचना होती है ?

उ० अन्योन्याभाव को नहीं माना ।

प्र० ११८. बक्सा आत्मा ने तो नहीं उठाया, हाथों ने तो उठाया ?

उ० अन्योन्याभाव को नहीं माना ।

प्र० ११९. मैं टट्टी जाता हूं कौनसे अभाव को नहीं माना ?

उ० अत्यन्ताभाव को नहीं माना ।

प्र० १२०. शरीर तो टट्टी जाता है ना ?

उ० अन्योन्याभाव को नहीं माना ।

प्र० १२१. (१) सम्यग्दर्शन (२) केवल ज्ञान (३) घड़ा बना (४) बिस्तर बिछा (५) हाथ उठाया (६) खिड़की खोली (७) प्रकाश हुआ, इनमें प्रागभाव प्रध्वंसाभाव बताओ ?

उ० जबानी बताओ ।

प्र० १२२. जीव को साता के उदय से सामग्री मिली, इसमें चार अभाव लगाओ ?

उ० १. जीव का······सामग्री में अभाव, अत्यन्ताभाव है ।
२. साता के उदय का और······सामग्री के होने में, अन्योन्याभाव है ।
३. सामग्री आई का······पूर्व पर्याय में अभाव, प्रागभाव है ।
४. सामग्री का, भविष्य की पर्याय में अभाव प्रध्वंसाभाव है ।

卐 सर्वज्ञदेव कथित छहों द्रव्यों की स्वतन्त्रता दर्शक 卐

सामान्य गुण

१. अस्तित्वगुण :

कर्ता जगत का मानता जो 'कर्म या भगवान को,'
वह भूलता है लोक में, अस्तित्वगुण के ज्ञान को;
उत्पाद व्यययुत वस्तु है, फिर भी सदा ध्रुवता धरे,
अस्तित्व गुण के योग से कोई, नहीं जग में मरे।

२. वस्तुत्व गुण :

वस्तुत्वगुण के योग से, हो द्रव्य में स्व-स्वक्रिया,
स्वाधीन गुण-पर्याय का ही, पान द्रव्यों ने किया;
सामान्य और विशेषता से कर रहे निज काम को,
यों मानकर वस्तुत्व कों, पाओ विमल शिवधाम को।

३. द्रव्यत्वगुण :

द्रव्यत्वगुण इस वस्तु को, जग में पलटता है सदा,
लेकिन कभी भी द्रव्य तो; तजता न लक्षण सम्पदा;
स्वद्रव्य में मोक्षार्थि हो, स्वाधीन सुख लो सर्वदा।
हो नाश जिससे आजतक की दुःखदायी भवकथा।

४. प्रमेयत्वगुण :

सब द्रव्य-गुण प्रमेय से बनते विषय हैं ज्ञान के,
रुकता न सम्यग्ज्ञान पर से जानियो यों ध्यान से;
आत्मा अरूपी ज्ञेय निज यह ज्ञान उसको जानता;
है स्व-पर सत्ता विश्व में सुदृष्टि उनको जानता।

५. अगुरुलघुत्व गुण :

यह गुण अगुरुलघु भी सदा रखता महत्ता है महा,
गुण द्रव्य को पररूप यह होने न देता है अहा;
निज गुण-पर्यय सर्व ही रहते सतत निजभाव में
कर्ता न हर्ता अन्य कोई यों लखो स्व-स्वभाव में।

६. प्रदेशत्वगुण :

प्रदेशत्वगुण की शक्ति से आकार द्रव्यों को धरे,
निज क्षेत्र में व्यापक रहे आकार भी स्वाधीन है;
आकार हैं सबके अलग, हो लीन अपने ज्ञान में,
जानों इन्हें सामान्य गुण रक्खो सदा श्रद्धान में।

जिन, जिनवर और जिनवर वृषभ कथित जैन सिद्धान्त प्रवेश रत्नमाला प्रथम भाग सम्पूर्ण

卐 जय गुरुदेव 卐

जय महावीर, जय गुरुदेव

आत्म स्वरूप को भुलाने वाले सप्त व्यसन क्या है ?

जुआ आमिष मदिरा दारी, आखेटक चोरी परनारी ।
एही सात व्यसन दुखदाई, दुरित मूल दुर्गति के भाई ।
दर्वित ये सातों व्यसन; दुराचार दुखधाम ।
भावित अन्तर – कल्पना, मृषा मोह परिणाम ।

अशुभ में हार शुभ में जीत यही है द्यूत कर्म ।
देह की मगनताई, यहै मांस भखिबो ।
मोह की गहल सों अजान यहै सुरापान ।
कुमति की रीति गणिका को रस चखिबो ।

निर्दय ह्वै प्राण घात करबो यहै शिकार ।
पर – नारी संग पर – बुद्धि को परखिबो ।
प्यार सों पराई सौंज गहिबे की चाह चोरी ।
एई सातों व्यसन विडारी ब्रह्म लखिबो ।

—बनारसी दास

१. जुआ—शुभ में जीत तथा अशुभ में हार मानना भाव जुआ है ।

२. मांस खाना—देह में मगन रहना अर्थात् शरीर के पुष्ट होने पर अपनी आत्मा का हित और शरीर के दुबले होने पर अपनी आत्मा का अहित मानना, भाव मांस खाना है।

३. मदिरापान—मोह में पड़कर आत्मस्वरूप से अनजान रहना, भाव मदिरापान है।

४. वेश्या गमन करना—खोटी बुद्धि में रमने का भाव अर्थात् अपनी आत्मा को छोड़कर विषय-कषाय में बुद्धि रखना ही भाव वेश्या रमण है।

५. शिकार खेलना—तीव्र रागवश ऐसे कार्य करने के भावों द्वारा अपने चैतन्य प्राणों का घात करना, यह भाव रुप से शिकार खेलना है।

६. परस्त्री रमण—तत्त्व को समझने का यत्न ना करके दूसरों की बुद्धि की परख में ही ज्ञान का सदुपयोग मानना, भाव परस्त्री रमण है।

७. चोरी करना— मोहभाव से पर वस्तु को अपनी मानना ही भाव चोरी है।

जिसे संसार के दुःखों से अरुचि हुई हो और आत्मस्वरूप प्राप्त कर सच्चा सुख प्राप्त करना हो उसे इन सप्त व्यसनों को त्याग कर देना चाहिए।